RNI: UPHIN/2015/60902

राजधानी से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

www.theachivertimes.com

द अचीवर टाइम्स

डाक पंजीयन संख्या
एस.एस.पी.एल.डब्लू/एन
पी.439/2015-2017

वर्ष : 9 अंक : 245
पृष्ठ : 8 मूल्य : 3 रुपया
लखनऊ, शुक्रवार, 29 दिसम्बर, 2023

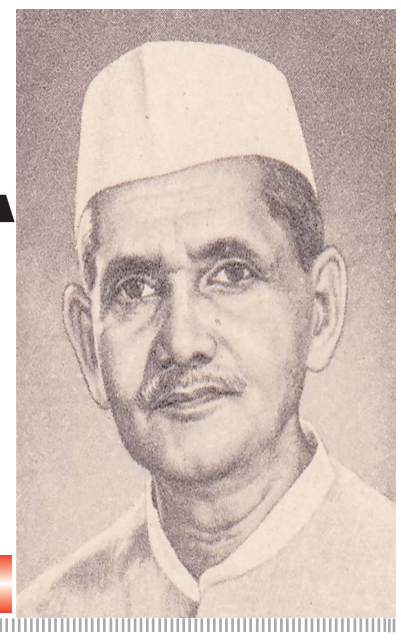

एक नज़र

मिट्टी की दीवार गिरने से पांच बच्चे दबे, तीन की मौत, दो की हालत गंभीर

लखनऊ। बहराइच जिले के सलारपुर गांव में गुरुवार दोपहर में अचानक मिट्टी की दीवार गिर गई। मिट्टी के मलबे में दबकर सगे भाई और ममेरे भाई समेत तीन बच्चों की मौत हो गई। जबकि दो घायल हो गए। घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। रूपईडीहा थाना क्षेत्र के ग्राम सलारपुर लक्ष्मनपुर गांव निवासी ग्रामीण वारिस अली का मकान मिट्टी का बना हुआ है। गुरुवार दोपहर में ढाई बजे के आसपास गांव निवासी मुख्तार (14) पुत्र शमशाद अली, अपने भाई अफ्तार अली (7), मरेजुद्दीन (6) पुत्र समरूद्दीन और ममेरा भाई दरगाह थाना क्षेत्र के गगन चक गांव निवासी नसरुद्दीन (10) पुत्र नूरजादे व भाई इमामुद्दीन (2) खेल रहे थे। खेलते समय अचानक मिट्टी की पुरानी दीवार गिर गई। जिसके मलबे में सभी बच्चे दब गए। मुख्तार, अफतार, और ममेरा भाई नसरुद्दीन की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि इमामुद्दीन और मेराजुद्दीन घायल हो गए। उन्हें परिवार के लोगों ने बाबागंज अस्पताल में भर्ती कराया है। घटना से क्षेत्र में कोहराम मच गया। परिवार के लोग रोने बिलखने लगे।

फिर से बढ़ रहा कोरोना, दो नए मरीज मिले

लखनऊ। शहर में कोरोना के केस फिर से बढ़ रहे हैं। बुधवार को आलमबाग से दो नए मरीज मिले। इससे पहले मंगलवार को तीन पॉजिटिव सामने आए थे। इसके साथ राजधानी में कोरोना के एक्टिव केसों की संख्या पांच हो गई है। हालांकि, राहत की बात यह है अभी तक नए वैरिएंट का कोई भी मामला सामने नहीं आया है। सभी मरीज होम आइसोलेशन में हैं। स्वास्थ्य विभाग नए मरीजों के संपर्क में आए लोगों की जांच करवा रहा है। अफसरों का कहना है कि जीनोम सिक्वेसिंग के लिए दोनों मरीजों का नमूना केजीएमयू भेजा गया है। कोरोना की चपेट में आए एक ही परिवार के मरीजों में एक पुरुष व एक बच्ची है। स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों का कहना है कि इनकी हालत सामान्य है।

कतर में पूर्व नौसैनिकों को मिली मौत की सजा पर रोक

फैसले के 63 दिन बाद आई राहत

एजेंसी

नई दिल्ली। मामला पहली बार 30 अगस्त 2022 को सामने आया जब कतर की खुफिया एजेंसी राष्ट्रीय सुरक्षा ब्यूरो ने आठ पूर्व नौसेना अधिकारियों को गिरफ्तार किया। 26 अक्तूबर 2023 को कतर के कोर्ट ऑफ फर्स्ट इंस्टांस द्वारा सभी आठ पूर्व नौसैनिकों को सजा की मौत सुनाई थी।

कतर की एक अदालत ने जासूसी के एक कथित मामले में भारतीय नौसेना के आठ पूर्व कर्मियों को बड़ी राहत दी है। विदेश मंत्रालय ने गुरुवार को बताया कि भारतीय नौसेना के आठ पूर्व कर्मियों को दी गई मौत की सजा को रोक दिया गया है।

बता दें जासूसी के एक कथित मामले में गिरफ्तार किए गए भारतीय नौसेना के आठ पूर्व कर्मियों को कतर की अदालत ने अक्तूबर में मौत की सजा दी थी। दोहा स्थित दहरा ग्लोबल के सभी कर्मचारियों, भारतीय नागरिकों को अगस्त 2022 में हिरासत में ले लिया गया था। भारत ने पिछले महीने मौत की सजा के खिलाफ कतर स्थित अपीली अदालत का दरवाजा खटखटाया था।

26 अक्तूबर को कतर की राजधानी दोहा में अल दहरा कंपनी के आठ सेवानिवृत्त भारतीय कर्मचारियों को मौत की सजा सुनाई गई थी। यह फैसला कतर के कोर्ट ऑफ फर्स्ट इंस्टांस द्वारा सुनाया गया था। इन सभी पर पनडुब्बी कार्यक्रम पर कथित रूप से जासूसी करने का आरोप लगाया गया था। रिपोर्ट्स के मुताबिक, सेवानिवृत होने के बाद ये सभी नौसैनिक कतर की निजी कंपनी दहरा ग्लोबल टेक्नोलॉजी एवं कंसल्टेंसीज सर्विसेज में काम कर रहे थे। यह कंपनी कतरी एमिरी नौसेना को ट्रेनिंग और अन्य सेवाएं प्रदान करती है। कंपनी खुद को कतर रक्षा, सुरक्षा एवं अन्य सरकारी एजेंसी की स्थानीय भागीदार बताती है।

भारतीय विदेश मंत्रालय ने निर्णय के बाद कहा, मामले की शुरुआत से ही हम उनके साथ खड़े हैं। हम सभी उन्हें कानूनी सहायता देना जारी रखेंगे। इस मामले को कतर के अधिकारियों के समक्ष उठाया जाएगा। मंत्रालय ने कहा कि अभी विस्तृत फैसले का इंतजार है। अगले कदम पर फैसला लेने के लिए कानूनी टीम के साथ हम लगातार परिवार के सदस्यों के साथ संपर्क में हैं।

यह मामला कितना पुराना है, अब तक क्या-क्या हुआ?

- अगस्त 2022- मामला पहली बार 30 अगस्त को सामने आया जब कतर की खुफिया एजेंसी राष्ट्रीय सुरक्षा ब्यूरो ने आठ पूर्व नौसेना अधिकारियों को गिरफ्तार किया। उन्हें बिना किसी आरोप के हिरासत में लिया गया और एकांत कारावास में भेज दिया गया था। हालांकि, मीडिया रिपोर्ट में कहा गया था कि उन पर जासूसी का आरोप लगाया गया था।
- सितंबर 2022- जेल में बंद अधिकारियों की ओर से पहली बार जमानत याचिका दाखिल की गई जिसे खारिज कर दिया गया।
- अक्तूबर 2022- पूर्णेंदु तिवारी की बहन डॉ. मीतू भार्गव द्वारा 27 अक्तूबर को किए गए एक ट्वीट से घटना सार्वजनिक हुई। इस पोस्ट में नीतू ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, विदेश मंत्रालय और अन्य कैबिनेट मंत्रियों से मदद मांगी थी।
- नवंबर 2022- आठ पूर्व अधिकारियों के परिवारों वालों ने दोहा में भारतीय दूतावास के अधिकारियों से मुलाकात की। इसके बाद भारतीय दूतावास ने कहा था कि वे कतर में भारतीय नागरिकों के किसी भी जरूरी कांसुलर मुद्दे या शिकायतों का निवारण करने के लिए तैयार हैं।
- जनवरी 2023- कतर में भारतीय राजदूत दीपक मित्तल ने आठ पूर्व भारतीय नौसैनिक अधिकारियों से मुलाकात की थी।
- मार्च 2023- भारतीय नौसेना के आठ पूर्व सैनिकों के खिलाफ 25 मार्च को आरोप दर्ज किए गए थे। इसी बीच पहली सुनवाई हुई, जिसमें मामले के लिए नियुक्त बचाव पक्ष के वकील भी शामिल हुए।
- जून 2023- मामले में दूसरी बार सुनवाई हुई।
- 1 अक्तूबर 2023- इस साल 1 अक्तूबर को कतर में राजदूत दीपक मित्तल ने जेल में बंद लोगों से मुलाकात की। मित्तल ने यह मुलाकात काउंसलर पहुंच मिलने के बाद की थी।
- 26 अक्तूबर 2023- कतर के कोर्ट ऑफ फर्स्ट इंस्टांस द्वारा सभी आठ पूर्व नौसैनिकों को सजा की मौत सुनाई।
- 23 नवंबर 2023- कतर की एक अदालत ने भारतीय नौसेना कर्मियों को दी गई मौत की सजा के संबंध में भारत सरकार द्वारा दायर अपील को स्वीकार कर लिया।
- 28 दिसंबर 2023- भारतीय नौसेना के आठ पूर्व कर्मियों को दी गई मौत की सजा रोकी गई।

कांग्रेस के स्थापना दिवस पर नागपुर में गरजे राहुल

देश में विचारधारा की लड़ाई, बीजेपी में गुलामी

एजेंसी

नई दिल्ली। कांग्रेस आज अपना 139वां स्थापना दिवस मना रही है। नागपुर में कांग्रेस की विशाल रैली आयोजित की गई है। पार्टी सांसद राहुल गांधी ने कहा कि देश में चुनावी संघर्ष के अलावा विचारधारा की लड़ाई हो रही है। उन्होंने कहा, लोगों को लगता है कि यह सत्ता की लड़ाई है, लेकिन इस लड़ाई की नींव विचारधारा की है। उन्होंने आरोप लगाया कि हाल के दिनों में कुलपतियों की नियुक्ति योग्यता के आधार पर नहीं, बल्कि इसलिए की जाती है क्योंकि वे एक विशेष संगठन से जुड़े होते हैं। इससे पहले कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा कि कांग्रेस ने हमेशा भारत निर्माण की दिशा में काम किया है और यह पार्टी संसदीय लोकतंत्र और समानता पर आधारित है। कांग्रेस गुरुवार को अपने स्थापना दिवस के मौके पर नागपुर में एक विशाल रैली करने जा रही है और इसे औपचारिक रूप से पार्टी की लोकसभा चुनाव के लिए प्रचार अभियान की शुरुआत माना जा रहा है।

मल्लिकार्जुन खरगे ने सोशल मीडिया पर साझा किए एक पोस्ट में लिखा कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का उद्देश्य जनता का कल्याण और देश के लोगों की प्रगति है। कांग्रेस, संसदीय लोकतंत्र पर आधारित भारत में विश्वास रखती है, जहां बिना किसी भेदभाव के सभी के लिए समान अवसर मौजूद हों। पार्टी ऐसा देश बनाना चाहती है, जहां संविधान में मौजूद राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक अधिकारों का पालन किया जाए।

खरगे ने पोस्ट में लिखा कि हमें इस बात पर गर्व है कि बीते 138 सालों में हमने पूरी ईमानदारी से ऐसा भारत बनाने के लिए संघर्ष किया है। कांग्रेस के स्थापना दिवस के अवसर पर सभी भारतीयों को हार्दिक शुभकामनाएं। पार्टी के स्थापना दिवस पर कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने पार्टी मुख्यालय पर राष्ट्रीय ध्वज भी फहराया। इस दौरान राहुल गांधी और प्रियंका गांधी समेत पार्टी के कई वरिष्ठ नेता मौजूद रहे।

कांग्रेस के स्थापना दिवस के अवसर पर राहुल गांधी ने सोशल मीडिया पर साझा एक पोस्ट में लिखा कि उन्हें गर्व है कि वह कांग्रेस जैसे संगठन का हिस्सा हैं, जिसका आधार सच्चाई और अहिंसा है और प्रेम, सम्मान और समानता इसके स्तंभ हैं। वहीं देशभक्ति इसकी छत है। बता दें कि कांग्रेस आगामी लोकसभा चुनाव के लिए अपने प्रचार का आज आगाज

भाजपा में गुलामी का दावा

राहुल गांधी ने महाराष्ट्र के नागपुर में कांग्रेस की हैं तैयार हम रैली में दावा किया, बीजेपी के एक सांसद, जो पहले कांग्रेस में थे, उन्होंने मुझसे कहा कि बीजेपी में गुलामी चलती है। राहुल ने पूर्व कांग्रेसी नेता के हवाले से कहा, भाजपा में जो ऊपर से कहा जाता है, वो बिना सोचे समझे करना पड़ता है।

कर रही है। इसके लिए महाराष्ट्र के नागपुर में हैं तैयार हम रैली का आयोजन किया जा रहा है। महाराष्ट्र कांग्रेस के अध्यक्ष नाना पटोले ने बुधवार को बताया कि रैली में पार्टी भाजपा की हार और बदलाव का संदेश देगी। बता दें कि नागपुर की रैली को सोनिया गांधी, राहुल गांधी के साथ पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे भी संबोधित करेंगे। कांग्रेस की स्थापना 28 दिसंबर 1885 को हुई थी। 72 समाज सुधारक, पत्रकार और वकीलों के समूह के साथ कांग्रेस का पहला सम्मेलन बॉम्बे (मौजूदा मुंबई) के गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कॉलेज में हुआ था।

जेडीयू कार्यकारिणी की बैठक कल होंगे अहम फैसले

एकता के दावों के साथ दिल्ली में जेडीयू नेताओं की बैठक

एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली में 29 दिसंबर को होने वाली जेडीयू राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में क्या नया होने जा रहा है और पार्टी में खींचतान की खबरों के बीच लोकसभा चुनावों को लेकर क्या रणनीति बनने जा रही है, यह जल्दी ही साफ हो जाएगा। माना जा रहा है कि इस बैठक में कोई बड़ा फैसला हो सकता है। हालांकि बैठक से एक दिन पहले पार्टी अध्यक्ष ललन सिंह ने उन अफवाहों का खंडन किया है कि वह इस्तीफा दे रहे हैं। उन्होंने दावा किया है कि मीडिया में यह खबरें भाजपा की ओर से जानबूझ कर उड़ाई जा रही हैं। उन्होंने कहा कि जेडीयू एक है और एक ही रहेगा। दूसरी तरफ, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने भी दिल्ली पहुंचने से पहले साफ किया कि पार्टी में सबकुछ सामान्य है और कार्यकारिणी की यह सालाना बैठक है। इस बीच यह चर्चा काफी गर्म है कि पार्टी अध्यक्ष ललन सिंह अपना पद छोड़ सकते हैं। इसके पीछे की वजहों में नीतीश कुमार से उनकी नाराजगी को बताया जा रहा है। नीतीश कुमार एक तरफ इंडिया गठबंधन को मजबूत करने की कवायद में जुटे हैं, तो दूसरी तरफ भाजपा से उनकी फिर से नजदीकियों की भी चर्चा है। दिल्ली आने से पहले नीतीश ने भाजपा के केंद्रीय मंत्री और असरदार नेता रह चुके दिवंगत अरुण जेटली की पुण्यतिथि पर उन्हें श्रद्धांजलि भी दी। माना जा रहा है कि नीतीश कुमार अभी भी खुद को भाजपा से करीब मानते हैं और अकसर कहते हैं कि राजनीति में कुछ भी हो सकता है। दूसरी तरफ बिहार भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सम्राट चौधरी दावा कर रहे हैं कि नीतीश खुद भाजपा का साथ छोड़कर गए हैं, भाजपा ने तो उन्हें जाने को कहा नहीं। सम्राट चौधरी यह भी बताते हैं कि केंद्रीय नेतृत्व बिहार में फिलहाल किसी गठबंधन के पक्ष में नहीं है और भाजपा अपने दम पर लोकसभा चुनाव भी लड़ेगी। उन्होंने दावा किया कि 2025 में बिहार में भाजपा की सरकार बनेगी। इसके लिए हमें किसी के साथ की जरूरत नहीं। सम्राट चौधरी इस संभावना से भी इनकार नहीं करते कि नीतीश कुमार बिहार में लोकसभा के साथ ही विधानसभा चुनाव करवाने की कोशिश कर सकते हैं और इसके लिए भी भाजपा तैयार है। जेडीयू कार्यकारिणी की बैठक में जिस बड़े फैसले की अटकलें लगाई जा रही हैं, उनमें अध्यक्ष पद में बदलाव के अलावा बिहार में आरजेडी और कांग्रेस के साथ सीटों के बंटवारे में अपना हिस्सा तय करने की बात भी सामने आ रही है। साथ ही यह भी कि ललन सिंह यदि चुनाव लड़ते हैं, तो ऐसे में पार्टी का नया अध्यक्ष कौन हो सकता है। भाजपा सूत्रों का कहना है कि जेडीयू की इस बैठक और ललन सिंह के अगले कदम पर पार्टी बहुत बारीक नजर रख रही है। भाजपा नेताओं सुशील मोदी और गिरिराज सिंह के अलावा सम्राट चौधरी से रणनीति के तहत बयान दिलवाए जा रहे हैं, जिससे जेडीयू में फूट और विवाद को हवा मिले। बहरहाल जेडीयू कि इस बैठक पर कांग्रेस, आरजेडी की भी नजर है ताकि सीटों के बंटवारे का एक सर्वमान्य हल निकल सके। कांग्रेस ने मोहन प्रकाश को बिहार का प्रभारी बनाकर यह कोशिश की है कि सीटों को लेकर कोई विवाद न खड़ा हो।

अविस्मरणीय होगा प्रधानमंत्री का अयोध्या में आगमनः सीएम योगी

अयोध्या में 'विकास के नए युग' के प्रारंभ करने वाला होगाः सीएम योगी

एजेंसी

लखनऊ। सीएम योगी ने निर्देश दिए कि प्रधानमंत्री के रोड शो के लिए तय रूट पर सुरक्षा और साफ-सफाई की अच्छी व्यवस्था हो। पूरी अयोध्या राममय हो। स्थानीय मठ-मंदिरों को सजाएं। भव्य तोरण द्वार तैयार कराएं। जगह-जगह सांस्कृतिक मंडलियों द्वारा रुचिकर प्रस्तुतियां हों।

मुख्यमंत्री योगी ने 30 दिसंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के धर्मनगरी अयोध्या आगमन को अविस्मरणीय समारोह बनाने के लिए सभी प्रबंध करने के निर्देश दिए हैं। गुरुवार को प्रदेश सरकार के वरिष्ठ मंत्री सूर्य प्रताप शाही व दयाशंकर सिंह तथा महापौर अयोध्या सहित स्थानीय प्रशासन के साथ वर्चुअल बैठक कर मुख्यमंत्री ने कार्यक्रम के तैयारियों की समीक्षा की और आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। सीएम योगी ने कहा कि वर्ष 2023 की विदा वेला पर धर्मनगरी अयोध्या में प्रधानमंत्री का आगमन अयोध्या में 'विकास के नए युग' के प्रारंभ करने वाला होगा। इस अवसर पर देश को न केवल एक नए अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट का उपहार मिलने जा रहा है, बल्कि अयोध्या को हजारों करोड़ की परियोजनाओं के उपहार भी मिलेंगे। सीएम ने कहा कि प्रधानमंत्री के रोड शो के लिए तय रूट पर सुरक्षा और साफ-सफाई की अच्छी व्यवस्था हो। पूरी अयोध्या राममय हो। स्थानीय मठ-मंदिरों को सजाएं। भव्य तोरण द्वार तैयार कराएं। जगह-जगह सांस्कृतिक मंडलियों द्वारा रुचिकर प्रस्तुतियां हों। प्रधानमंत्री के स्वागत हेतु अयोध्यावासी भी उत्सुक हैं। उन्हें यथोचित स्थान दें। साधु-संतगणों द्वारा पुष्पवर्षा कर प्रधानमंत्री का अभिनन्दन किया जाना है। उनसे संवाद बनाएं। यह रोड शो जनता के लिए है, ऐसे में जनभावनाओं का सम्मान किया जाना चाहिए। प्रधानमंत्री का यह अयोध्या दौरा अयोध्या को हजारों करोड़ की परियोजनाओं का उपहार देने वाला होगा। यह आयोजन अति महत्वपूर्ण है, इसके दृष्टिगत भारत सरकार के सहयोग से स्थानीय प्रशासन द्वारा सभी आवश्यक तैयारियां समय से पूरी कर ली जाएं। विशेष अवसर पर प्रधानमंत्री जनसभा को भी संबोधित करेंगे। जनसभा में आसपास के जनपदों से डेढ़ से 2 लाख आम नागरिकों के आने की संभावना के दृष्टिगत सभी तैयारियां और अयोध्या को जोड़ने वाले प्रमुख मार्गों पर पर्याप्त पार्किंग व्यवस्था एवं जनसभा में आने वाले नागरिकों की आधारभूत सुविधाओं की पर्याप्त व्यवस्था की जाए। भीड़ प्रबंधन पर फोकस करें। जनसभा स्थल एवं अन्य प्रमुख स्थलों पर वाहनों की पार्किंग की पर्याप्त व्यवस्था हो और उन पार्किंगों के पास पर्याप्त जन सुविधाओं की भी व्यवस्था की जाए। चिकित्सकों की तैनाती करें। यह समारोह बड़ा है। बड़ी संख्या में जनभागीदारी होगी। इसलिए सुरक्षा के पुख्ता प्रबंध होने चाहिए। एरियल सर्विलांस भी हो। वर्दीधारी सुरक्षाकर्मियों के अलावा सादी वर्दी में भी पुलिस की तैनाती की जाए। प्रधानमंत्री के सुरक्षा प्रोटोकॉल का कड़ाई से अनुपालन करायें। निकटवर्ती जिलों के प्रशासन से संवाद कर यातायात प्रबंधन की रणनीति लागू करें। लखनऊ-गोरखपुर मार्ग पर कहीं जाम न लगे। डायवर्जन के बारे में समय से प्रचार-प्रसार करें। प्रधानमंत्री मोदी के रोड शो के रूट को आकर्षक ढंग से सजाएं। रूट में पड़ने वाली दुकान/व्यावसायिक प्रतिष्ठान खुली रहें। व्यवसायियों को अपने प्रतिष्ठान की साज सज्जा के लिए प्रोत्साहित करें। एयरपोर्ट से रेलवे स्टेशन के पूरे क्षेत्र में हमें स्वच्छता का विशेष ध्यान देना होगा। अयोध्या में कहीं भी सड़कों पर धूल तथा गन्दगी आदि न हो। आवश्यकतानुसार अतिरिक्त मैनपॉवर भी तैनात करें।

भगवान का जब बुलावा आता है तभी दर्शन होते हैंः अखिलेश

एजेंसी

लखनऊ। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने अयोध्या में होने वाले प्राण प्रतिष्ठा समारोह में जाने को लेकर जवाब दिया है। उन्होंने स्वामी प्रसाद मौर्य द्वारा बयान देने पर भी जवाब दिया है। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने 22 जनवरी को अयोध्या में होने वाले प्राण प्रतिष्ठा समारोह में जाने के सवाल पर कहा कि हम सभी लोग उस परंपरा को मानते हैं कि जब भगवान बुलाते हैं तभी दर्शन होते हैं। उन्होंने कहा कि घर से भगवान के दर्शन करके निकलते हैं। सीढ़ी उतरते ही भगवान के दर्शन होते हैं। दरवाजा खोलते ही भगवान के दर्शन होते हैं। अब आप ही बताइए कि किस भगवान के दर्शन करने जाऊं। गुरुवार को सपा मुख्यालय में समाजवादी महिला सभा के राष्ट्रीय सम्मेलन में अखिलेश यादव ने पत्रकारों के सवालों के जवाब दिए। स्वामी प्रसाद मौर्य के विवादित बयानों पर उन्होंने कहा कि ये भाजपा वालों से पूछना चाहिए क्योंकि वे भाजपा में पांच साल रहे। आखिरकार उनके दल में रहकर उन्होंने इस तरह के बयान क्यों नहीं दिए फिर बोले कि ये उनके व्यक्तिगत विचार हैं। सपा सभी धर्मों का सम्मान करती है।

पुलिस भर्ती में उम्र बढ़ाने के बाद जयंत चौधरी के बयान ये उनका न्यू ईयर गिफ्ट है पर अखिलेश ने सवाल किया, जयंत चौधरी को रिटर्न गिफ्ट में क्या मिला। फिर बोले कि सपा ने भी उम्र बढ़ाने की मांग की थी। उम्र को लेकर पूरे प्रदेश के नौजवान आक्रोश में थे। सरकार नौजवानों के आक्रोश से डरती है, इसीलिए उनकी मांग स्वीकार की। उन्होंने तंज कसा कि चुनाव करीब हैं इसलिए नौकरी की बात की है लेकिन रिजल्ट वोट पड़ने के बाद भी नहीं आएगा।

सपा प्रमुख ने कहा कि लोकसभा चुनाव की लगातार तैयारी हो रही है। गठबंधन बनने के बाद यूपी की 80 सीटें हराने का काम करेंगे और भाजपा को हटाएंगे। उन्होंने कहा कि संविधान और नारी सम्मान दोनों बचाएंगे। महिलाओं को लेकर बोले कि लोकसभा चुनाव में समाजवादी महिला संगठन पूरी ईमानदारी के साथ सपा को जिताने का काम करेगा। सपा ने हमेशा पिछड़े, दलित, अल्पसंख्यक और महिलाओं की बात उठाई है। सबसे ज्यादा गैर बराबरी का सामना महिलाओं को करना पड़ता है। आरोप लगाया कि यूपी में महिलाएं सबसे ज्यादा असुरक्षित हैं। महिलाओं को मणिपुर याद है। सभी ने इस कांड की निंदा की लेकिन भाजपा ने नहीं की।

महिला सुरक्षा पर सपा सरकार की उपलब्धियां गिनाते हुए कहा कि महिलाओं की सुरक्षा को लेकर 1090 हेल्पलाइन शुरू की। सभी राज्यों के साथ सुप्रीम कोर्ट ने तारीफ की। न्यूट्रीशन मिशन में गर्भवती महिलाओं को पौष्टिक आहार मिलता था। समाजवादी पेंशन 500 रुपये दे रही थी। हमारी सरकार बनती तो गरीब महिलाओं को 3000 रुपये देती। महिला सम्मेलन में प्रस्ताव रखेंगे कि सपा अपने घोषणा पत्र के अनुरूप महिलाओं को 3000 रुपये महीना समाजवादी पेंशन देगी। महिला पहलवानों द्वारा सम्मान लौटाने के सवाल पर उन्होंने कहा कि महिलाओं को न्याय दिलाने के लिए सपा उनके साथ है। पदाधिकारियों की बैठक में राष्ट्रीय अध्यक्ष जूही सिंह और प्रदेश अध्यक्ष नीरू श्रीवास्तव सहित भारी संख्या में पदाधिकारी और कार्यकर्ता थे।

आपदाओं से बचाव को लेकर आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा स्कूलों के शिक्षकों को दिया जा रहा है प्रशिक्षण

द अचीवर टाइम्स निशान्त शुक्ला

हरदोई। जनसामान्य को आपदाओं से बचाव के प्रति जागरूक करने के लिए उत्तर प्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण एवं जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, हरदोई के संयुक्त तत्वाधान में स्कूल/डिग्री कॉलेज एवं ग्राम पंचायत स्तर पर आपदा जन-जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। प्रशिक्षण कार्यक्रम के सातवे दिन बृहस्पतिवार को राजकीय इंटर कॉलेज हरदोई में संडीला, भरखनी, बेहंदर और कोथावां ब्लॉक 510 प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों को मास्टर ट्रेनरों द्वारा आपदा प्रबंधन चक्र, भारत में आपदा प्रबंधन का तंत्र, आपदा जोखिम न्यूनीकरण, पेरिस समझौता, सेंडई फ्रेमवर्क के संबंध में और विभिन्न आपदाओं जैसे आकाशीय विद्युत, डूबना, अग्निकांड,बाढ़, शीतलहर, लू सर्पदंश, आधी तूफान, भूकम्प, ओलावृष्टि आदि विभिन्न आपदाओं के बारे में प्रशिक्षण दिया गया। आपदा विशेषज्ञ ज्ञान दीप शर्मा द्वारा सभी शिक्षकों को प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद इन आपदाओं के बारे में स्कूल के विद्यार्थियों, कर्मचारी, शिक्षकों और समुदाय के लोगों के बीच साझा करने को भी कहा। इसके साथ ही मास्टर ट्रेनरों द्वारा शिक्षकों को सचेत ऐप और दामिनी ऐप के सम्बन्ध में बताया और उनके मोबाइल में इंस्टॉल भी कराया। स्वास्थ्य विभाग और अग्निशाम की टीम द्वारा आपदा के समय प्रभावित व्यक्ति को प्राथमिक उपचार कैसे दिया जाता है और सीपीआई आदि के बारे प्रेक्टिकल करके डिमोंस्ट्रेट किया गया तथा अग्निशमन द्वारा सिलेंडर की आग को घरेलू नुस्खे से कैसे बुझाए जा सकता है इसके बारे में भी प्रेक्टिकल डेमोंसट्रेशन करके बताया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशासनिक अधिकारी दामोदर बाजपई, आपदा विशेषज्ञ ज्ञान दीप शर्मा, आपदा लिपिक पंकज कुमार और प्रवीण श्रीवास्तव और अजीत कुमार, अमित कुमार परमानंद, सुरेश, अमित अन्य कर्मचारी उपस्थित रहे।

ग्राम पंचायतों में विशेष सफाई अभियान से मनी ग्राम चौपाल की प्रथम वर्ष गांठ

300 विभागीय सफाई कर्मी व 400 से अधिक सफाईकर्मी मजदूरी पर ग्राम पंचायतों की ओर से लगाकर कराई सफाई

द अचीवर टाइम्स। संवाददाता

हापुड़। जनपद की ग्राम पंचायतों में गुरुवार को विशेष सफाई अभियान जिलाधिकारी प्रेरणा शर्मा के निर्देश और मुख्य विकास अधिकारी अभिषेक कुमार के निर्देशन में चलाया गया। जिला पंचायत राज अधिकारी वीरेंद्र सिंह की कोशिश रही की यह अभियान प्रभावी रहे। एक बार फिर से अच्छी सफाई हो जाए। गौरतलब है कि ग्रामीणों की समस्याओं का समाधान उनके द्वार पर पहुंचकर करने के लिए एक साल पहले ग्राम चौपाल अभियान की शुरुआत की गई। ग्राम चौपाल अभियान के एक साल गुरुवार को पूरे हो गए। इसकी प्रथम वर्ष गांठ पर जिलाधिकारी ने विशेष सफाई अभियान चलाने के निर्देश दिए थे। जिला पंचायत राज अधिकारी वीरेंद्र सिंह ने सभी एडीओ पंचायत को इस अभियान को प्रभावी बनाने और सफाई पर स्वयं निगरानी रखने के निर्देश दिए थे। जिला स्तरीय कंट्रोल रूम से भी इस अभियान पर नजर रखी गई और अभियान को प्रभावी बनाया गया। इस अभियान में 300 विभागीय सफाई कर्मी और 400 से अधिक सफाई कर्मी मजदूरी पर ग्राम पंचायतों की ओर से लगाकर सफाई कराई गई। एडीओ पंचायत गढ़ मुक्तेश्वर अमित कुमार ने बताया की गढ़ विकास खंड में अभियान प्रभावी रहा। सफाई के दौरान ग्राम पंचायतों में उन स्थानों पर सफाई पर फोकस किया गया जहां अच्छी सफाई की जरूरत थी। उनकी कोशिश रही की सही मायने में सफाई हो। गढ़ मुक्तेश्वर के सभी 60 ग्राम पंचायतों में अभियान चलाया गया। एडीओ पंचायत सिंभावली शिवम पांडे ने विकास खंड की 65 ग्राम पंचायतों में विशेष सफाई अभियान चलवाया। उन्होंने बताया की अभियान की निगरानी भी कराई गई। अभियान प्रभावी रहा। अच्छी सफाई हुई। सफाई कार्य आगे भी बेहतर रहे इसके लिए निगरानी की व्यवस्था की गई है। विकास खंड हापुड़ और विकास खंड धौलाना की ग्राम पंचायतों में भी विशेष सफाई अभियान चला।

एक नज़र

02 जनवरी को किया जायेगा कृषक मेला का आयोजन

द अचीवर टाइम्स निशान्त शुक्ला

हरदोई। जिलाधिकारी मंगला प्रसाद सिंह ने बताया है कि 02 जनवरी 2024 को विधान सभा क्षेत्र बिलग्राम-मल्लावां के जूनियर हाई स्कूल मैदान मल्लावां मे माननीय प्रधानमंत्री जी एवं मा0 मुख्यमंत्री जी के किसानों की आय दोगुनी करने के लक्ष्य के सापेक्ष अत्याधुनिक खेती, शून्य बजट खेती अथवा कम लागत में अधिक उत्पादन की जानकारी देने हेतु कृषक मेला का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें किसानों को निःशुल्क सब्जियों के बीज वितरित किया जायेगा। उन्होंने सम्बन्धित अधिकारियों व कर्मचारियों को निर्देशित किया है कि 02 जनवरी, 2024 को जूनियर हाईस्कूल मैदान मल्लावां में उपस्थित रहकर उक्त शिविर के सफलतापूर्वक आयोजन हेतु आवश्यक सहयोग प्रदान करें।

दो जुड़वा भाइयों का जन्मदिन बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया

द अचीवर टाइम्स। संवाददाता

हापुड़। गढ़ रोड पर नवीन मंडी के पास डॉक्टर भीमराव अंबेडकर पुस्तकालय में दो जुड़वा भाई अंबेडकर निवासी मोनू और मनीष का जन्मदिन बड़े ही हर्षोल्लास के साथ साथियों के साथ केक काटकर मनाया गया जहां दोनों जुड़वा भाई अंबेडकर निवासी मोनू और मनीष कुमार के चेहरे पर एक अलग सी मुस्कान देखने को मिली। जहां सम्मानित साथियों द्वारा दोनों भाइयों को केक खिलाते हुए उनके उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं दी साथ ही सम्मानित साथियों ने दोनों भाइयों को तथागत गौतम बुद्ध व बाबा साहब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जी के चित्र की पेंटिंग भेंट कर उनके विचारों पर चलने के लिए कहा। इस मौके पर रजनीश पायलट, हीरालाल मास्टर, केपी सिंह, मोनू कुमार निर्मल, सतीश कुमार, उमेश कुमार, पंकज सागर, सत्येंद्र कुमार आदि लोग मौजूद रहे।

भरी सर्दी में पुलिस अधीक्षक ने किया पिलखुवा कोतवाली का औचक निरीक्षण

द अचीवर टाइम्स। संवाददाता

हापुड़। पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा ने भारी सर्दी की परवाह न करते हुए गुरुवार को अचानक थाना पिलखुवा पहुंचकर औचक निरीक्षण किया निरीक्षण के दौरान थाना कार्यालय, महिला हेल्प डेस्क, मालखाना, हवालात, बैरिक, अभिलेख व अभिलेखों का रख-रखाव,शौचालय एवं साफ सफाई आदि को चैक किया एवं सम्बन्धित को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये। तो वही पिलखुवा थाने के पुलिस कर्मियों ने सोचा भी नहीं होगा कि इस हाड़ कंपा देने वाली इस ठिठुरन भरी सर्दी में कोई भी पुलिस अफसर थाना पहुंच सकता है परन्तु जनपद के कप्तान अभिषेक वर्मा ने गुरुवार के दिन ठिठुरन भरी सर्दी में थाना पिलखुवा पहुंच कर यह सिद्ध कर दिया है कि मिशन लक्ष्य में कोई बाधा उत्पन्न नही हो सकतीं है।

खाद्य सुरक्षा विभाग ने हल्दी पाउडर, पनीर ग्रेवी, अरहर दाल व ग्रेवी सहित 5 नमूने जांच हेतु भैजे लेब

द अचीवर टाइम्स। संवाददाता

हापुड़। जिलाधिकारी प्रेरणा शर्मा के निर्देशन पर खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग हापुड द्वारा महेन्द्र श्रीवास्तव सहायक आयुक्त (खाद्य) -द्वितीय के निर्देशन एवं सतीश कुमार मुख्य खाद्य सुरक्षा अधिकारी के नेतृत्व में शिवदास सिंह खाद्य सुरक्षा अधिकारी द्वारा प्रवर्तन कार्यवाही करते हुए राजा जी ढाबा एन.एच-09 फतेहपुर हापुड से हल्दी पाउडर, पनीर ग्रेवी, अरहर दाल का एक-एक नमूना एवं हसीन भाई मुस्लिम होटल स्याना रोड गढ़मुक्तेश्वर हापुड से हल्दी पाउडर एवं ग्रेवी का एक-एक नमूना संग्रहित किया। इस कारवाई मे कुल 5 नमूने संग्रहित किये गये उपरोक्त सभी नमूनों को वास्ते जाँच खाद्य विश्लेषक प्रयोगशाला भेजा जा रहा है, जॉच रिपोर्ट प्राप्त होने के पश्चात अग्रिम विधिक कार्यवाही की जायेगी।

पौधारोपण की शत प्रतिशत जियो टैगिंग करना सुनिश्चित करें- सीडीओ

द अचीवर टाइम्स, संवाददाता

हापुड़। मुख्य विकास अधिकारी अभिषेक कुमार वर्मा ने वन विभाग के तहत संचालित योजनाओं के बेहतर क्रियान्वन के लिए गठित जिला पर्यावरण समिति, जिला गंगा समिति तथा जिला वृक्षारोपण समिति की बैठक कलेक्ट सभागार में की। जिला वृक्षारोपण समिति में पौधो के शत प्रतिशत जियो टैगिंग, पौधा सत्यापन, सीएम पोर्टल पर पौधों सूची के दर्ज होने तथा वर्ष 2024 में वृक्षारोपण अभियान की समीक्षा की। वन विभाग के अधिकारी ने बताया कि लगाए गए वृक्षों की जियो टैगिंग के लिए विभिन्न विभागों को लक्ष्य आवंटित किए गए हैं परंतु केवल पांच विभाग जैसे पुलिस, रेलवे, उच्च शिक्षा तथा पर्यावरण विभागों द्वारा जिओ ट्रैकिंग से शत प्रतिशत नहीं कराया गया है मुख्य विकास अधिकारी ने सभी विभागीय अधिकारियों से आगामी 30 दिसंबर तक हर हालत में जियो टैगिंग शत प्रतिशत कराए जाने की निर्देश दिए साथ ही जिन अधिकारियों की ड्यूटी पौध सत्यापन में लगाई गई है वह निर्धारित अवधि के अंदर सत्यापन रिपोर्ट वन विभाग को उपलब्ध करा दें। इसके अलावा जिन विभागों ने सीएम पोर्टल पर अपनी पौध सूचना नहीं दर्ज कराई है वह 30 दिसंबर तक हर हालत में पोर्टल पर सूचना अपडेट कर दें। वन विभाग के अधिकारियों ने बताया कि वर्ष 2024 में पूरे प्रदेश में लगभग 35 करोड़ पौधारोपण किया जाना है।जिला गंगा समिति की बैठक के दौरान निजी सदस्य द्वारा गंगा समिति के व्हाट्सएप ग्रुप बनाने के सुझाव पर सीडीओ ने वन अधिकारी से ग्रुप को बनाकर शीघ्र अपडेट करने की निर्देश दिए उन्होंने कहा कि प्लास्टिक बेस्ट हॉटस्पॉट मैपिंग, प्लास्टिक अभियान, वनीकरण, कचरा निस्तारण तथा गंगा के किनारे गांव में शौचालय निर्माण की समीक्षा की। मुख्य विकास अधिकारी ने कहा कि प्लास्टिक रोकथाम के लिए सभी ईओ अभियान चलाकर फुटकर विक्रेता के साथ जनपद के होलसेल विक्रेता पर भी प्रवर्तन की कार्यवाही किया जाये। पंचायत अधिकारी ने बताया कि गंगा नदी के किनारे सभी पंचायत ओडीएफ प्लस हो चुकी है सीडीओ ने गंगा स्वच्छता के लिए सभी विभागों को मिलकर कार्य करने के निर्देश दिए। जिला पर्यावरण समिति की बैठक में मुख्य विकास अधिकारी ने ठोस अवशिष्ट प्रबंधन, बायो मेडिकल वेस्ट प्रबंधन नियोजित ढंग से करने की निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जन सामान्य को जागरूक करना होगा की खुले में कचरा ना जलाएं साथ ही ठोस अवशिष्ट प्रबंधन के लिए ग्राम पंचायत तथा नगर निकाय स्तर पर बेहतर ढंग से काम करने की आवश्यकता है उन्होंने कहा की जनपद के बायो मेडिकल बेस्ट सरकारी या निजी अस्पतालों से निकलने वाले बायो मेडिकल वेस्ट को शत प्रतिशत निस्तारण के साथ प्रवर्तन की कार्यवाही भी की जाए।

बैठक के दौरान अपर जिला अधिकारी न्यायिक ज्योत्सना बंधु, उप जिलाधिकारी, मुख्य विकास अधिकारी, मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी, जिला अर्थ एवं संख्या अधिकारी तथा संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

घायल व्यक्ति का निजी चिकित्सक से उपचार करने में पत्रकार बने मददगार

❖ तड़पता रहा घायल लोग बने तमाशबीन,समय पर नहीं पहुची पुलिस।

संवाददाता

हापुड़। थाना बहादुरगढ़ के चैक पोस्ट से दो सो मीटर ही दूरी का मामला बहादुरगढ़ कस्बा का सामने आया। जहाँ एक बाइक सवार व्यक्ति द्वारा अपनी बाइक का डिस्क ब्रेक लगाने पर बाइक फिसल गई और घायल बाइक सवार व्यक्ति सड़क पर काफी समय तक तडपा रहा जहाँ मौजूद स्थानीय लोगों ने घायल व्यक्ति की सूचना स्थानीय क्षेत्र के पुलिस के साथ पत्रकारों को दी, सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार जब आधे घंटे तक नहीं पहुंचा कोई भी पुलिस का कर्मचारी तो 8 किलोमीटर दूर से पहुंचे पत्रकारों ने सड़क पर घायल पड़े बाइक सवार व्यक्ति को टेंपो में लेकर निजी चिकित्सक के यहां पहुंचे जहां समय रहते व्यक्ति का इलाज सुचारू रूप से कराया जिसकी सूचना पत्रकारों द्वारा घायल बाइक सवार अर्जुन के परिवारजनों को दी और परिवारजनों ने निजी चिकित्सा सलाह पर 112 की एंबुलेंस बुलाकर गढ़मुक्तेश्वर सामुद्रिक स्वास्थ्य केंद्र के लिए भेजा तो वही स्थानीय पत्रकारों के साथ लोगों का कहना है कि हमें गर्व है अपने भाई अनुज चौधरी व सोनू चौधरी पत्रकार और उनकी टीम पर कि वह हमेशा लोगों की मदद के लिए आगे रहते हैं। पत्रकार भाई तो राष्ट्र का चौथा स्तंभ है जो हमेशा गर्मी व सर्दी दिन हो या रात की परवाह किए बगैर अपनी जान हथेली पर रखकर बलिदान देते आए हैं और सड़क पर पड़े घायल व्यक्ति मदद करने वाला दृश्य आज भी कलम के सिपाहियों का बलिदान सर्वोपरि है।

क्षमता से अधिक यात्री व सवारियां ले जाने पर 6 परिवहन विभाग ने वाहनों का किया चालान

3 स्कूली वाहनों पर भी चालान की कार्यवाही

द अचीवर टाइम्स। संवाददाता

हापुड़। द्वितीय सडक सुरक्षा पखवाडा के तहत गुरुवार को सड़क सुरक्षा पखवाडा में आयोजित होने वाले कार्यकमों के अन्तर्गत ड्रंकन ड्राईविंग तथा ओवर स्पीडिंग के विरुद्ध प्रभावी प्रवर्तन कार्यवाही, स्कूली वाहनों की सडक सुरक्षा के मानकों के अनुरूप फिटनेस की जांच एवं कार्यवाही,यात्री वाहनों में क्षमता से अधिक यात्री / सवारियों के पाये जाने पर नियमानुरूप कार्यवाही किये जाने हेतु दिये गये निर्देश के अनुपालन में रमेश कुमार चौबे सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी, (प्रवर्तन) हापुड, आशुतोष उपाध्याय, यात्रीकर अधिकारी हापुड़ द्वारा जनपद के विभिन्न मार्गों पर प्रभावी प्रवर्तन कार्यवाही की गयी,जिसके अन्तर्गत ड्रंकन ड्राईविंग के अभियोग में 4, ओवर स्पीड के अभियोग में 127, यात्री वाहनों में क्षमता से अधिक यात्री व सवारियां ले जाने के अभियोग में 6 वाहनों का चालान एवं अन्य अभियोगों सहित कुल 148 वाहनों का चालान किया गया । प्रवर्तन कार्यवाही के दौरान 11 स्कूली वाहनों को चेक किया गया, जिसमें 03 वाहनें मानक के अनुरूप न पाये जाने पर उनके विरूद्ध चालान की कार्यवाही की गयी। सडक सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम के अन्तर्गत सडक सुरक्षा के नियगो की जानकारी तथा सडक दुर्घटना से बचाव हेतु शासन से प्रेषित यातायात नियमों के फोल्डर, लिपलेट, तथा पम्पलेट भी वितरित कराये गये ।

ब्लाकों पर जनप्रतिनिधियों ने विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम में प्रतिभाग किया

द अचीवर टाइम्स निशान्त शुक्ला

हरदोई। विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यकम विकास खण्ड टडियावां के ग्राम आशा में नितिन अग्रवाल, राज्य मंत्री आबकारी एवं मघ निषेध विभाग (स्वतंत्र प्रभार) द्वारा यात्रा कार्यकम का शुभारम्भ किया गया। मंत्री द्वारा कार्यकम स्थल पर कृषि, आगनवाडी, स्वास्थ्य विभाग के स्टालो का निरीक्षण किया गया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी विश्व के सबसे लोकप्रिय नेता है। उन्होने जनधन खाता खुलवाकर लाभ सीधे लाभार्थी के खाते में पहुंचाने का कार्य किया गया है। माननीय प्रधानमंत्री का संकल्प है कि समाज के अन्तिम पायदान पर बैठे व्यक्ति को स-समय योजनाओं का लाभ देकर विकास की मुख्य धारा में जोडना है। इसको ध्यान में रखते हुये प्रधानमंत्री द्वारा कई योजनाये संचालित की गई। पी0एम0 किसान योजना देकर किसानो का सम्मान बढाया है। तो वहीं उज्जवला योजना के अन्तर्गत गैस कनेक्शन व सिलेण्डर देकर महिलाओं का भी सम्मान बढाया गया है तो वही आयुष्मान कार्ड योजना से गरीबो का निशुल्क उपचार हो रहा है। कार्यकम में समस्त लोगो को विकसित भारत की शपथ भी दिलाई गयी। यात्रा कार्यकम स्थल पर ग्राम प्रधान, प्रभारी कृषि विज्ञान केन्द्र, खण्ड विकास अधिकारी, ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि, भाजपा के समस्त पदाधिकारी मौजूद रहे। उनके द्वारा केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही समस्त योजनाओं की जानकारी दी गई। विकास खण्ड बावन के ग्राम सकतपुर व काशीपुर में सांसद जय प्रकाश रावत द्वारा यात्रा कार्यकम में प्रतिभाग किया गया। सांसद द्वारा बताया गया कि यह कार्यकम समस्त योजनाओं के पात्र लाभार्थियों को संतृप्त करने के उद्देश से चलाया जा रहा है। महिला, किसान, नौजवान के सशक्तीकरण होने पर ही विकसित राष्ट्र का संकल्प पूरा होगा। किसान आधारित प्रदेश में जब किसान खुशहाल होगा तब देश खुशहाल होगा। इस हेतु समस्त अधिकारी/ कर्मचारी पूर्ण मनोयोग से कार्य कर समस्त पात्र व्यक्तियो को समस्त योजनाओं से लाभान्वित करे। उन्होने कहा कि विगत कई दशकों से जो कार्य नहीं हुये थे। वो कार्य प्रधानमंत्री द्वारा कराये गये है। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना, नारी शक्ति बंधन अधिनियम पारित कराया गया है। मिशन शक्ति के तहत देश की आधी आबादी के जीवन स्तर में सुधार लाने हेतु उज्जलवा योजना, बेटी पढ़ाओं, कन्या सुमंगल, आयुष्मान भारत व अन्य योजनाए संचालित की गई है। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा फसल बीमा योजना चलाई गई जिसमें प्राकृतिक आपदा से प्रभावित किसानो को उनकी फसल खराब होने की दशा में 72 घंण्टे में क्षतिपूर्ति की धनराशि प्राप्त होती है। कार्यकम में समस्त लोगो को विकसित भारत की शपथ भी दिलाई गयीं। कार्यकम स्थल पर ग्राम प्रधान, प्रभारी कृषि विज्ञान केन्द्र, खण्ड विकास अधिकारी, ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि, भाजपा के समस्त पदाधिकारी मौजूद रहे। विकास खण्ड पिहानी के ग्राम शाहपुर सैदान में विधायक श्याम प्रकाश द्वारा यात्रा कार्यकम में प्रतिभाग किया गया। उनके द्वारा ग्राम वासियों को सम्बोधित करते हुये कहा कि माननीय प्रधानमंत्री का संकल्प है कि समाज के अन्तिम पायदान पर बैठे व्यक्ति को स-समय योजनाओं का लाभ देकर विकास की मुख्य धारा में जोडना है। महिला, किसान, नौजवान के सशक्तीकरण होने पर ही विकसित राष्ट्र का संकल्प पूरा होगा। कार्यक्रम स्थल पर ग्राम प्रधान, प्रभारी कृषि विज्ञान केन्द्र, खण्ड विकास अधिकारी, ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि, भाजपा के समस्त पदाधिकारी मौजूद रहे। विकास खण्ड बेहन्दर के ग्राम इनायतपुर व खेरवा में विधायक रामपाल वर्मा द्वारा यात्रा कार्यकम का स्वागत किया गया। विकास खण्ड सुरसा के ग्राम अडगापुर व ललौली में, विकास खण्ड अहिरोरी के ग्राम बाजिदपुर व महमूदपुर बहादुर में विकास खण्ड टडियावां के ही ग्राम उनौती में, विकास खण्ड सण्डीला के ग्राम टिकरा कला व बेगमगंज में, विकास खण्ड भरावन के ग्राम कोयली व हडहा, विकास खण्ड बिलग्राम के ग्राम पसनेर व बेहटा बुजुर्ग में, विकास खण्ड हरपालपुर के ग्राम ककरा व इकनौरा में, विकास खण्ड माधौगंज के ग्राम सहजना व दौलतियारपुर में, विकास खण्ड भरखनी के ग्राम जलपापुर व मानपारा में, विकास खण्ड पिहानी के ग्राम अब्दुल्लानगर में, विकास खण्ड शाहाबद के ग्राम हरौली कुतुब नगर व भदासी में, विकसित भारत संकल्प यात्रा के कार्यक्रम आयोजित किये गये। जन प्रतिनिधियों / मुख्य अतिथियों द्वारा कृषि, स्वास्थय, ग्राम्य विकास, आगनबाडी एवं अन्य विभागो द्वारा लगाये गये स्टालो का निरीक्षण किया गया। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के स्टाल कार्यकम के मुख्य आकर्षण का केन्द्र रहे, जिसमें ग्राम वासियों की एनीमिया की जांच, शुगर की जांच, बी0पी0 की जांच और अन्य चिकित्सा स्वास्थ्य की जांच निशुल्क की गयी और निशुल्क दवा भी वितरित की गयीं। मुख्य अतिथि जन प्रतिनिधियों द्वारा पीएम कुसुम योजना, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के लाभार्थी कृषको को प्रमाण पत्र/स्वीकृत पत्र वितरित किये गये। विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यकम में कृषि विभाग के कार्मिको द्वारा पीएम किसान योजना के अन्तर्गत ई-केवाईसी मूलेख अंकन, केसीसी एवं नये पंजीकरण मौके पर कराये जा रहे है। कृषको को अन्न (मिलेट्स) के सम्बन्ध में भी जानकारी दी गई। मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना की जानकारी भी दी गई। कृषको को रबी की फसलों की तकनीकी जानकारी के साथ फसलो की लाइन से रोपाई एवं बुबाई के लिये प्रेरित किया गया । कृषको को प्रमाणित बीजो के बारे में जानकारी दी गई उपरोक्त कार्यकम में आज कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक, स्वास्थ्य, शिक्षा एवं खाद्य आदि विभागों के कर्मचारी/अधिकारी उपस्थित रहे।

फंस गए तो लंबा नपेंगे

PM मोदी के आने पर अयोध्या में बंद रहेगा हाइवे, पूर्वांचल से लखनऊ के बीच डायवर्जन

- 30 दिसंबर को अयोध्या में पीएम नरेंद्र मोदी का कार्यक्रम।
- 29 से 30 तारीख के बीच 15 घंटे तक बंद रहेगा फोरलेन।
- लखनऊ से पूर्वांचल के बीच के यात्रियों के लिए डायवर्जन।
- प्राण प्रतिष्ठा से पहले राममय हुई Ayodhya, धूमधाम से मनाया गया श्रीराम का स्वरूप सज्जा महोत्सव।

संवाददाता

लखनऊ। पीएम मोदी अयोध्या दौरे के लिए सुरक्षा तैनाती के साथ अयोध्या पहुंच रहे हैं। इस दौरान श्रीराम एयरपोर्ट, रेलवे स्टेशन का उद्घाटन करेंगे और रोडशो और जनसभा को भी संबोधित करेंगे। सुरक्षा के इंतजाम के लिए 3 डीआईजी, 17 पुलिस अधीक्षक, 40 अपर पुलिस अधीक्षक, 82 क्षेत्राधिकारी, 90 निरीक्षक और 4 कंपनी PAC तैनात की गई है। देश के पीएम नरेंद्र मोदी 30 दिसंबर को अयोध्या पहुंच रहे हैं। ऐसे में अयोध्या को सजाने संवारने के साथ ही पीएम मोदी की सुरक्षा को लेकर सभी सुरक्षा एजेंसियां काम पर लग गई हैं। पीएम इस दौरान श्रीराम एयरपोर्ट, रेलवे स्टेशन का उद्घाटन करेंगे साथ ही रोडशो और जनसभा को भी संबोधित करेंगे। प्रधानमंत्री के आगमन पर राम नगरी को त्रेतायुगीन वैभव के अनुरूप सुसज्जित किया रहा है। बता दें कि प्रधानमंत्री का यह अयोध्या दौरा राम नगरी को हजारों करोड़ की परियोजनाओं का उपहार देने वाला होगा। इस दौरान सुरक्षा-व्यवस्था अभेद्य बनाई जा रही है। ट्रैफिक प्रबंधन के लिए ठोस कार्ययोजना तैयार की गई है। एक भी अतिथि/आमजन को असुविधा ना हो। अतिथियों, श्रद्धालुओं के साथ सरकारी और पुलिस कर्मचारियों का व्यवहार आदर्श हो ऐसा मैप तैयार किया जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दौरे को लेकर सख्त सुरक्षा के इंतजाम किए जा रहे हैं। इस दौरान 3 डीआईजी 17 पुलिस अधीक्षक और 40 अपर पुलिस अधीक्षक की तैनाती की जा रही है। साथ ही 82 क्षेत्राधिकारी 90 निरीक्षक की भी तैनाती की गई है। पीएम सुरक्षा में 4 कंपनी ञ्ॅ की भी तैनाती की गई है। 30 दिसंबर को क्ररू मोदी का की सुरक्षा में किसी भी प्रकार की चूक ना हो, इसका पूरा इंतजाम किया गया है। पीएम सुरक्षा के लोग पहले ही अयोध्या पहुंच चुके हैं और सुरक्षा की पूरी कमान उन्होंने संभाल रखी है। 29 की मध्य रात्रि से 15 घंटे के

लिए हाइवे पर बंद रहेगा यातायात

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आगमन को लेकर 29 दिसंबर की मध्य रात्रि एक बजे से 30 दिसंबर शाम चार बजे तक 15 घंटे के लिए हाईवे पर सभी प्रकार के वाहनों का यातायात प्रतिबंधित रहेगा। अंतर्जनपदीय डायवर्जन 30 दिसंबर को प्रातः सात बजे से शाम चार बजे तक लागू रहेगा। थाना सरैनी लालगंज कस्वा से शिवगढ़ होते हुए हैदरगढ़ से पूर्वांचल एक्सप्रेस पर गोरखपुर की ओर डायवर्ट किया जाए?गा। आगरा एक्सप्रेस वे से आने वाले वाहन मोहान, जुनारगंज से मोहनलालगंज, गोसाईगंज होते हुए पूर्वांचल एक्सप्रेस वे से होते हुए गोरखपुर की ओर डायवर्ट होंगे। सीतापुर शाहजहांपुर से आने वाले वाहन आइआइएम रोड दुबग्गा से आलमबाग, नहरिया से शहीदपथ होते हुए आहिमामऊ से पूर्वांचल एक्सप्रेस वे की ओर डायवर्ट किए जाएंगे। बलरामपुर, बहराइच, गोंडा श्रावस्ती से अयोध्या होकर लखनऊ जाने वाले वाहन गोंडा, करनेलगंज से जरवल रोड, चौकाघाट, बदोसराय, सफदरगंज से डायवर्ट किए जाएंगे। सुलतानपुर से आने वाले वाहनों को कूरेभार और रायबरेली से आने वाले वाहनों को हलियापुर से पूर्वांचल एक्सप्रेस वे पर डायवर्ट होंगे। लखनऊ बाराबंकी की ओर से आने वाले वाहन बाराबंकी से चौकाघाट, जरवल रोड, करनेलगंज होते हुए गंतव्य की ओर जाएंगे। गोरखपुर से वाहनों का डायवर्जन कौड़ीराम, बड़हलगंज, दोहरीघाट, जियनपुर आजमगढ़ से पूर्वांचल एक्सप्रेस वे पर किया जाएगा। गोरखपुर से सहजनवा, बस्ती, कलवारी से टांडा, अकबरपुर होते हुए पूर्वांचल एक्सप्रेस वे से वाहनों का डायर्वजन किया जाएगा। गोरखपुर से ही संतकबीरनगर, बांसी, मेंहदावल, डुमरियागंज, उतरौला, बलरामपुर, गोंडा, जरवल रोड, चौकाघाट से बदोसराय, से सफदरगंज होते हुए लखनऊ की ओर वाहनों का डायर्वजन किया जाएगा। कानपुर की ओर से आने वाले वाहनों को कानपुर, उन्नाव, मौरांवा, मोहनलालगंज, गोसाईगंज, चांदसराय से पूर्वांचल एक्सप्रेसवे से गोरखपुर की ओर डायवर्ट होंगे। कानपुर की तरफ से आने वाले वाहनों को कानपुर, फतेहपुर, हुसैनगंज थाने से पहले गंगाशो पुल आजमगढ़, अंबेडकरनगर से आने वाले वाहन अंबेडकरनगर से पूर्वांचल एक्सप्रेस वे पर डायवर्ट होकर गंतव्य की ओर जाएंगे।

एक नज़र

यूपी में BJP की स्पेशल-35 संभालेगी लोकसभा इलेक्शन का जिम्मा, जनवरी से चुनावी मोड में आ जाएगी भगवा पार्टी

लखनऊ। भाजपा प्रदेश मुख्यालय ने सभी जिलाध्यक्षों को लोकसभा और विधानसभा की चुनाव संचालन समिति का गठन करने के निर्देश दिए। यह चुनाव प्रचार, अतिथि सत्कार, कार्यालय, भोजन, जलपान, वोटर लिस्ट जैसी जिम्मेदारियों के लिए अलग-अलग टीमों का गठन करेगी। जनवरी से ही हर लोकसभा क्षेत्र में राष्ट्रीय पदाधिकारियों की सभाएं शुरू हो जाएंगी, जिनके लिए लोकसभा और विधानसभा स्तर पर अलग-अलग जिम्मेदारियां दी जाएंगी। जनवरी से उत्तर प्रदेश में बीजेपी पूरी तरह से चुनावी मोड में आ जाएगी। भाजपा प्रदेश मुख्यालय पर बुधवार को हुई बैठक में सभी जिलाध्यक्षों को अपने जिलों में लोकसभा और विधानसभा की चुनाव संचालन समिति का गठन 5 जनवरी तक करने को कह दिया गया है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र चौधरी ने कहा कि यह टीम पांच जनवरी तक बना ली जाए। लोकसभा स्तर पर इस टीम में 35 लोग होंगे, वहीं विधानसभा स्तर पर इस टीम में 28 लोग शामिल होंगे। बैठक में सभी जिलों में 31 दिसंबर तक जिला इकाई की बैठकें आयोजित करने को भी कहा गया।

चुनाव प्रचार से लेकर सभा तक की जिम्मेदारी

बैठक में तय किया गया कि लोकसभा स्तर पर 35 लोगों की टीम को और विधानसभा स्तर पर 28 लोगों की टीम को अलग-अलग चुनाव प्रचार, अतिथि सत्कार, कार्यालय, भोजन, जलपान, वोटर लिस्ट जैसी जिम्मेदारियां दी जाएंगी। जनवरी से ही हर लोकसभा क्षेत्र में केंद्रीय मंत्रियों, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ राष्ट्रीय पदाधिकारियों की सभाएं शुरू हो जाएंगी। इन सभाओं के लिए लोकसभा और विधानसभा स्तर पर अलग-अलग जिम्मेदारी दी जाएगी। इसके अलावा हर विधानसभा स्तर पर दीवार लेखन, चुनावी गीत और वोटर लिस्ट का काम भी होना है। इनकी भी जिम्मेदारी पदाधिकारियों को दी जाएगी। साथ ही 15 जनवरी तक सभी जिलों और क्षेत्र में अलग-अलग पन्ना प्रमुख संयोजक और सह संयोजक बना लिए जाएंगे। सभी पार्टी पदाधिकारियों को पन्ना प्रमुख की जिम्मेदारी निभानी होगी। वहीं यह पन्ना प्रमुख संयोजक रोज बैठकें कर बूथ स्तर तक की मॉनिटरिंग करेंगे। बैठक में दिल्ली में हुई राष्ट्रीय कार्यसमिति की बैठक में हुए प्रस्तावों की भी जानकारी दी गई। इस दौरान राजनैतिक प्रस्ताव भी पारित किया गया, जिसमें केंद्र की मोदी सरकार और प्रदेश की योगी सरकार के कामकाज की तारीफ की गई।

हर मोर्चे के होंगे दो-दो राष्ट्रीय अधिवेशन

बैठक में यह भी तय हुआ है कि सभी मोर्चों के दो-दो राष्ट्रीय अधिवेशन होंगे। सात मोर्चों के अलग-अलग अधिवेशन दक्षिण और उत्तर भारत में होंगे। सभी मोर्चों को अलग-अलग काम भी दिया गया। प्रदेश संगठन महामंत्री धर्मपाल सिंह ने बताया कि 24 जनवरी को युवा मोर्चा नव मतदाता सम्मेलन, शक्ति केन्द्रों पर नुक्कड़ सभाएं करेगा। वहीं महिला मोर्चा लखपति दीदी, अनुसूचित मोर्चा बस्ती संपर्क अभियान, ओबीसी मोर्चा युवा संवाद, किसान मोर्चा किसान अधिवेशन, अनुसूचित जनजाति मोर्चा जनजाति महासम्मेलन और अल्पसंख्यक मोर्चा अल्पसंख्यकों से संवाद जैसे कार्यक्रमों से लोगों तक पहुंचेगा। सभी मोर्चों को इन अभियानों का ब्लू प्रिंट तैयार करने के निर्देश दिए गए। युवा मोर्चा और महिला मोर्चा कॉलेजों में पहुंचकर लोगों को विकसित भारत एम्बैसडर बनाएंगे। इस मौके पर बीजेपी के राष्ट्रीय महामंत्री दुष्यंत गौतम ने कहा कि सबसे बड़ी जिम्मेदारी बूथ अध्यक्ष की होगी। वह वोट पड़ते वक्त फर्जी वोटर की पहचान कर सकता है। इसलिए बूथ की इकाई को मजबूत बनाना है।

प्रत्याशी चयन और पदाधिकारी बदलने में न जुटें जिलाध्यक्ष

बैठक में बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र चौधरी ने जिलाध्यक्षों की क्लास ली। उन्होंने कहा कि कई जिलाधिकारी अपनी जेब में जिला से लेकर मंडल और बूथ स्तर तक के पदाधिकारियों को बदलने की सूची लेकर घूम रहे हैं। कुछ तो प्रत्याशी चयन में भी जुटे हैं। उन्होंने साफ कहा कि पदाधिकारियों में कोई बदलाव नहीं किया जाना है। सिर्फ उन्हीं जगह पदाधिकारी बदले जाएंगे, जहां कोई अस्वस्थ है या कहीं बाहर चला गया है। कुछ जगह प्रमोशन होने से भी पद खाली हैं। यह सारे बदलाव भी 15 से 20 फीसदी तक होने हैं। यह सारा चयन प्रदेश स्तर से होगा।

कोहरे में नहीं चलेंगी रोडवेज की बसें, दृश्यता कम होते ही ढाबा, पेट्रोल पंप पर खड़ी कर देने के निर्देश

लखनऊ। यूपी रोडवेज की बसें घने कोहरे में नहीं चलेंगी। किसी प्रकार की दुर्घटना से बचाने के लिए सरकार द्वारा यह फैसला लिया गया है। प्रदेश में सुबह बढ़ते कोहरे और कम दृश्यता के दौरान उत्तर प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम की बसों का संचालन नहीं होगा। निगम की ओर से इस संबंध में दिशा निर्देश जारी किए गए हैं। परिवहन विभाग ने निर्देश दिए हैं कि बस स्टैंड से बस रवाना होने से पहले चालक और परिचालक को पाबंद किया जाए कि कोहरे के कारण दृश्यता कम होने की स्थिति में बस का संचालन नहीं करें। बस को निकटवर्ती बस स्टेशन व यात्री प्लाजा, ढाबे, पेट्रोल पम्प, पुलिस थाना अथवा अन्य किसी सुरक्षित स्थान पर रोक दें। कोहरा समाप्त होने के बाद ही बसों का संचालन पुनः प्रारंभ किया जाए।

अरे ! कोरोना से संक्रमित मरीजों के घरवाले भी हो रहे पॉजिटिव

लखनऊ में एक ही परिवार के 2 अन्य लोग चपेट में आए

संवाददाता

लखनऊ। कोरोना के मामले अब तेजी से बढ़ने लगे है। राजधानी में देखते ही देखते एक्टिव मरीजों की संख्या 5 पहुंच गई है। 27 दिसंबर को जारी रिपोर्ट में दो और लोगों की जांच रिपोर्ट पॉजिटिव मिली है। यह दोनों मरीज एक ही परिवार के बताए जा रहे है। इसी परिवार की महिला पहले ही पॉजिटिव आ चुकी है। उत्तर प्रदेश में कोरोना के नए मामले अब तेजी से बढ़ते जा रहे है। लखनऊ, मुरादाबाद, नोएडा समेत कई जिलों में कोरोना के नए सब वेरिएंट छ्ह.1 के अलर्ट के बाद से लगातार संक्रमित मरीज मिल रहे हैं। इसको लेकर यूपी सरकार भी अलर्ट मोड पर आ गई है। कोरोना के बढ़ते मामलों को देखते हुए शासन द्वारा इस संबंध में दिशा निर्देश भी जारी कर दिए गए है। इसी क्रम में राजधानी लखनऊ दो अन्य लोग कोरोना से संक्रमित मिले हैं। इस तरह लखनऊ में कोरोना के एक्टिव मरीजों की संख्या 5 पहुंच गई है। लखनऊ स्वास्थ्य विभाग की तरफ

से दी गई जानकारी के मुताबिक बृहस्पतिवार को चंदर नगर के दो लोगों की जांच रिपोर्ट पॉजिटिव मिली है। इसमें एक बच्ची और एक पुरूष शामिल है। किसी की भी हालत नाजुक नहीं है। दोनों ही कोरोना पॉजिटिव मरीज अपने घर पर ही होम आइसोलेशन में है। दोनों मरीजों का डॉक्टरों की निगरानी में इलाज चल रहा है। तबियत खराब होने के बाद बुधवार को दोनों मरीजों के सैंपल कोरोना की जांच के लिए भेजे गए थे। बृहस्पतिवार की शाम को जारी हुई जांच रिपोर्ट में यह दोनों मरीज कोरोना से संक्रमित पाए गए हैं। वहीं जिला सर्विलांस अधिकारी डॉ. निशांत निर्वाण ने बताया बताया कि बीते दिनों आलमबाग क्षेत्र में एक महिला पॉजिटिव मिली थी उसके ही फैमिली मेंम्बर है। इस तरह बृहस्पतिवार को जिनकी जांच रिपोर्ट पॉजिटिव आई है ये दोनों मरीज एक ही परिवार से है। अब इनके सैंपल जीनोम सिक्वेंसिंग की जांच के लिए भेजे जाएंगे। इसके साथ ही राजधानी लखनऊ में कोरोना से संक्रमित ऐक्टिव मरीजों की संख्या पांच पहुंच गई है। लखनऊ स्वास्थ्य विभाग ने कोरोना से बचने के लिए सावधानियां जारी की है। इसमें कहा गया है कि बुजुर्ग और बच्चों को भीड़ भाड़ वाले जगहों पर ले जाने से बचे। इसके साथ ही सार्वजनिक स्थलों, कार्यालयों, बाजारों और अन्य भीड़भाड़ वाले स्थानों पर मास्क, सेनेटाइजर की

UP सिपाही भर्ती वेबसाइट अपडेट होने के चलते देर रात तक नहीं हो सके आवेदन, क्या बढ़ेगी लास्ट डेट

संवाददाता

लखनऊ। योगी सरकार ने अभ्?यर्थियों के लिए के लिए उम्र सीमा 22 से बढ़ाकर 25 साल कर दी है। इसकी वजह से 27 दिसंबर को दिन भर वेबसाइट अपडेट करने का काम चलता रहा। पहले दिन एक भी आवेदन नहीं किया जा सका। माना जा रहा है कि अंतिम डेट बढ़ाई जाएगी। चर्चा है कि आवेदन किए जाने की लास्?ट डेट योगी सरकार बढ़ा सकती है

यूपी पुलिस में सिपाहियों के 60,244 पदों पर सीधी भर्ती के लिए आयु सीमा तीन वर्ष बढ़ाए जाने के बाद बुधवार को अभ्यर्थी ऑनलाइन आवेदन के लिए देर रात तक इंतजार करते रहे। दरअसल, मंगलवार को उम्र सीमा में हुए नए बदलाव के कारण बुधवार को वेबसाइट अपडेट करने की कवायद होती रही। रात को

नौ बजे तक वेबसाइट को अपडेट करने का काम चल रहा था। चूंकि बुधवार से ही भर्ती के लिए आवेदन शुरू होने थे। ऐसे में पूरा दिन वेबसाइट अपडेट करने में ही निकल गया। ऐसे में माना जा रहा है कि आवेदन की आखिरी तारीख बढ़ाई जा सकती है। दरअसल, आयु सीमा को लेकर चल रहे विरोध के बाद सीएम योगी आदित्यनाथ ने आयु सीमा तीन साल बढ़ाने के निर्देश दिए थे। इसके बाद मंगलवार को भर्ती बोर्ड व शासन के अफसर नए आदेश के मुताबिक मसौदा तैयार करते रहे। भर्ती बोर्ड ने पहले जारी की गई अधिसूचना के मुताबिक वेबसाइट और सॉफ्टवेयर तैयार करवाया था। आवेदन की तारीख 27 दिसंबर पहले ही घोषित की जा चुकी थी। देर रात हुए आदेश के बाद बोर्ड के अधिकारी, तकनीकी विशेषज्ञों और परीक्षा करवाने वाली एजेंसी की टीम रात से ही वेबसाइट और सॉफ्टवेयर को अपडेट करने की कवायद में जुटी रही। अपडेट के दौरान तकनीकी दिक्कतें आने की वजह से रात 10 बजे तक ऑनलाइन आवेदन करने का लिंक बोर्ड जारी नहीं कर सका। उत्तर प्रदेश पुलिस भर्ती एवं प्रोन्नति बोर्ड की अध्यक्ष डीजी रेणुका मिश्रा ने बताया कि वेबसाइट में आवेदन की प्रक्रिया में हुए बदलावों के बाद वेबसाइट की टेस्टिंग की जा रही है। टेस्टिंग के बाद देर रात तक आवेदन का लिंक जारी होने की उम्मीद है।

उम्र में छूट के बाद पांच लाख और आवेदन आने की उम्मीद

पहले जारी हुई अधिसूचना के मुताबिक भर्ती बोर्ड ने करीब 25 लाख आवेदन आने की संभावना जताई थी। लेकिन उम्र सीमा में छूट तीन साल बढ़ाए जाने के बाद 30 लाख से ज्यादा आवेदन आने की उम्मीद जताई जा रही है। आने वाले आवेदनों को भी ध्यान में रखकर वेबसाइट में अपडेट किए जा रहे हैं। इसके साथ ही आवेदन की आखिरी तारीख बदलने की भी संभावना है। पहले 27 दिसंबर से 16 जनवरी तक आवेदन और 18 जनवरी तक आवेदन में संशोधन की समय सीमा तय की गई थी। लेकिन बुधवार को पूरा दिन अपडेट में निकलने के बाद अब अफसर समय सीमा बढ़ाए जाने पर विचार कर रहे हैं।

अलग-अलग दुर्घटनाओं में भिड़े कई वाहन, कई लोगों को आई गंभीर चोटें

एजेंसी

लखनऊ। के राष्ट्रीय राजमार्ग पर कोहरे के कहर के कारण कई वाहन दुर्घटना का शिकार हो गए। हादसों में कई लोगों को गंभीर चोटें आई हैं। घने कोहरे में दृश्यता शून्य होने के कारण रुदौली के भेलसर चौकी अंतर्गत राष्ट्रीय राजमार्ग 27 पर बुधवार आधी रात करीब डेढ़ बजे के बाद एक के बाद एक कई वाहन अलग-अलग स्थानों पर दुर्घटना के शिकार हो गए। जिसमे एक ट्रक चालक का पैर फैक्चर हो गया तो वहीं कार में सवार दो महिलाओं को भी चोट आई है। झांसी डिपो की एक बस भी दुर्घटना की शिकार हो गई। हालांकि बस में यात्री नही थे। पुलिस ने कुछ घायलों को सीएचसी रुदौली पहुंचाया है तो वहीं कई को मामूली चोटें आई। जिन्होंने निजी अस्पताल में इलाज कराया है। वाहनों के आपस में टकराने के कारण राष्ट्रीय राजमार्ग पर आवागमन बाधित हो गया। इस दौरान करीब तीन किलोमीटर तक वाहनों की रफ्तार धीमी रही और जाम की स्थित बनी रही। मौके पर पहुंची पुलिस ने घायलों को पास के अस्पताल में भेजा। क्षतिग्रस्त हुए वाहनों को राष्ट्रीय राजमार्ग से हटवा यातायात सुचारू कराया गया। भेलसर चौकी अन्तर्गत कुढासादात गांव के निकट रात्रि करीब डेढ़ बजे एक ट्रक संख्या यूपी 22 ए टी 8521 आगे जा रहे अज्ञात वाहन से टकरा गया जिससे उसके परखच्चे उड़ गए। वहीं ट्रक चालक सलीम (33) पुत्र जग्गू निवासी कैमरी जनपद रामपुर उसी में फंस गया जिसे पुलिस ने कड़ी मशक्कत के बाद बाहर निकाला। उसका दाहिना पैर फैक्चर हो गया है। ट्रक में सवार उसके भाई आरिफ पुत्र जग्गू को मामूली चोटें आई हैं।

रेलवे स्टेशन पर खो गए थे भाई-बहन, 13 साल बाद एक दूसरे से मिले और मां की भर गई झोली... कहानी फिल्मी है

कहानी फिल्मी है रेलवे स्टेशन पर खो गए थे भाई-बहन, 13 साल बाद एक दूसरे से मिले और मां की भर गई झोली... कहानी फिल्मी है

- आगरा में मां अपने बच्चों से 13 साल के बाद मिलीं।
- घर से गुस्से में निकल ट्रेन में बैठ गए थे भाई-बहन।
- 9 और 6 साल के भाई-बहन खुद भी बिछड़ गए थे।

संवाददाता

लखनऊ। हाथों में बेटा और बेटी की तस्वीर लिए दर-दर भटक रही मां को उम्मीद थी कि उसके बच्चे एक दिन जरूर लौट कर आएंगे। वह दोनों बच्चों को फिर से दुलार कर सकेगी। यह एक नहीं दो नहीं पूरे 13 वर्षों से अपने लापता बच्चों की आस में इंतजार की घड़ियां गिन रही मां का सपना अब पूरा होने वाला है। जल्द ही उसके बच्चे उससे मिल जाएंगे। मां की पिटाई से नाराज 9 साल की राखी छोटे भाई को साथ लेकर घर से निकल तो आई, लेकिन उसे इतना पता नहीं था कि ये गुस्सा इसे अपने घर से इतना दूर कर देगा कि फिर वह उनसे मिलने के लिए तरस जाएगी। मगर जिनकी किस्मत में मिलन होता है। तो हर ताकत उनकी मदद में जुट जाती है। ये कहानी आगरा के ऐसे दो बच्चों की है। जो अपने घर से निकलकर ट्रेन में जा बैठे और फिर आगे के सफर में खुद भी बिछड़ गए। वे 13 साल तक अपने माता-पिता को खोजते रहे। बात वर्ष 2010 की है। चाइल्ड राइट्स एक्टिविस्ट नरेश पारस ने बताया कि कुछ दिनों पूर्व उनके पास बेंगलुरु से युवक का फोन कि वह अपनी बहन के साथ 13 साल पहले एक ट्रेन में बैठकर घर से निकल आया था। अब उसकी बहन गुरुग्राम में नौकरी करती है। उनको अपने परिवार के बारे में कोई जानकारी नहीं

है। युवती ने अपनी मां की गर्दन पर जले के निशान बताया। मां-बाप के नाम को भी वे भूल चुके हैं। जब वे लापता हुए थे तो बहन की 9 वर्ष और उसकी उम्र 6 साल थी।

मेरठ पुलिस ने पहुंचाए अनाथालय

नरेश पारस ने बताया कि दोनों बच्चे 2010 में ट्रेन में लावारिस हालात में मेरठ पुलिस को मिले थे। रेलवे स्टेशन पर वे बिछड़ गए। पुलिस को वे अपना सही पता भी नहीं बता सके तो पुलिस ने उन्हें अनाथालय भेज दिया। दोनों अलग-अलग अनाथ आश्रम में रहे थे। 9 साल की राखी को नोएडा के अनाथालय भेजा गया। वहीं 6 साल के बबलू को लखनऊ के सरकारी अनाथालय में शिफ्ट किया गया।

बच्चों से वीडियो कॉल

समय का पहिया चलता रहा। इसके बाद जब वे बड़े हुए तो बहन राखी नोएडा के शॉपिंग मॉल में जॉब करने लगी। और भाई बबलू उधर बेंगलुरू में काम करने लगा। दोनों से जब उन्होंने संपर्क किया तो इनके घर का पता लगाना बड़ा मुश्किल था।

नवीनतम स्मार्ट टीवी के साथ नए साल का जश्न मनाएं- 55त्न तक की छूट7

नरेश पारस ने मध्य प्रदेश में इन बच्चों की जानकारी ली। वहां इन नामों के बच्चे लापता नहीं मिले। ऐसे में उन्होंने आगरा गुमशुदा प्रकोष्ठ के अजय कुमार से संपर्क किया। आगरा में राखी और बबलू नामक लापता हुए बच्चों की जानकारी मांगी। अजय कुमार ने सभी थानों से जानकारी ली तो पता चला कि थाना जगदीशपुरा में यह दोनों बच्चे लापता हुए थे। पुलिस जब उनके घर पहुंची तो पता चला कि उनकी मां किराए पर रहती थीं। वह मकान खाली करके जा चुकी थीं। इसके बाद पुलिस ने खोजबीन की तो उसका पता शाहगंज के नगला खुशी में मिला। बच्चों के फोटो महिला को तथा महिला के फोटो बच्चों को दिखाए तो उन्होंने आपस में पहचान लिया।

वीडियो कॉल पर कराई बात

नरेश पारस और गुमशुदा का प्रकोष्ठ के अजय कुमार ने अपने मोबाइल से दोनों बच्चों को व्हाट्सएप पर वीडियो कॉल के माध्यम से कनेक्ट किया। बच्चों को देखते ही मां और नानी रोने लगीं। अपने बिछुड़े दोनों बच्चों को देखकर मां नीतू के आंसू थमने का नाम नहीं ले रहे थे। मां रोते हुए कहने लगी कि बिटिया तू अपने साथ भाई को ले गई थी तुम्हारी याद में दिन-रात तड़पती रहती हूं। हर वक़्त इंतज़ार था कि कोई मसीहा बनकर आए और तुम्हारा बारे में जानकारी दे।

संपादाक की कलम

अपेक्षाओं में दबी सपनों की आवाजें, इस माहौल को बदलने की दरकार

2023 में कोटा में करीब 28 छात्रों ने आत्महत्या की। यह आंकड़ा समाज के अपेक्षा-आधारित माहौल को बदलने की मांग करता है। कोचिंग संस्थानों का विनियमन किया जाना जरूरी है, लेकिन उतना ही जरूरी है अभिभावक और समाज की तरफ से पड़ने वाले दबाव को कम करना। राजस्थान का कोटा शहर मशहूर है अपने कोचिंग संस्थानों के लिए, जो जेईई और नीट जैसी प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं के लिए विद्यार्थियों को तैयार करते हैं। लेकिन यहां के एक परेशान करने वाले आंकड़े की गूंज 2023 में देश भर में सुनाई दी, जो युवा दिमागों पर शैक्षणिक दबाव के कष्टदायक असर की भी याद दिलाते हैं। सिर्फ 2023 में शहर में करीब 28 छात्रों ने आत्महत्या की, जो इसका प्रतीक है कि उच्च प्रतिस्पर्धी माहौल में युवाओं के सपने किस तरह अक्षम्य वास्तविकता से टकराते हैं। यह आंकड़ा कोचिंग संस्थानों की पारिस्थितिकी में निहित जटिलताओं को रेखांकित करता है और बताता है कि ये कैसे देश की शैक्षिक व्यवस्था में गुंथी हुई हैं। भारत में ज्यादातर 12वीं कक्षा के छात्रों की कहानी सिर्फ दो महत्वपूर्ण प्रवेश परीक्षाओं में सफलता की खोज तक सीमित है। विशिष्ट इंजीनियरिंग संस्थानों के लिए जेईई और प्रतिष्ठित मेडिकल कॉलेजों के लिए नीट परीक्षा। उम्मीदवारों की संख्या और उपलब्ध सीटों के बीच भारी असमानता, जो दस फीसदी से भी कम है, इन परीक्षाओं में प्रतिस्पर्धा को कई गुना बढ़ा देती है। इससे एक ऐसे माहौल को बढ़ावा भी मिलता है, जहां दबाव पनपता है और छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य भी प्रभावित होता है। पिछले कई वर्षों के आंकड़े बताते हैं कि कोटा के प्रेशर कुकर माहौल में छात्रों की आत्महत्या की घटनाओं में किस तरह वृद्धि हुई है। 2022 में 15, 2019 में 18 और 2018 में 20 छात्रों ने आत्महत्या की थी। इस उच्च जोखिम वाले परिदृश्य के बीच राज्य की भूमिका पर भी सवाल उठते हैं। अपेक्षाकृत कमजोर वर्ग के बच्चों को कोचिंग देने के लिए विभिन्न कोचिंग संस्थानों के साथ सहयोग अनजाने में इन पृथक केंद्रों के अस्तित्व और कथित जरूरत को मजबूत करता है, जिससे युवाओं के दिमाग पर तनाव और बढ़ता जाता है। नए वर्ष की शुरुआत हमें आत्मनिरीक्षण और पुनर्मूल्यांकन का अवसर दे रही है। कोचिंग संस्थानों का विनियमन किया जाना जरूरी है, लेकिन उतना ही जरूरी है अभिभावक और समाज की तरफ से पड़ने वाले दबाव को कम करना, जो राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के अनुसार भी छात्रों को आत्महत्या के लिए प्रेरित करने का सबसे बड़ा कारण है। %प्रत्येक बच्चा अद्वितीय है%, का मंत्र केवल बयानबाजी तक सीमित नहीं रहना चाहिए, इसे सामाजिक व्यवहार का आधार बनाने की जरूरत है। इसके लिए जरूरी है कि एक समावेशी शैक्षिक परिदृश्य का निर्माण हो, ताकि छात्रों पर बेवजह दबाव न हो। वर्ष 2024 की शुरुआत ऐसे शैक्षिक वातावरण को बनाने के संकल्प से होनी चाहिए, जिसमें विविध प्रतिभाओं को पनपने का अवसर मिल सके और हर बच्चा अपनी विशिष्टता के अनुसार कॅरिअर का चुनाव कर सके। यह महत्वपूर्ण क्षण एक परिवर्तनकारी यात्रा की शुरुआत का भी समय होना चाहिए, जिसमें शिक्षा कुछ प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं की संकीर्ण सीमाओं को पार करती हो, क्योंकि ऐसा होने पर ही शिक्षा अपने वास्तविक उद्देश्य में खरी उतर पाएगी।

यहीं बिकते हैं सर्वाधिक फीचर फोन...और बनी रहेगी मांग

एक बार फीचर फोन खरीदने के बाद इसे पांच से छह साल तक आसानी से चलाया जा सकता है। फीचर फोन को हैक किए जाने का खतरा कम होता है, और ये उपभोक्ता की निजता की रक्षा भी बेहतर ढंग से करते हैं। भारत सचमुच विचित्रताओं का देश है। जहां पूरी दुनिया में स्मार्टफोन की मांग लगातार बढ़ रही है, वहीं भारत में फीचर फोन अब भी उन लोगों की पहली पसंद हैं, जो महंगे स्मार्टफोन नहीं खरीद सकते। सिंगापुर, ताईवान और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों ने 2जी नेटवर्क को अलविदा कह दिया है, पर अपने यहां 2जी नेटवर्क के सहारे साधारण फीचर फोन कम कीमत, ज्यादा बैटरी लाइफ, संगीत सुनने की सुविधा व बेसिक इंटरनेट सेवा के साथ लोगों को ऑनलाइन जोड़ रहा है। फीचर फोन से तात्पर्य उन मोबाइल फोन से है, जिनका प्रयोग वॉयस कॉलिंग और टेक्स्ट मैसेज के लिए किया जाता है। इनमें बेसिक मल्टी मीडिया सुविधा भी होती है, जिससे ऑडियो-वीडियो सुविधाओं का आनंद उठाया जा सकता है। ये बहुत कम कीमत में उपलब्ध हैं। जबकि स्मार्टफोन इंटरनेट आधारित हैं, जो बात करने के अलावा, इंटरनेट की दुनिया में एप सुविधाओं के साथ असीमित विकल्प देते हैं। ये फीचर फोन के मुकाबले महंगे होते हैं और इनकी परिचालन कीमत भी महंगी होती है। वैसे भी देखा गया है कि शहरों में आजकल लोग दो फोन का इस्तेमाल कर रहे हैं-बात करने के लिए साधारण फीचर फोन और इंटरनेट इस्तेमाल करने के लिए स्मार्टफोन। स्टेटिस्टा की एक रिपोर्ट के अनुसार, 2023 में, भारत में फीचर फोन बाजार से उत्पन्न राजस्व आश्चर्यजनक रूप से 2.2 अरब अमेरिकी डॉलर होगा। यह दुनिया भर में सबसे ज्यादा होगा। साइबरमीडिया रिसर्च (सीएमआर) की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत के फीचर फोन बाजार में 2023 की दूसरी तिमाही में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई। रिपोर्ट में यह भी उल्लेख किया गया है कि 2जी फीचर फोन शिपमेंट की वृद्धि स्थिर रही, जबकि 4जी फीचर फोन शिपमेंट में तेज वृद्धि देखी गई। 4जी फीचर फोन शिपमेंट में सालाना आधार पर 108 फीसदी की महत्वपूर्ण वृद्धि दर्ज की गई। अपने यहां फीचर फोन की लोकप्रियता बरकरार रहने का बड़ा कारण इसका एक औसत भारतीय के लिए सस्ता होना है।

गीता जयंती विशेष- वर्तमान में भगवद् गीता की प्रासंगिकता

भगवद् गीता हमारे जीवन का कालजयी एवं शाश्वत सत्य है। सत्य का न तो कभी जन्म हुआ और न ही इसका अंत होता है; किंतु हम इस दिन को सूत्रों के रूप में दिए गए इस कालातीत ज्ञान पर विचार करने, इसे समझने और आत्मसात करने के एक अच्छे अवसर के रूप में लेते हैं। गीता जयंती, 5100 साल पहले अद्भुत ज्ञान, भगवद् गीता के प्रकट होने के उपलक्ष्य में मनाया जाने वाला एक विशेष उत्सव है। भगवद् गीता हमारे जीवन का कालजयी एवं शाश्वत सत्य है। सत्य का न तो कभी जन्म हुआ और न ही इसका अंत होता है, किंतु हम इस दिन को सूत्रों के रूप में दिए गए इस कालातीत ज्ञान पर विचार करने, इसे समझने और आत्मसात करने के एक अच्छे अवसर के रूप में लेते हैं। भौतिक जगत में डूबने वालों के लिए, भगवद् गीता के श्लोक, उस रस्सी के समान हैं जो आपको किनारे तक ले जाती है। इसलिए भगवद गीता को बार-बार पढ़ते रहें और स्मरण करते रहें। यह जान लें कि आप दिन के प्रत्येक क्षण में जिस ज्ञान को जी रहे हैं, वह भगवद गीता है। दुनिया में दो तरह के लोग हैं- एक तो वे लोग जो निष्क्रिय हैं और दूसरे वे जो आक्रामक हैं। जो लोग बहुत निष्क्रिय होते हैं वे किसी भी चीज में शामिल नहीं होते हैं और जो लोग बहुत आक्रामक होते हैं। वे जो चाहते हैं उसे प्राप्त करने के लिए कुछ भी कर सकते हैं। देर-सवेर दोनों के हाथ खाली ही मिलते हैं। तो फिर सही दृष्टिकोण क्या होना चाहिए? क्या हमें निष्क्रिय होना चाहिए या आक्रामक होना चाहिए? गीता दोनों में से किसी की भी वकालत नहीं करती। यह कहती है, व्यक्ति को %शांति के साथ गतिशीलता% रखनी चाहिए। यह एक ही समय में गतिशील और शांत रहने की शिक्षा देती है। वह शांति, जो सक्रिय है, वही किसी भी समस्या के प्रति सही दृष्टिकोण रखने में सहायक होगी। भगवद् गीता आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी कई युगों पहले थी।

मनुष्य बनने की योग्यता

योग्यता शब्द योग से आया है। जब अस्तित्व के साथ गहराई से मिलन होता है, तब आप वास्तव में एक मनुष्य बनने के योग्य होते हैं। किसी भी कार्य को करने के लिए, आपको इस कार्य के साथ एकीकृत होने की आवश्यकता है। आपको ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। आपको रोगों से मुक्त रहने की आवश्यकता है। आपको अपने आस-पास क्या हो रहा है, इसके विषय में जागरूक रहने की आवश्यकता है। योग हमारे भीतर गहरी शांति लाता है और कर्मयोग' गतिविधियों में गतिशीलता लाता है।

बिहार पर बयानबाजी और दयानिधि मारन

बिहार के उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने डीएमके पार्टी को सामाजिक न्याय की पार्टी बताते हुए बहुत मीठे स्वर में, मारन का नाम लिए बिना निंदा की। डीएमके सांसद दयानिधि मारन के शर्मनाक बयान पर बिहार के नेता उबल रहे हैं लेकिन आम बिहारी शांत है। मारन के विरोध में सामाजिक या युवा संगठनों में कोई गुस्सा नहीं है। बिहार खामोश है। जिन नेताओं के चलते बिहारियों को गाली सुननी पड़ती है, सिर्फ वे ही शोर मचा रहे हैं। आम बिहारी इसे अपनी नियति मान बैठा है। कभी महाराष्ट्र में शिवसेना और नव निर्माण सेना, तो कभी दिल्ली वाले, तो कभी तमिलनाडु के नेता, इनके अपमानजनक बोल, हिकारत भरी निगाहें और व्यवहार अब हमारे लिए नया नहीं है। बिहारी आहत होता है, लेकिन उबलता नहीं। वह इसका प्रतिकार अपनी प्रतिभा दिखा कर करता है। हां, ऐसे मामले में बिहारी राजनेताओं के बयान, पार्टी और चेहरा देखकर बदलते रहते हैं।

क्योंकि उन्हें बिहारी अस्मिता नहीं, अपनी राजनीति प्यारी है। याद आते हैं वो दिन जब शिवसेना एनडीए यानी भाजपा के गठबंधन का हिस्सा थी। उस समय मुंबई में बार-बार बिहारियों के साथ दुर्व्यवहार किये जाते थे। उनके ऑटो, खोमचे उलट दिए जाते थे। नौकरियों के लिए परीक्षा देने गए बच्चों को दौड़ा -दौड़ा कर पीटा जाता था, तब भाजपा नेताओं की क्या प्रतिक्रिया होती थी ? आज जैसे इंडि गठबंधन के नेता मारन प्रकरण पर बच-बचा कर, हकला-हकला कर बोल रहे हैं, तब भाजपा नेताओं की यही स्थिति होती थी। उनके मुंह से बोल नहीं फूटते थे। आज भले ही वे मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को इंडि गठबंधन से अलग होने की चुनौती दे रहे हों। उस समय राजद और एनडीए विरोधी पार्टियां जैसे कूद-कूद कर भाजपा और शिवसेना को कोसते नहीं थकती थीं, उसी तर्ज पर आज भाजपा और एनडीए के नेता कर रहे हैं। कोई अंतर है? सिर्फ विरोध करने वाले चेहरे बदलते रहते हैं लेकिन बिहार और बिहारियों की स्थिति नहीं बदलती !

क्यों? राजनीति का यह खेल आम बिहारी बखूबी समझता है। इसलिए वह तमाशबीन बना रहता है। वह जानता है कि अंदरखाने सब एक हैं। उन्हें सिर्फ अपनी राजनीति की चिंता है, कुर्सी की चिंता है, बिहार के विकास और बिहारी की चिंता सबसे निचले पायदान पर है। हद तो बिहार के उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने कर दी। उन्होंने डीएमके पार्टी को सामाजिक न्याय की पार्टी बताते हुए बहुत मीठे स्वर में, मारन का नाम लिए बिना निंदा की। अब उनको कौन समझाए की सामाजिक न्याय का मतलब किसी को नीचा दिखाना, उसे अपमानित करना या गाली देना नहीं होता ? सामाजिक न्याय मतलब हैसियत देखे बगैर सबके साथ समान व्यवहार और समान अवसर देना है। मगर यह भी सच है कि बिहार में %भूरा बाल साफ़ करो% का नारा भी सामाजिक न्याय का नारा माना गया था। ऐसी पार्टियां और ऐसा नारा लगानेवाले किसका भला करेंगे ? उसी तर्ज पर तो मारन भी बोल रहे हैं तो उसकी निंदा कैसे करेंगे ?

बिहार की स्थिति को देखकर मुज़फ़्फ़र रज़्मी का एक प्रसिद्ध शेर कौंध जाता है -

ये जब्र भी देखा है तारीख़ की नज़रों ने/लम्हों ने ख़ता की थी सदियों ने सज़ा पाई।

रज्मी साहब उसी यूपी के थे जिस यूपी के लोगों को आज डीएमके के सांसद और पूर्व केंद्रीय मंत्री अपमानित कर रहे हैं। बिहार के लोग अगर मजदूरी करने के लिए भी बाहर जाने को विवश हैं तो इसके लिए बिहार के अदूरदर्शी और सत्ता सुख भोगने की लालसा रखने वाले राजनेता जिम्मेवार हैं।

जरा नजर घुमा कर देखिये - बिहार के प्रथम मुख्यमंत्री श्रीकृष्ण सिंह के बाद बिहार में कितने बड़े उद्योग लगे? निराशा हाथ लगेगी। हमारी सरकारों ने, हमारे मुख्यमंत्रियों ने बिहार को रोजगार युक्त प्रदेश बनाने के लिए क्या किया? इस स्थिति के लिए हम बिहारी भी कम जिम्मेदार नहीं है। हमने वैसे ही नेताओं को अपना रहनुमा चुना। तो भुगतेगा कौन?

अच्छी पढ़ाई के लिए बिहार से बाहर जाओ

अच्छी नौकरी के लिए बाहर जाओ

अच्छे इलाज के लिए बाहर जाओ

अब मजदूरी के लिए भी बाहर जाओ।

यही है हमारा बिहार। यह गंभीर चिंतन का समय है। नहीं सुधरे तो आनेवाली पीढ़िया भी गाली सुनती रहेंगी और पिटती रहेंगी।

राजनीति के दूषित माहौल में वास्तविक अर्थ खोज रहे हैं शब्द

स्वतंत्रता, लोकतंत्र, फासिज्म सहित कई ऐसे शब्द हैं, जिनके प्रयोग ने उनका आशय ही बदल दिया है। जैसे यूक्रेन इस शताब्दी की सबसे बड़ी दबंगई से जूझ रहा है, तब पुतिन और उनके समर्थक, जेलेंस्की के पराक्रम को फासिज्म बताते हैं। इससे कोई मतलब नहीं कि इस संदर्भ में पुतिन के लिए फासिज्म शब्द ज्यादा उपयुक्त है। आज के समय में, जब अपने राजनीतिक विश्वास के समर्थन में बातें कही जाती हैं, और जब सुनियोजित साजिश के तहत बातें उघाड़ी और छिपाई जाती हैं, तब ऑरवेल के सुनहरे दिनों में लौटना सुखद होगा, जिनका गद्य आज भी लेखन की कसौटी है। अपने एक बहुपठित लेख में, ऑरवेल ने बताया था कि राजनीति किस तरह शब्दों को दूषित करती है, वह लिखते हैं, %फासिज्म का अर्थ घटते-घटते अब सिर्फ एक ऐसा शब्द रह गया है, जिसका आशय है अवांछित । लोकतंत्र, समाजवाद, स्वतंत्रता, देशभक्ति, आदि ऐसे शब्द हैं, जिनके कई-कई अर्थ है, लेकिन इन शब्दों को एक दूसरे की जगह पर नहीं रखा जा सकता। अब लोकतंत्र शब्द को ही ले लीजिए-सिर्फ यही नहीं कि इसकी कोई सर्वस्वीकृत परिभाषा नहीं है, बल्कि इसकी कोई एक परिभाषा तय करते ही चारों तरफ से इसका विरोध शुरू हो जाएगा। हालांकि तमाम लोग यह मानते हैं कि किसी देश को लोकतांत्रिक बताना वस्तुत- उसकी प्रशंसा करना है = इसका नतीजा यह है कि कोई देश चाहे लोकतांत्रिक हो या नहीं, उसके समर्थक उसे लोकतंत्र ही बताते हैं। उन्हें इसका डर भी सताता है कि अगर लोकतंत्र का कोई एक अर्थ तय कर दिया गया, तब वह अपने देश के लिए लोकतंत्र शब्द का इस्तेमाल नहीं कर पाएंगे। ऐसे शब्दों का इस्तेमाल जान-बूझकर बेईमानी के इरादे से किया जाता है।' मैंने उनके लेख, पॉलिटिक्स ऐंड इंग्लिश लैंग्वेज से यह लंबा पैराग्राफ उद्धृत किया, क्योंकि उन्होंने फासिज्म के पतन और उदारवादी, लोकतांत्रिक विश्व व्यवस्था के उदय के दौरान वर्ष 1946 में जो कहा था, वह राजनीतिक वितंडावाद के मौजूदा दौर में भी गहरे तौर पर याद रखने लायक है। स्थिति यह है कि अपनी सच्चाई साबित करने के लिए आज शब्दों का नए सिरे से इस्तेमाल किया जाता है, और हमें ऐसा लगता है कि जो हम सुन रहे हैं, वह महज वास्तविकता नहीं, बल्कि हमारे अस्तित्व से जुड़ा विवाद है। फासिज्म के उभार से संबंधित न सिर्फ बातें की जाती हैं, बल्कि यही हर दौर में विमर्श तय भी करता है। आज जब यूक्रेन इस शताब्दी की सबसे बड़ी दबंगई से जूझ रहा है, तब पुतिन और उनके समर्थक जेलेंस्की के पराक्रम को फासिज्म बताते हैं। इससे कोई मतलब नहीं कि इस संदर्भ में पुतिन के लिए फासिज्म शब्द ज्यादा उपयुक्त है, जिसका वास्तविक अर्थ है राष्ट्र की नियति पर ज्यादा जोर देना और इस प्रक्रिया में राष्ट्र को लगी चोट, उसका हुआ अपमान और राष्ट्र के गौरव की बात सुनियोजित ढंग से बार-बार उभारना। जब शब्द इतिहास की बाड़ेबंदी से बाहर निकलकर विभिन्न भूगोलों और विचारधाराओं में विचरण करते हैं, और फिर एक दूसरे समय की बाड़ेबंदी में रुककर गोला-बारूद की भूमिका निभाने लगते हैं, तब वे एक विवादास्पद वास्तविकता की बुनियाद बन जाते हैं। इन शब्दों से जो कहानियां बनती हैं, वे अच्छे और बुरे के बीच स्पष्ट विभाजक रेखा खींच राजनीति को नैतिक ड्रामा में बदल देती हैं। ऑरवेल ने और जिन तीन शब्दों- लोकतंत्र, स्वतंत्रता और देशभक्ति-का जिक्र किया, उनका ही उदाहरण ले लीजिए। इन शब्दों की सुस्पष्ट परिभाषा के बिना पहचान और राष्ट्रीय नियति के बारे में आज कुछ कहा ही नहीं जा सकता। लोकतंत्र का अर्थ सिर्फ वह नहीं है, जिस बारे में एक देश में रहने वाले लोग बताते हैं कि यह शासन की सर्वोत्तम प्रणाली है। लोकतंत्र के समर्थन में उनके बोलने के बावजूद इसकी सीमाओं और इसकी विशेषताओं के बारे में बहुत कुछ अनकहा रह जाता है। जब एक अधिनायकवादी अपने लोगों पर शासन करने को लोकतंत्र कहता है, तब वह झूठ बोलता है। विडंबना यह है कि अधिनायकवादी हमेशा ही यह झूठ बोलते हैं। ऑरवेल द्वारा उद्धृत किए एक दूसरे शब्द स्वतंत्रता को आज भी लगातार लोकतंत्र के अर्थ में इस्तेमाल किया जाता है। जिन्होंने स्वतंत्रता को संपूर्ण सत्य का दर्जा दिया हो, उस प्रगतिशील वर्ग की नैतिकता भी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और नस्लीय मुद्दों पर समझौते करती रही है। ताजातरीन सामाजिक तकनीकों ने अतीत की खुदाई के जरिये वर्तमान के पुनर्निर्माण को आसान कर दिया है; और समाज के प्रति व्यापक गुस्से की अनुमति देकर वे स्वतंत्रता को सशर्त बना देती हैं। जो तुम्हारे लिए स्वतंत्रता है, वह मेरे लिए गुलामी है। दूसरे शब्द भी इतनी ही ताकत से विमर्श को गति देते और उन्हें विभाजित करते हैं। मसलन, देशभक्ति उदारता का लक्षण नहीं है। और यह सवाल पूछना, कि देशभक्ति शब्द ही उदारवादियों को सतर्क क्यों कर देता है, वस्तुत- उन लोकतांत्रिक देशों के प्रश्नाकुल दिमागों को चुनौती देने जैसा है, जो तेजी से दक्षिणपंथी विचारधारा की ओर मुड़ रहे हैं। दक्षिणपंथी देशभक्ति को जितना जरूरी मानते हैं, उदारवादी उसका उतना ही विरोध करते हैं। प्रगतिशील राजनीति की सोच है कि राष्ट्रवाद की अत्यधिक खुराक वास्तविक आजादी को दबा देती है। क्या इसका मतलब यह है कि देशभक्ति को आधुनिकता-विरोधी मानकर खारिज करना राजनीति में तार्किकता को स्थान देना है? क्या इसका अर्थ यह है कि लोकप्रिय आवेग सांप्रदायिक होते हैं? यह ऐसा ही, जैसे प्रगतिशीलों की किताब में जो कुछ प्रतिबंधित है, दुनिया भर में फैले लोकतंत्रों में उसी को सबसे अधिक साझा किया जाता हो। शब्द और उसके उतार-चढ़ाव ही राजनीति में विमर्श बनाने-बिगाड़ने का काम करते हैं। विमर्श रचने वालों की अगंभीरता के कारण उनके शब्द ऐतिहासिक संदर्भों और सांस्कृतिक अवरोधों को तोड़ते हैं, और चुनावी राजनीति को उस राष्ट्र का जनमत सर्वेक्षण बना डालते हैं। इसका नतीजा अच्छा भी होता है और बुरा भी। यह शब्द चुनने के आपके कौशल और उसका इच्छित अर्थ निकालने की आपकी क्षमता पर निर्भर करता है। आज वही विजयी है, जो आज के अनुरूप शब्द चुन सकता है।

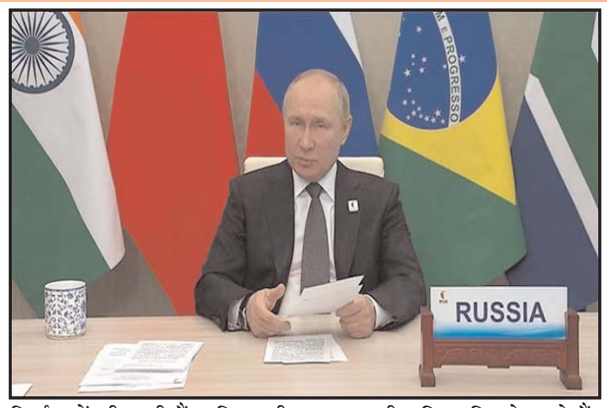

पिशाच हैं लोन देने वाले ऐप, जिंदगियां बचाने के लिए इन्हें मारना ही होगा

लोन ऐप के कारण कई लोगों ने आत्महत्या कर ली। भारत में बैंकों और दूसरे वैध वित्तीय संस्थानों से लोन लेने में मुश्किलों के कारण लोग डिजिटल लोन ऐप का शिकार होते हैं और फिर रीपेमेंट में देरी होते ही उनकी जिंदगी नरक होने लगती है। लोन ऐप पर पूरी तरह रोक लगानी ही होगी। सोशल मीडिया फिर से निशाने पर है, और यह सही भी है। भारत सरकार ने उन्हें धोखाधड़ी वाले डिजिटल लोन ऐप्स (डीएलए) के विज्ञापन दिखाने को लेकर चेतावनी दी है। लेकिन इन विज्ञापनों को दिखाने में भले ही सोशल मीडिया लापरवाह हो, असली अपराध तो ऑनलाइन लोन देने वालों की हैवानियत है। ये तेजी से बढ़ते प्लैटफॉर्म का फायदा उठाकर छोटे खुदरा कर्ज का जाल बिछा रहे हैं। डिजिटल उछाल का दशक-इस साल संसदीय समिति की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत में डिजिटल लोन 2012 से 2023 के बीच सालाना 39.5त्न बढ़कर 350 अरब डॉलर तक पहुंच गया है। इस वृद्धि का एक हिस्सा डिजिटल लोन ऐप्स (डीएलए) के कारण हुआ है। डीएलए के कारोबार का सही आकलन करना मुश्किल है क्योंकि इसका एक बड़ा हिस्सा अवैध है। आरबीआई ने जनवरी और फरवरी 2021 में दो महीने तक डिजिटल लोन ऐप्स का अध्ययन किया। उसने पाया कि 81 ऐप स्टोर पर 1,100 लोन ऐप उपलब्ध थे। इनमें से 600 अवैध थे। डराने-धमकाने का खेल- कंज्यूमर सर्वे और पुलिस जांच अवैध लोन ऐप की दुनिया की दो मेन फीचर्स की ओर इशारा करते हैं। अवैध लोन ऐप ग्राहकों को उसी कारण से आकर्षित करते हैं जिस कारण से इन्फॉर्मल फाइनैंसिंग हमेशा करता है- आसानी। जरूरतमंद लोगों को आसानी से लोन मिल जाता है। ब्याज दरें बैंकों की तुलना में कहीं अधिक होती हैं, लेकिन उसके बाद जो होता है वह डिजिटल वर्ल्ड के लिए बहुत खतरनाक है। आत्महत्या तक के मामले- ऐप फोन पर डाउनलोड किए जाते हैं। धोखाधड़ी करने वाले लोन ऐप अवैध रूप से लोन लेने वालों के फोन डेटा को कॉपी करते हैं। फिर उस डेटा का इस्तेमाल कर्जदारों को परेशान करने के लिए किया जाता है जब वे रीपेमेंट में देरी करते हैं। पुलिस जांच दिखाती है कि यह धोखाधड़ी कैसे होती है। उत्पीड़न का तो एक तरीका है लोन लेने वाले का फोटो बिगाड़कर उसे उसके कॉन्टैक्ट लिस्ट के लोगों को भेजना। इससे कई बार आत्महत्या तक हो चुकी है। नियम-कानून में पेच- आरबीआई का दायरा बैंकों, एनबीएफसी जैसे वित्तीय मध्यस्थों तक सीमित है। ये सब भी हमेशा निर्दोष नहीं होते हैं। 2022-23 में इनके खिलाफ 1,062 शिकायतें दर्ज हुई थीं, लेकिन अवैध लोन ऐप का मामला तो अलग ही स्तर का है। कुछ मामलों में जांच से पता चला है कि ऐप का मालिकाना हक हॉन्गकॉन्ग से संचालित चीनी कंपनियों के पास है। लोन ऐप के अपराध में मनी लॉन्ड्रिंग का एंगल भी है। इस कारण उनसे निपटने के लिए कई एजेंसियों को साथ काम करने की जरूरत पड़ती है। ...ताकि अपराधियों को मौका नहीं मिले- अप्रैल 2021 से जुलाई 2022 के बीच 2,500 से अधिक ऐप्स को प्ले स्टोर से हटा दिया गया। यह एक निरंतर प्रक्रिया है जिसे सार्वजनिक जागरूकता अभियानों, तेज पुलिसिया जांच और अपराधियों के खिलाफ त्वरित मुकदमे के जरिए साथ दिया जाना चाहिए। लेकिन भविष्य में ऐसी समस्या पैदा ही नहीं हो, इसके लिए जरूरी है कि वैध तरीकों से लोन लेने की प्रक्रिया आसान हो जाए। जब रेग्युलेटेड कंपनियां लोगों को लोन नहीं देती हैं तो अपराध को फलने-फूलने का मौका मिल जाता है।

शायरी

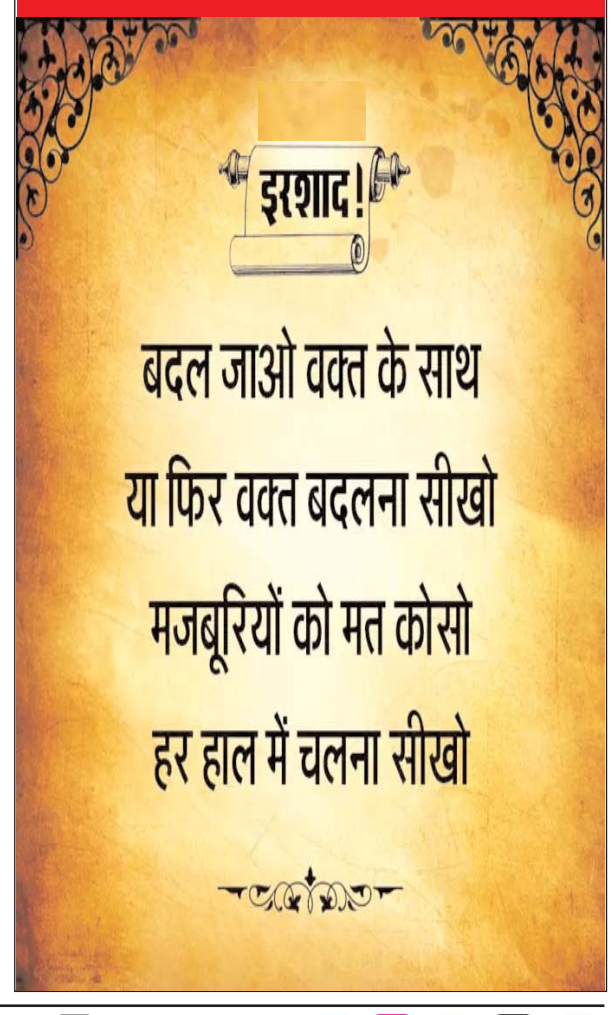

गुना में बस दुर्घटना के बाद मध्य प्रदेश मुख्यमंत्री डॉक्टर मोहन यादव के जिला अधिकारियों को सख्त निर्देश

❖ बगैर परमिट चल रहे वाहनों के लिए परिवहन विभाग के उच्चाधिकारियों की जिम्मेदारी होगी तय : मुख्यमंत्री डॉ यादव।

❖ सभी जिला कलेक्टर और पुलिस अधीक्षक रहें सतर्क सुनिश्चित करें कि गुना जैसी दुर्घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो।

❖ मध्य प्रदेश मुख्यमंत्री डॉ यादव ने गुना से लौटकर मुख्य सचिव को दिए निर्देश।

द,अचिवर टाइम्स से पप्पू उपाध्याय

मध्य प्रदेश। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने कहा है कि गुना हादसे में दोषियों के विरुद्ध सख्त कार्यवाही के लिए मुख्य सचिव को निर्देश दिए गए हैं। राज्य स्तर से सभी कलेक्टर्स और पुलिस अधीक्षकों को निर्देश दिए जा रहे हैं कि यदि उनके क्षेत्र में बगैर परमिट के वाहन चलते हैं तो सतर्कता बरती जाए और दोषियों के विरुद्ध कठोर कदम उठाएं जाएं परिवहन विभाग के उच्चाधिकारियों की भी जिम्मेदारी तय कर सख्त कार्यवाही की जाए। मुख्यमंत्री डॉ यादव गुना दुर्घटना के प्रभावितों से भेंट के बाद गुना से लौटकर मीडिया प्रतिनिधियों से चर्चा कर रहे थे। उल्लेखनीय है कि गुना हादसे के लिए दोषी आरटीओ गुना और सीएमओ गुना को निलंबित किया गया है। गुना हादसे के बाद समय पर फायर ब्रिगेड उपलब्ध न कराए जाने के कारण नगर पालिका अधिकारी के निलंबन का कदम उठाया गया है। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने कहा कि परिवहन विभाग के वरिष्ठ अधिकारियो का दायित्व निर्धारित करते हुए दोषियों के विरुद्ध कार्रवाई की जाएगी। ऐसी घटनाओं की पुनरावृति ना हो यह भी ध्यान रखा जाएगा। यह संवेदनशील विषय है। इस संबंध में राज्य सरकार ने सजगता से ऐसी दुर्घटनाओं पर अंकुश के लिए भी निर्देश दिए हैं। सभी जिम्मेदार लोगों के विरुद्ध राज्य सरकार आवश्यक रूप से सख्त कार्रवाई करेगी।

रात भर चली कटनी पुलिस की प्रभावी कॉम्बिंग गश्त

❖ एक साथ 215 से अधिक पुलिस अधिकारी/कर्मचारी उतरे सड़को पर

द,अचिवर टाइम्स से पप्पू उपाध्याय

कटनी। पुलिस अधीक्षक अभिजीत कुमार रंजन सहित अति0 पुलिस अधीक्षक, सभी एस0डी0ओ0पी0 एवं जिला पुलिस बल के पुलिस अधिकारी/कर्मचारी कॉम्बिंग गश्त में रहे मौजूद। देर रात्रि 11.00 बजे से सुबह 04.00 बजे तक लगातार जारी रही पुलिस की कार्यवाही। आधी रात को कटनी पुलिस की गुण्डा-बदमाशों के घरों पर औचक दस्तक महेज पाँच घण्टे के भीतर लिस्टेड 77 गुंडा, बदमाशों को किया चेक। जिले मे 72 वारंटी किये गिरफ्तार,18 स्थायी वारंटी, 54 गिरफ्तार वारंटियों की पुलिस ने की धरपकड़।

56 वाहनों की चैकिंग एवं 16 संदेही भी किये चेक

कटनी पुलिस अधीक्षक अभिजीत कुमार रंजन द्वारा जिले के सभी राजपत्रित अधिकारी एवं थाना प्रभारियों को रात्रि 11ः00 बजे से 04ः00 बजे तक ÷कांबिंग गस्त÷ करने हेतु निर्देशित किया गया है। कांबिंग गस्त के दौरान थाने में लंबित स्थाई/गिरफ्तारी वारंटियों की तमीली, आबकारी प्रकरण, गुंडा/निगरानी बदमाश की चेकिंग, खुले में शराब पीने वालों के विरुद्ध कार्यवाही, शराब पीकर वाहन चलाने वालों के विरुद्ध कार्यवाही, रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड, होटल ढाबा चेक कर कार्रवाई करने हेतु निर्देशित किया गया। इसी तारतम्य में कल रात को कटनी पुलिस द्वारा जिला स्तर पर कांबिंग गस्त की गई, जिसमें स्वयं पुलिस अधीक्षक अभिजीत कुमार रंजन, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, मनोज केडिया, समस्त एसडीओपी, समस्त पुलिस अमला रात भर सड़कों पर मौजूद रहे । कांबिंग गस्त का मुख्य उद्देश्य कई वर्षों से फरार चल रहे वारंट शुदा शातिर अपराधियों की गिरफ्तारी, लिस्टेड गुंडों बदमाशों का औचक चेकिंग रात्रि में सक्रिय अपराधियों की धरपकड़ करना है। इस कांबिंग गस्त में 18 स्थाई वारंट, 54 गिरफ्तारी वारंटियों की धरपकड़ की गई, 77 गुंडे व निगरानी बदमाश चेक करने के साथ ही 56 वाहनों व 16 संदेहियों को चेक किये गए । कांबिंग गस्त के दौरान जिले में सार्वजनिक स्थानों पर शराब पीने वाले एवं विक्रय करने वालों के विरुद्ध 19 प्रकरण दर्ज किए गए । व रात्रि में वाहन चलाते समय यातायात नियमों का पालन न करने पर 21 वाहनों के विरुद्ध चालानी कार्रवाई कर 24000 रुपए समान शुल्क वसूल किया गया। कांबिंग गस्त के दौरान थाना विजयराघवगढ़ में पशु क्रूरता निवारण अधिनियम के तहत् 01 प्रकरण में 04 आरोपी से 28 नग भैंस/पड़ा क़ीमती 05 लाख एवं 01 ट्रक क़ीमती 40 लाख कुल क़ीमती 45 लाख जप्त किया गया। आधी रात शहर की सड़कों पर निकले कटनी एस,पी,, शहर के संवेदनशील इलाकों का निरीक्षण कर परखी सुरक्षा व्यवस्था। कांबिंग गस्त के दौरान एसपी अभिजीत रंजन द्वारा थाना कुठला एवं बड़वारा पहुंचकर रात्रि गस्त में लगे बल को चेक कर रात्रि में आवारा, घुमंतू, असामाजिक तत्व एवं संदिग्ध लोगों पर सख्त कार्रवाई के दिए निर्देश।

एक नज़र

यात्रा को लेकर कांग्रेस ने की तैयारी बैठक

द अचीवर टाइम्स। सुशील अवस्थी

महमूदाबाद। उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अजय राय के नेतृत्व में यूपी जोड़ो यात्रा निकाली जा रही है, जो सहारनपुर से शुरू होकर लखनऊ में समाप्त होनी है। यह यात्रा आगामी 3 जनवरी को सीतापुर जिले में प्रवेश करेगी। यूपी जोड़ो यात्रा को सफल बनाने के लिए जिला अध्यक्ष उत्कर्ष अवस्थी की अध्यक्षता में मुख्यालय स्थित जिला कांग्रेस कमेटी कार्यालय पर तैयारी बैठक की गई जिसमें जिला सीतापुर के इंचार्ज पूर्व सांसद रवि वर्मा शामिल हुए तथा जिला/शहर कांग्रेस कमेटी के पदाधिकारीगण, ब्लाक/नगर अध्यक्षगण, सभी फ्रंटल/विभाग/प्रकोष्ठों के पदाधिकारीगण, सम्मानित एआईसीसी/पीसीसी सदस्य, पूर्व एमएलसी हरीश बाजपेई, पूर्व विधायक/महासचिव-यूपीसीसी राकेश राठौर की उपस्थिति रही। बैठक को संबोधित करते हुए पूर्व सांसद रवि वर्मा ने कहा कि यह यात्रा हम सबकी जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि यह यात्रा जनता को जगाने के लिए की जा रही है। जिस तरह से वर्तमान सरकार आम नागरिकों के अधिकारों पर धीरे-धीरे अतिक्रमण कर रही है उसके खिलाफ आम आदमी खड़ा हो सके और अपनी आवाज बुलंद कर सके। उन्होंने कहा कि कोई भी यात्रा जनता से जुड़ने का एक सशक्त माध्यम है और हमें हर हाल में इस यात्रा को सफल बनाना है। जिला अध्यक्ष उत्कर्ष अवस्थी ने अपने संबोधन में सभी पदाधिकारी व कार्यकर्ताओं से यूपी जोड़ो यात्रा को सीतापुर जनपद में सफल बनाने के लिए आवाहन किया। पूर्व एमएलसी हरीश बाजपेई ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि इस विपरीत समय में हम सबको मिलकर जन विरोधी ताकतों का डटकर सामना करना है। पूर्व अध्यक्ष विनीत दीक्षित ने कहा कि हमें विश्वास है की यूपी जोड़ो यात्रा सीतापुर में सबसे सफल यात्रा होगी। बैठक को शहर अध्यक्ष संतोष भार्गव सहित अनेकों पदाधिकारी ने संबोधित किया तथा यात्रा को सफल बनाने के लिए ठोस रणनीति बनाई गई। अभी हाल ही में प्रदेश नेतृत्व द्वारा पूर्व विधायक राकेश राठौर को प्रदेश महासचिव तथा सुभाष राजवंशी को प्रदेश सचिव बनाए जाने पर जिला कांग्रेस कमेटी द्वारा माला पहना कर उनका अभिनन्दन किया गया तथा उन्हें शुभकामनाएं दी गई। बैठक का संचालन शिशिर वाजपेई ने किया।

पी जी आई में नर्सिंग स्टाफ़ एसोसियेशन द्वारा प्रसाशनिक भवन के सामने आम सभा का आयोजन किया गया

संवादाता रघुनाथ सिंह द अचीवर टाइम्स

लखनऊ। दिन गुरुवार समय 1 से 3:00 PM को नर्सिंग स्टाफ एसोसिएशन द्वारा प्रशासनिक भवन के सामने प्लाजा पर आम सभा का आयोजन किया गया। आम सभा में नर्सिंग कैडर से लगभग 200 सदस्यों ने भाग लिया आमसभा में यूनियन के पदाधिकारियों और अन्य सीनियर्स द्वारा ट्रेड यूनियन एक्ट ,ह्यूम का महत्व और इतिहास, यूनियन के पिछले 1 वर्ष की उपलब्धियां और लंबित मुद्दों,नर्सिंग के कानूनी पहलू ,नर्सिंग अनुशासन व नर्सिंग देखभाल, यूनियन की एकता एवं उसका महत्व,यूनियन के पिछले एक वर्ष की आय और व्यय का संपूर्ण विवरण आदि के विषय में चर्चा हुई। कैडर की लंबित मांगों में से एक pay fixation और protection के कारण कैडर के सदस्यों को आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ रहा है जिसके लिए आम सभा में सर्वसम्मति से यह फैसला लिया गया यदि 10 दिनों के अंदर पीजीआई प्रशासन ने इसका समाधान नहीं किया तो नर्सिंग स्टॉफ ऐसोशिएशन आंदोलन के लिए बाध्य होगी,जिसकी सम्पूर्ण जिम्मेदारी संस्थान प्रशाशन की होगी।

प्री प्राइमरी से लेकर कक्षा 12 तक सभी बोर्डों के शिक्षण कार्य स्थगित रहेगें

द अचीवर टाइम्स अनुराग मेहरोत्रा

बाराबंकी। जिलाधिकारी के निर्देशानुसारअत्यधिक शीतलहर व ठंड के दृष्टिगत विद्यार्थियों की सुरक्षा एवं सुविधा हेतु जनपद में संचालित समस्त बोर्डों के प्री प्राइमरी से लेकर कक्षा 12 तक के सभी विद्यालयों में दिनांक 29 व 30 दिसम्बर 2023 को शिक्षण कार्य स्थगित रहेगा। परीक्षा पे चर्चा व बोर्ड परीक्षा आदि से संबंधित कार्य यथावत संपादित होंगे ।ब्लॉक स्तरीय समस्त नोडल एवं खंड शिक्षा अधिकारी उक्त का कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित कराएंगे।

पुलिस ने थाना क्षेत्र मे हिस्ट्रीशीटर अपराधियों को तलब कर दिए शख्त निर्देश

द अचीवर टाइम्स निशान्त शुक्ला

हरदोई। पाली थाना क्षेत्र में अपराधों पर अंकुश लगाये जाने के लिए प्रभारी निरीक्षक अरविन्द कुमार राय ने गुरुवार को क्षेत्र के अपने जमाने में रहे टॉप टेन व अन्य अपराधियों को बुलाकर उन्हें सख्त निर्देश दिए कि अपराध करने से दूरी बनाएं रखें साथ ही क्षेत्र के बाहर से यदि कोई अपराधी आता है तो इसकी सूचना तत्काल पुलिस को दें। यदि इसमें किसी हिस्ट्रीशीटर अपराधी ने लापरवाही बरती तो उसके खिलाफ विधिक कार्यवाही की जायेगी । थाना प्रभारी निरीक्षक अरविन्द कुमार राय ने बताया कि पूर्व में अपराध करने में शामिल रहे लगभग 40 हिस्ट्रीशीटर अपराधियों को थाना परिसर पर बुलाकर उन्हें भविष्य में अपराध न करने की सौगंध खिलाई गई। और साथ ही अपराध करने वालों पर अपनी नजर बनाए रखने की शख्त हिदायत देते हुए कहा गया कि पुलिस को समय रहते सूचित करें। जिससे अपराध व अपराधियों पर अंकुश लग सके। साथ ही पुराने हिस्ट्रीशीटर रहे अपराधियों को हिदायत दी गई कि यदि उनकी कहीं पर संलिप्तता पाई गई तो उनके खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्यवाही की जायेगी। वहीं छोटे स्तर के अपराधी इस कार्यवाही को देखकर उनके हाथ पांव फूल रहे हैं। पाली पुलिस क्षेत्र व नगर में इस समय अपनी चहल कदमी मचाए हुए हैं। उनकी इस चहल कदमी से चोर उचक्के भयभीत नजर आ रहे हैं। इस समय अपराधियों में भय व्याप्त है।

गुना की घटना के बाद कटनी पुलिस हुई सख्त

पन्ना तिराहे पर कुठला पुलिस एवं आरटीओ की संयुक्त कार्रवाई

द,अचिवर टाइम्स से पप्पू उपाध्याय

कटनी। पुलिस अधीक्षक अभिजीत कुमार रंजन के निर्देशन व श्रीमती ख्याति मिश्रा नगर पुलिस अधीक्षक के मार्गदर्शन पर थाना कुठला पुलिस द्वारा आरटीओ के साथ में पन्ना तिराहे पर संयुक्त रूप से वाहन चेकिंग की गई ज्ञातव्य हो कि विगत दिवस को जिला गुना में हुई बस दुर्घटना की वजह से प्रशासन हरकत में आया है और इसी के चलते आज पन्ना तिराहे पर आरटीओ अधिकारी विमलेश गुप्ता एवं थाना प्रभारी अभिषेक चौबे के द्वारा अपने अपने स्टाफ के साथ पन्ना तिराहे पर सघन वाहन चेकिंग की गई जिसमें कुल 30 बसों को चेक किया गया। चेकिंग के दौरान बसों में अलग-अलग कमियां पाई गई। जैसे ड्राइवर का वर्दी में ना होना, दस्तावेज की कमी, नंबर प्लेट सही ना होना, ओवरलोडिंग आदि। इन्हीं कमियों के कारण चालान किए गए, और 10000 रूपये सामान शुल्क वसूल किया गया वाहन चेकिंग के द्वारा ई रिक्शा चालकों को भी पर भी कार्रवाई करते हुए चार ई रिक्शा जप्त किए गए।

शीत लहर के चलते जिले स्कूलों में कल का अवकाश

आगरा। जिलाधिकारी भानू चंद्र गोस्वामी ने शीतलहर के कारण जिले के राजकीय, परिषदीय, अशासकीय सहायता प्राप्त माध्यमिक एवं बेसिक विद्यालय तथा समस्त बोडों से मान्यता प्राप्त माध्यमिक एवं परिषदीय विद्यालयों में कल का अवकाश घोषित किया जाता है। जिले के विद्यालयों द्वारा निर्देशों का कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित किया जाय।यह आदेश 28के लिए जारी किया गया।

रास्ते में बेकार पड़ी तैंतीस हजार की विद्युत लाइन को भाकियू अराजनीतिक ने हटाने की मांग

द अचीवर टाइम्स। संवाददाता

हापुड़। भारतीय किसान यूनियन अराजनीतिक ने गुरुवार को बिजली अफसरो को ज्ञापन सौपते हुए रास्तों में बेकार पडी लाइन को हटाने की मांग की है जो विद्युत विभाग द्वारा तैतीस हजार की लाइन रास्ते को प्रभावित कर रही है कि लाइने जो प्रयोग में नहीं है। को रास्ते से हटाने की मांग की है। किसान नेताओं ने बताया कि मोदीनगर रोड बिजली घर से प्रीत- विहार बिजली घर को विद्युत सप्लाई करने कोलिए 33 हजार राउन्ड पोल की लाइन बनाई गई थी जो ब्रहमा देवी स्कूल के बराबर से प्रीत विहार रेलवे पुल तक जाती है। प्रीत विहार को आनन्द विहार बिजली घर से सप्लाई दी गई है जिसके कारण उक्त लाइन प्रयोग में नहीं है और बीच-बीच में लाईन के राउन्ड पोल जर्जर गिर गये है कुछ खड़े है जो छोईया पर पुल निमार्न व रास्ते में बाधित है शेष जर्जर प्रयोग में न होने वाली लाइन को हटवाने की मांग है। इस अवसर पर राजेन्द्र गुर्जर, सुन्दर आर्य, अतुल त्यागी शीलू त्यागी विजय पाल राजन राजवीर सिंह भाटी नगर अध्यक्ष भारतीय किसान यूनियन (अ) आदि लोग मौजूद रहे।

हत्या के प्रयास मामले में फरार आरोपी गिरफ्तार, भेजे जेल

संवाददाता

हापुड़। सिटी कोतवाली पुलिस ने हत्या के प्रयास मामले में फरार आरोपी ग्राम असौड़ा निवासी सुहेल व चांद पुत्र आस मौहम्मद को मुखविर की सूचना पर बुलंदशहर रोड स्थित फ्लाई ओवर के पास से गिरफ्तार किया है। मिली जानकारी के अनुसार मौ0 मजीद पुरा निवासी इफ्तेखार ने अपनी पुत्री अमरीन का निकाह आरोपी शहजाद के साथ मुस्लिम रीति रिवाज के साथ किया था। शिकायतकर्ता इफ्तेखार ने बताया कि मेरी बेटी व मेरे दामाद के घरेलू बातों को लेकर कहा सुनी हो गई थी जिसके कारण मैं अपनी बेटी अमरीन को अपने घर ले आया। वर्ष 2023 में 18 सितंबर को मेरे बेटे असद व आदिल को फोन करके मेरे दामाद शहजाद व उसके भाई सुहेल व चांद ने मजीदपूरा बुलाया। जब मेरे दोनों पुत्र असद व आदिल मजीदपुरे पर पहुँचे तो तीनों आरोपियों व एक अज्ञात व्यक्ति ने मेरे दोनों बेटे असद व आदिल को देख कर गाली गलोच करने लगे और जान से मारने की नीयत से शरीर में जगह-जगह धारदार हथियार से वार कर दिए जिससे मेरा बेटा आदिल बुरी तरह घायल होकर अधमरा हो गया व मेरे लड़के असद को भी बुरी तरह पीटा मेरे लड़को ने शोर मचाया तो काफी लोग आगये जिन्हें देख चारो लोग फिर जान से मारने की धमकी देते हुए मौके के भाग गये घायल आदिल को अस्पताल में भर्ती कराया।

थाना प्रभारी निरीक्षक नीरज कुमार ने बताया कि इफ्तेखार की तहरीर पर तीन लोगों पर धारा 323, 307, 504, 506, 34 में मुकदम्मा दर्ज किया गया था। बृहस्पतिवार को कोतवाली पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली की आरोपी बुलंदशहर रोड स्थित फ्लाई ओवर के पास से भागने की फिराक में हैं। तत्कल जदीद चौकी प्रभारी उपनिरीक्षक प्रवीन कुमार व सिपाही प्रदीप कुमार और सिपाही अमित कुमार मौके पर पहुंचे और वांछित अभियुक्तगण सुहेल व चांद पुत्र आस मौहम्मद को घेराबंदी कर गिरफ्तार कर लिया। दोनो आरोपियों को पुलिस ने जेल भेज दिया है।

अयोध्या सांसद लल्लू सिंह के पुत्र भाजपा नेता/कबड्डी संघ के प्रदेश अध्यक्ष विकास सिंह के नेतृत्व में हुई तैयारी बैठक

अयोध्या। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रस्तावित जनसभा व रोड शो को लेकर बुधवार को भाजपा अयोध्या महानगर कार्यसमिति सदस्य/प्रदेश अध्यक्ष कबड्डी विकास सिंह ने पुरषोत्तम नगर, कर्पूरी ठाकुर, कृष्णा नगर और शिव नगर वार्ड में भाजपा के प्रमुख कार्यकर्ताओं के साथ बैठक की। विकास सिंह ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सरकार अयोध्या के समग्र विकास को संकल्पित है उसी क्रम में प्रस्तावित तिथि 30 दिसंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा अयोध्या रेलवे स्टेशन व मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम एयरपोर्ट, वन्दे भारत एक्सप्रेस, अमृत भारत एक्सप्रेस और अन्य योजनाओं का उद्घाटन होगा।

139 वे स्थापना दिवस पर कांग्रेसियों ने किया पार्टी का ध्वजारोहण

भाजपा का कांग्रेस मुक्त भारत का सपना कभी पूरा नहीं होगा 2024 में बनेगी इंडिया एलायंस की पूर्ण बहुमत से सरकार - कांग्रेस

द अचीवर टाइम्स

हापुड़। दिन गुरुवार को कांग्रेस जन नगर पालिका परिषद स्थित गांधी पार्क में एकत्रित हुए। जहां कांग्रेस जनों ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी का 139 वाँ स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर शहर कांग्रेस अध्यक्ष अभिषेक गोयल ने पार्टी का झंडा फहराया और सभी को कांग्रेस के स्थापना दिवस की शुभकामनाएं भेंट की। शहर कांग्रेस अध्यक्ष अभिषेक गोयल ने कहा कि आज पार्टी की स्थापना को 138 साल पूरे हो चुके हैं। भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की स्थापना 72 प्रतिनिधियों की उपस्थिति के साथ 28 दिसम्बर 1885 को मुम्बई के गोकुल दास तेजपाल संस्कृत महाविद्यालय में हुई थी। पार्टी के संस्थापक महासचिव (जनरल सेक्रेटरी) ए ओ ह्यूम थे, जिन्होंने कलकत्ते के व्योमेश चन्द्र बनर्जी को अध्यक्ष नियुक्त किया था। काँग्रेस में स्वराज का लक्ष्य सबसे पहले बाल गंगाधर तिलक ने अपनाया था। पूर्व शहर अध्यक्ष दिनेश चंद्र शर्मा ने कहा कि 1915 में गाँधी जी के भारत आगमन के साथ काँग्रेस में बहुत बड़ा बदलाव आया। चम्पारन एवं खेड़ा में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को जन समर्थन से अपनी पहली सफलता मिली। 1919 में जलियाँवाला बाग हत्याकांड के पश्चात गांधी जी काँग्रेस के महासचिव बने। उनके मार्गदर्शन में काँग्रेस कुलीन वर्गीय संस्था से बदलकर एक जनसमुदाय संस्था बन गयी। तत्पश्चात् राष्ट्रीय नेताओं की एक नयी पीढ़ी आयी। जिसमें सरदार वल्लभभाई पटेल, जवाहरलाल नेहरू, डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद, महादेव देसाई एवं सुभाष चंद्र बोस आदि शामिल थे। पीसीसी सदस्य अरविंद शर्मा ने कहा कि भाजपा का कांग्रेस मुक्त भारत का सपना कभी पूरा नहीं होगा, 2024 में बनेगी इंडिया एलायंस की पूर्ण बहुमत से सरकार। 14 जनवरी से देश में शुरू हो रही राहुल गांधी की भारत न्याय यात्रा देश में बहुत बड़ा परिवर्तन लाने जा रही हैं। पार्टी का स्थापना दिवस मनाने वालो में रघुवीर सिंह एडवोकेट, डॉक्टर वीसी शर्मा, सभासद सुशील शास्त्री, डॉक्टर आशाराम शर्मा, वाईके शर्मा, ब्लॉक अध्यक्ष जकरिया मनसबी, आईसी शर्मा, रघुवर गौतम, गौरव गर्ग, अमित सैनी, विक्की शर्मा, हरि प्रकाश यादव, हृदय प्रकाश, मुकीम खान,देवेंद्र कुमार, मैनुद्दीन आरिमा, सावन चौधरी, सौरभ चौधरी, जितेंद्र अग्रवाल, भरतलाल शर्मा, सुबोध शास्त्री, सविता गौतम, कुसुमलता, चरण सिंह, जाहिद हुसैन, अनूप कर्दम, यश कुमार, शिवम आदि लोग शामिल रहे. !

साहिबजादों को शहीदी दिवस पर अर्पित की गयी श्रद्धांजलि

द अचीवर टाइम्स संवाददाता- सुशील अवस्थी

महमूदाबाद, सीतापुर । सिखों के दसवें और अंतिम गुरु, गुरु गोविंद सिंह के साहिबजादों के शहीदी दिवस पर सेठ रामगुलाम पटेल मेमोरियल इंटर कॉलेजमे में स्मरण व नमन करते हुए विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर गुरुद्वारा कमेटी महमूदाबाद के प्रबंधक सरदार जगजीत सिंह, सरदार यशपाल सिंह ,सरदार सतनाम सिंह ,सरदार विक्रमजीत सिंहऔर सरदार लखविंदर सिंह , ट्रस्ट के वरिष्ठ सदस्य एवम कोषाध्यक्ष डॉक्टर अखिलेश कुमार , राजेंद्र कौल , राजेश कुमार सिंह चौहान,उपाध्यक्ष नरेश चंद्र का आगमन हुआ। कोषाध्यक्ष डॉक्टर अखिलेश कुमार ने बताया कि गुरु गोविंद सिंह मुगलों के साथ लड़ाई में शहीद हुए उन्होंने अपना पूरा जीवन लोगों की सेवा और सच्चाई के मार्ग पर चलते हुए व्यतीत किया वह सिखों के दसवें और अंतिम गुरु थे। वरिष्ठ सदस्य राजेंद्र कौल ने कहा -कि गुरु गोविंद सिंह मुगलों के जुल्म के सामने कभी भी घुटने नहीं टेके और खालसा पंथ की स्थापना वे बहुत ही शौर्य साहस, पराक्रम और वीरता के प्रतीक थे।

थानगांव की बजाय चल रहा गौरा गाँव मे बिना मान्यता प्राप्त मदरसा

द अचीवर टाइम्स संवाददाता- सुशील अवस्थी

महमूदाबाद-सीतापुर। जनपद सीतापुर के महमूदाबाद तहसील क्षेत्र की विकास खण्ड रामपुर मथुरा में बिना मान्यता प्राप्त के चल रहे मदरसा में हिंदू बच्चे पढ़ रहे है, यह आश्चर्यजनक मामला ब्लॉक रामपुर मथुरा की ग्राम पंचायत गौरा की ग्राम विसेसर का है। विदित हो कि इस मदरसे का रजिस्ट्रेशन ग्राम दसवांनगर, थानगांव में मदरसा वहीदुल इस्लाम के नाम से पंजीकृत है, और इसके मालिक वहादत अली बताए जाते है। जबकि एम वी न्यू आदर्श पब्लिक एकेडमी के नाम से यह मदरसा ग्राम पंचायत गौरा की ग्राम विशेसर में संचालित किया जा रहा है। इसके मालिक इसरार बताए जाते है। प्राप्त जानकारी के अनुसार इस स्कूल के विरुद्ध बीएसए सीतापुर द्वारा एक नोटिस भी जारी की गई है, जो उपजिलाधिकारी महमूदाबाद को संबोधित करते हुए प्रकरण में अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी सीतापुर को आवश्यक कार्यवाही करने हेतु भी प्रेषित किया गया है, इसके अतिरिक्त रामपुर मथुरा ब्लॉक के एबीएसए नवीन पटेल द्वारा भी न्यू आदर्श पब्लिक स्कूल ग्राम सभा गौरा की ग्राम विशेसर के प्रबंधक को भी नोटिस जारी की गई है, बताया जाता है कि स्कूल को नोटिस दिए जाने के उपरांत अभी भी मदरसा संचालित हो रहा है। विदित हो कि उत्तर प्रदेश सरकार के निर्देशानुसार बीएसए सीतापुर द्वारा गहनता से निरीक्षण करके अवैध रूप से संचालित विद्यालयों के विरुद्ध उनको बन्द कराने हेतु आदेश जारी कर रखा है, फिर भी अधिकारियों की आंखों में धूल झोंक कर मदरसा निरंतर चल रहा है। बताया जाता है कि इस संबंध में वहां के बजरंग दल कार्यकर्ताओं ने डीएम सीतापुर से शिकायत की है, सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार सेउता विधायक ज्ञान तिवारी के लेटरपैड पर एक शिकायत इस मदरसा के विरुद्ध कार्यवाही करने हेतु एसडीएम महमूदाबाद को भी गत दिनों दिया जा चुका है। बताया जाता है कि इस संबंध में मोहम्मद इसरार द्वारा नोटिस का जवाब भी शिक्षा विभाग में दाखिल किया जा चुका है। सूत्र बताते है कि जिस स्कूल को चलाया जा रहा है वह मदरसे का शार्ट फॉर्म नाम एम0 वी0 न्यू आदर्श पब्लिक एकेडमी है। हालांकि सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार थानगांव निवासी वहीदुल इस्लाम के नाम से रजिस्टर्ड यह मदरसा पूर्व में थाना थानगांव के दसवांनगर में मदरसा वहादत अली संचालित करता था, कुछ जानकार सूत्रों का कहना है कि वहादत अली से मोहम्मद इसरार ने मदरसे का रजिस्ट्रेशन ही खरीद लिया था और उसी रजिस्ट्रेशन का प्रयोग करके रामपुर मथुरा ब्लॉक की ग्राम पंचायत गौरा ग्राम विशेसर में अनाधिकृत रूप से चलाया जा रहा है। गौरतलब हो कि जिस स्थान पर मदरसा चलाने का रजिस्ट्रेशन हो उसी स्थान पर ही मदरसा संचालित होना चाहिए और रजिस्ट्रेशन ट्रांसफर हो जाने के बाद ही वह कही चलाया जा सकता है, किन्तु यहां पर स्थिति बिल्कुल इसके विपरीत है। हालांकि मदरसे में हिन्दू बच्चों को पढ़ाये जाने को लेकर भी कौतूहल का विषय बना हुआ है और माह जुलाई 2023 के पूर्व से चल रहे इस प्रकरण पर सिर्फ नोटिसों की अभी तक आवाजाही जारी रही है, लेकिन अभी तक कोई ठोस कार्यवाही किसी अधिकारी ने करना मुनासिब नही समझा है। इस प्रकरण के संदर्भ में थानगांव के वहादत अली से जब बात की गई तो उन्होंने बताया कि हम जब जमीन नही खरीद पाए तब अपना मदरसा ग्राम विशेसर निवासी इसरार को बिना कोई पैसे लिए चलाने के लिए दे दिया था, उन्होंने यह भी कहा कि हम बाहर थे अभी अधिकृत रूप से मदरसे का ट्रांसफर नही हो पाया है हम बाहर थे अब आये है तो ट्रांसफर की कार्यवाही करेंगे। उधर जब विशेसर निवासी इसरार के पुत्र जिनको मदरसे का प्रिंसपल बताया जाता है उनसे जब बात की गई तो उन्होंने बताया कि मदरसे के पंजीकरण का ट्रांसफर हो चुका है जिसके उनके पास सबूत है। इस संबंध में जब खण्ड शिक्षा अधिकारी रामपुर मथुरा से फोन पर वार्ता की गई तो उन्होंने बताया कि मामला अब मदरसे का है तो उस मामले में हमारे विभाग से कोई कार्यवाही नही हो सकती है, आवश्यक कार्यवाही करने के लिए ज़िला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी सीतापुर को पत्र ज़िला बेसिक शिक्षा अधिकारी द्वारा भेजा जा चुका है। हलांकि सरकार का स्पष्ट आदेश है कि बिना मान्यता प्राप्त कोई भी विद्यालय या मदरसा नही चलाया जा सकता है। उक्त मदरसे के सम्बंध में जब अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी से बात की गई तो उन्होंने रजिस्ट्रेशन दूसरे के नाम ट्रांसफर करवाकर मदरसा किसी अन्य जगह चलाया जा सकता है कि नही इसके बारे में कुछ बताया ही नही और यह भी नही बताया कि रजिस्ट्रेशन ट्रांसफर करने का नियम कानून है कि नही है। उन्होंने सिर्फ यह बताया कि वह मदरसा मान्यता प्राप्त है। असल हकीकत क्या है यह जांच का बिन्दु है, अब इस पर जांच कौन करेगा, अल्पसंख्यक विभाग, बेसिक शिक्षा विभाग या फिर कोई प्रशासनिक अधिकारी यह रहस्य बना हुआ है।

भारत माता अभिनंदन संगठन जिला मेरठ इकाई द्वारा एक शाम बलिदानियो के नाम विराट काव्य संध्या आयोजित

❖ बलिदानी वीरों की रज से भारत की माटी चंदन है- अशोक गोयल, कवि।

संवाददाता

हापुड़। भारत माता अभिनंदन जिला मेरठ इकाई द्वारा ÷बाल बलिदान दिवस÷ सिक्ख गुरु गोविंद सिंह के पुत्रों की शहादत को नमन करते हुए गूगलमीट पर आनलाईन काव्य गोष्ठी का आयोजन किया ।कार्यक्रम की आयोजक कवयित्री उषा रानी रही। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ कवि एवं साहित्यकार कवि अशोक गोयल ने की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वरिष्ठ कवि चंद्रप्रकाश गुप्त चंद्र गुजरात रहे। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में रितु गर्ग सिलीगुड़ी व कवयित्री बीना गोयल रहे कार्यक्रम का शुभारम्भ वरिष्ठ कवयित्री बीना गोयल ने मधुर कंठ से सरस्वती वंदना के द्वारा किया।। इसके बाद वरिष्ठ कवि रविन्द्र पाल %रसिक% ने स्वागत गीत के द्वारा सभी साहित्यकारों का स्वागत कर मन मोह लिया । वरिष्ठ कवि अशोक गोयल ने सभी साहित्यकारों को शुभकामनाएं संदेश दिया व बाल बलिदान दिवस पर एक प्रेरणात्मक संदेश के साथ बहुत ही सुंदर व दिल को छूने वाली रचना को पढ़कर संपूर्ण पटल को झखझोर दिया इसके पश्चात वरिष्ठ साहित्यकार रामनिवास तिवारी, प्रीतम कुमार झा,डा0चंद्रकला भागीरथी,माला सिंह,कवि लाला राम, अन्नपूर्णा मालवीय, नंदिनी रस्तोगी, तरुण रस्तोगी,डा0 मुक्ति शर्मा आदि कवियों ने उत्कृष्ट काव्य पाठ कर सबका मन मोह लिया। बाल बलिदान दिवस का आयोजन उषा रानी मेरठ ने किया। उषा का संचालन काबिले तारीफ था । कार्यक्रम की अंत में वरिष्ठ कवि एवं साहित्यकार अशोक गोयल आमंत्रित सभी कवि व अतिथियों का आभार प्रकट किया।

एक नज़र

घर के बाहर आग ताप रहे अधेड़ को बाँके से उतारा मौत के घाट गांव में सनसनी

द अचीवर टाइम्स निशान्त शुक्ला बिलग्राम/ हरदोई।

बिलग्राम कोतवाली क्षेत्र के गांव नूरपुर में बाके से हमला कर अधेड़ दलित की हत्या कर दी गई। इस वारदात से गांव में सनसनी फैल गई।मौके पर पुलिस विभाग के आला अधिकारियों की मौजूदगी में शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया।वहीं इस दुर्दात घटना के बाद गांव में सनसनी फैल गई व मृतक के घर में कोहराम मच गया।मौके की नजाकत देखते हुए गांव में पुलिस बल तैनात कर दिया गया।वहीं आरोपित मौके से फरार हो गया।

जानकारी के मुताबिक गुरुवार शाम करीब 5ः30 बजे सालिगराम निवासी ग्राम नूरपुर थाना बिलग्राम अपने घर के बाहर आग ताप रहा था। साथ में छोटे-छोटे बच्चे आसपास बैठे हुए थे। तभी गांव का गुड्डू राठौर मौके पर पहुंच गया और जब तक सालिग राम कुछसमझ पाता उसने फरसे से चेहरे पर हमला बोल दिया जिससे सालिगराम का जबड़ा दो भागों में कट गया और मौके पर ही उसकी मौत हो गई। हत्या करने के बाद गुड्डू राठौर मौके पर से फरार हो गया। हत्या की सूचना पिता जगन्नाथ और भाई बालेंद्र जलेंद्र और रामनरेश को मिली। सभी जब तक घर से पहुँचे तब तक मौत हो चुकी थी। सूचना पुलिस को दी गई मौके पर एडिशनल एसपी नपेंद्र सिंह व सीओ सत्येंद्र सिंह और कोतवाल नारायण कुशवाहा पुलिस बल के साथ गांव पहुंचे। शव को कब्जे में लिया है। एडिशनल एसपी ने बताया की हत्या आरोपित हत्या करने के तुरंत बाद फरार हो गया है जिसकी तलाश की जा रही है।मौके पर जो जानकारी मिली उसके अनुसार जानवरो के खेत मे जाने को लेकर दोनों पक्षों में विवाद हुआ था।सालिगराम के पिता जगन्नाथ में बताया कि करीब 8 दिन पहले खेत में गुड्डू राठौर के जानवर घुस जाते थे और फसल खराब कर रहे थे। जिसको लेकर सालिगराम ने उलाहना दिया था।तब कहासुनी हो गयी है। तब यह धमकी दी थी कि की भाग जाओ वरना जिंदा नहीं बचोगे। लेकिन उन्हें इस बात का अंदेशा नहीं था की जरा सी बात पर गुड्डू राठौर उसकी हत्या कर देगा।

जल जीवन मिशन के अंतर्गत सूरतगंज में हुआ एलईडी वैनों का शुभारंभ

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

बाराबंकी। राज्य पेयजल स्वच्छता मिशन नमामि गंगे तथा जल आपूर्ति विभाग उत्तर प्रदेश शासन द्वारा जल जीवन मिशन के अंतर्गत बाराबंकी के विकास खंड सूरतगंज में एलईडी गाड़ियों का का शुभारंभ किया गया जिसमें उपस्थित ब्लॉक के खंड विकास अधिकारी प्रीति वर्मा , सहायक खंड विकास अधिकारी ऋषि पाल, ग्राम पंचायत अधिकारी अजहर और ब्लॉक के ऑफिस स्टाफ, आदि लोग उपस्थित थे, जिला परियोजना समन्वयक सोनू सैनी, सहायक जिला परियोजना समन्वयक मनोज सैनी, सुरेश मौर्य, विनय सिंह विंग्स की टीम उपस्थित थी , खंड विकास अधिकारी और सहायक खंड विकास अधिकारी द्वारा हरी झंडी दिखाकर एलईडी वैन टीम को ग्राम पंचायत में रवाना किया गया ।

ज़िलाधिकारी ने जन सुनवाई में आए वृद्ध लोगों को कम्बल दिलवाए, फिर सुनी समस्या

द अचीवर टाइम्स अनुरागमेहरोत्रा बाराबंकी।

ज़िलाधिकारी सत्येंद्र कुमार नित्य की भांति आज भी कलेक्ट्रेट स्थित अपने कार्यालय में जन सुनवाई के दौरान आए हुए लोगों की समस्याओं को सुन रहे थे कि उन्होंने देखा कि एक वृद्ध पुरुष नान्हू, पुत्र लखई, निवासी, सहायपुर, बबुरी इस ठंड में ठिठुरते हुए आए हैं। ज़िलाधिकारी ने तत्काल पहले उन्हें कम्बल दिलवाया। ज़िलाधिकारी के निर्देश पर तत्काल बुजुर्ग को एक कम्बल ओढ़ाया गया। उसके बाद उन्होंने उन बुजुर्ग से उनकी समस्या के बारे में पूछा तो बताया कि वो मुकदमे की पेशी पर आए हैं। ज़िलाधिकारी ने उनके मुक़दमे की स्थिति का संज्ञान लेते हुए सम्बंधित को निर्देश दिए कि उक्त मुक़दमे का नियमानुसार शीघ्र निस्तारण सुनिश्चित किया जाए। इसी तरह एक वृद्ध महिला श्रीमती लखाना, पत्नी बाबूलाल, ग्राम खजुरी, तहसील नवाबगंज भी जब ज़िलाधिकारी कार्यालय आई तो सबसे पहले ज़िलाधिकारी ने उन्हें कम्बल उढवाया ताकि सर्दी से बचाव हो सके। इसके बाद उनकी समस्या सुनी और सम्बंधित को तत्काल निस्तारण के निर्देश दिए ।

मोदी के अभिनंदन के लिए जनता में गजब का उत्साह : अवनीश सिंह

जिले से 80 हजार लोग अयोध्या रैली में होंगे शामिल:अवनीश सिंह

❖ छोटे बड़े हजारों वाहन व भोजन पानी की समुचित व्यवस्था।

द अचीवर टाइम्स अनुराग मेहरोत्रा

बाराबंकी। एमएलसी व जिला प्रभारी अवनीश सिंह पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी की अयोध्या में शनिवार को होने वाली रैली को लेकर जिले में गजब का उत्साह है।समर्थको की भारी संख्या को रैली स्थल पर ले जाने के लिए भाजपा ने एक हजार से अधिक बड़ी बसें तथा हजारों चौपहिया वाहनों की व्यवस्था की है।जिला प्रभारी गुरुवार को भाजपा कार्यालय में आयोजित प्रेस वार्ता में बोल रहे थे।उन्होंने कहा कि राम देश के मर्यादा पुरुषोत्तम है।राष्ट्रीय एकता और स्वाभिमान के प्रतीक हैं।पांच सौ साल से अधिक के संघर्ष के बाद रामलला अपने विराट गर्भ गृह में विराजने वाले है।इसका श्रेय प्रधानमंत्री मोदी के प्रयासों को जाता है। प्रधानमंत्री मोदी हवाई अड्डे और पुनर्निर्मित भव्य रेलवे स्टेशन के लोकार्पण के लिए शनिवार को अयोध्या आ रहे हैं।उन्होंने कहा कि करीब 80 हजार से अधिक की जनता मोदी का अभिनंदन करने अयोध्या जायेगी।एक प्रश्न के जवाब में उन्होंने कहा कि अल्पसंख्यक समाज के लोग भी बड़ी संख्या में रैली को सफल बनाने अयोध्या जा रहे हैं।उन्होंने बताया कि इतनी बड़ी संख्या में लोगों को सुरक्षित ले जाने तथा उनके भोजन पानी की व्यवस्था भारतीय जनता पार्टी करेगी।छोटे बड़े सभी वाहनों को विधानसभावार वितरित किया गया है।प्रत्येक वाहन पर पार्टी के तीन कार्यकर्ताओं को व्यवस्था सौंपी गई है।जिसमे वाहन प्रमुख एवम भोजन प्रमुख शामिल हैं।सभी वाहन पूर्व में बनाई गई योजना के तहत शुक्रवार की देर रात बूथ एवम शक्तिकेंद्रो पर पहुंचा दिए जायेंगे।इस अवसर पर जिला अध्यक्ष अरविंद कुमार मौर्य,जिला मीडिया प्रभारी विजय आनंद बाजपेई मौजूद रहे।

पुलिस ने छात्र/छात्राओं को यातायात /सड़क सुरक्षा के नियमों के बारे में जागरुक किया

द अचीवर टाइम्स अनुराग मेहरोत्रा

बाराबंकी। पुलिस अधीक्षक बाराबंकी दिनेश कुमार सिंह के निर्देशन में जनपद बाराबंकी में सड़क दुर्घटनाओं पर प्रभावी नियंत्रण हेतु चलाए जा रहे ÷सड़क सुरक्षा पखवाड़ा÷ कार्यक्रम के दृष्टिगत प्रभारी निरीक्षक कोतवाली नगर अजय कुमार त्रिपाठी मय पुलिस टीम के जमीरूल इस्लामिया इण्टर कॉलेज बाराबंकी के छात्र/छात्राओं को यातायात के नियमों/संकेतों के बारे मे जानकारी दी गयी एवं साथ ही यातायात/सड़क सुरक्षा नियमों का पालन करने जैसे सीट बेल्ट/हेलमेट पहनने, ओवर स्पीडिंग न करने, रेड लाइट जम्पिंग न करने, वाहन चलाते हुए मोबाइल फोन/ईयर फोन का प्रयोग न करने, नशे/नींद की हालत में वाहन न चलाने आदि के संबंध में जागरूक किया गया।

गीत- संगीत और नृत्य से बांधा समा

संवाददाता

रामनगर (वाराणसी)। स्थानीय श्रीराम जानकी वाटिका में आयोजित एक भव्य समारोह में किडजी माउन्ट लिटेरा जी स्कूल का7वाँ वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास से मनाया गया । विद्यालय के डायरेक्टर आनंद पाण्डेय एवं सवित्री पाण्डेय ने मुख्य अतिथि के रूप में पधारे आयुष मंत्री उत्तर प्रदेश सरकार डा दया शंकर मिश्रा का पुष्पगुच्छ एवं अंगवस्त्रम भेंट करके स्वागत किया । विद्यालय प्रबंधक आशुतोष पाण्डेय ने अतिथियों का स्वागत पुष्प गुच्छ देकर किया। तत्पश्चात् दीप प्रज्जलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। भारतीय संस्कृति एवं परम्परानुसार विघ्नहर्ता भगवान श्री गणेश एवं माँ सरस्वती की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करके हुआ। वार्षिकोत्सव पंचमहाभूत शीर्षक पर आधारित था, जिसमें यह दर्शाया गया है कि मनुष्य प्रकृति की संरचना है। यह प्रकृति पंचतत्वों- पृथ्वी, जल, पावक, गगन, समीर से संचालित होती है। इनका संतुलन ही मनुष्य के जीवन के संतुलन को बनाए रखता है। इसी को आधार मानकर कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें क्रमशः पंचमहाभूत तत्वों के मूल्य को नृत्य नाटिका के रूप में प्रस्तुत किया गया। विद्यार्थियों ने पौराणिक कथाओं के साथ-साथ मानव जीवन में प्रकृति के मूल्य को दर्शाया। बाल कलाकरों द्वारा दर्शकों को यह सीख दी गई कि हम प्रकृति की और प्रकृति हमारी धरोहर है इसका दोहन न होने दें। पर्यावरण के संरक्षण में अपना योगदान दें। भारतीय संस्कृति को संरक्षित करने के लिए पौराणिकता को आधार मानकर मंचन किया गया। कलात्मक प्रस्तुति में विद्यार्थियों की शास्त्रीय सामूहिक नृत्य प्रस्तुति ने दर्शकों के मन को मोह लिया। संपूर्ण विद्यालय उत्सव के भावों से ओतप्रोत रहा। प्रिसिन्पल श्रीमती मंजू शर्मा ने विद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसमें विद्यालय की प्रगति व विद्यार्थियों की अनेकानेक गतिविधियों को दर्शाया गया। कक्षा चार के छात्र हर्षित एवं टीम ने शेक्सप्रियर पर नाटक प्रस्तुत किया ।छोटी छोटी बच्चीयों ने महाराष्ट्र का प्रसिद्ध लवणी नृत्य मै कोल्हापुर से आयी की प्रस्तुति की । बच्चो ने मार्शल आर्टस का सुन्दर तरीके से प्रस्तुतिकरण किया ।महान सम्राठ पृथ्वीराज की वीरता एवं शब्दभेदी बाण चलाने की कला को भावपूर्ण प्रर्दशन नाटक के माध्यम से किया गया । वही पैरेन्टस के लिये आयोजित कम्पटीशन में अनुराधा पाण्डेय ने जीत दर्ज की ।

कार्यक्रम की सराहना करते हुए श्री डा दया शंकर मिश्रा ने कहा कि पौराणिकता व प्रकृति संरक्षण पर आधारित प्रस्तुतियाँ एक अलग संदेश दे रही हैं, जिससे मानव-समाज को प्रेरणा लेनी चाहिए। विशिष्ट अतिथि स्कन्द गुप्ता ने विद्यार्थियों की संवाद योजना व वेशभूषा की सराहना की। विद्यालय की डायरेक्टर श्रीमती ज्योति पाण्डेय ने आए हुए अतिथियों व कार्यक्रम समन्वय के लिए कृतज्ञता ज्ञापित की । राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। इस अवसर पर रामनगर थानाध्यक्ष भरत उपाध्याय, अर्बन स्कूल के डायरेक्टर स्कन्द गुप्ता, डा राघवेन्द्र प्रताप सिंह, डा मधुकर पाण्डेय, चन्दन यादव व भारतीय पत्रकार सुरक्षा परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष मणिशंकर सिन्हा, राष्ट्रीय महासचिव मस्तराम मिश्रा, मनोज कुमार, संजय श्रीवास्तव, डा अजीत कुशवाहा तथा विश्व हिन्दू महासभा विंध्याचल मण्डल के प्रभारी उमेश ओझा, रमन वर्मा अन्य गणमान्य पदाधिकारी, विभिन्न विद्यालयों के प्रधानाचार्य, अभिभावकगण, विद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाएँ व कर्मचारीयों के साथ साथ सैकड़ो की संख्या में लोग उपस्थित रहे।

भीड़ भाड़ वाले क्षेत्रो मे वन वे मार्ग होंगे:कमिश्नर

ताज के पूर्वी गेट पर्यटको के बड़े वाहनों को खड़ा कराया जाय

संवाददाता

आगरा। ताज नगरी की यातायात व्यवस्था को लेकर मंडलायुक्त श्रीमती रितु माहेश्वरी की अध्यक्षता में आज लघु सभागार में बैठक हुई जिसमें पुलिस कमिश्नर आगरा, एडीए उपाध्यक्ष, नगर आयुक्त, एसीपी ट्रैफिक, डीसीपी सिटी मुख्य रूप से मौजूद रहे। बैठक में सर्वप्रथम नगरायुक्त ने बताया कि जंक्शन और आईटीएमएस सेंटर पर लगे स्मार्ट कैमरों को लगातार दुरुस्त करने का काम किया जा रहा है। वर्तमान में 85 प्रतिशत कैमरे लाइव है। मंडलायुक्त ने जल्द ही शत प्रतिशत कैमरे को लाइव करने एवं आईटीएमएस को प्रभावी बनाने के निर्देश दिए। एसीपी ट्रैफिक ने बताया कि बिजली घर, लोहा मंडी और बोदला चौराहे पर नगर निगम के सहयोग से जंक्शन इंफ्रूवमेंट का काम चल रहा है जिसमें बिजली घर चौराहा पर ट्रैफिक मैनेजमेंट की दिशा में काफी इंफ्रूवमेंट देखने को मिली है। मंडलायुक्त ने नगर निगम, ट्रैफिक पुलिस और पीडब्ल्यूडी के समन्वय से चिन्हित शहर के 24 जंक्शन इम्प्रूवमेंट हेतु एक्शन प्लान बनाने तदनुसार कार्य करने हेतु निर्देशित किया गया। शहर के अंदर ट्रैफिक सुधार के लिए छीपी टोला से बिजली घर के बीच वन वे रूट निर्धारित किया गया है। सभी वाहन छीपीटोला चौराहा से श्रीराम होटल की साइड से बिजलीघर चौराहा पहुंचेंगे जबकि बिजलीघर से छीपीटोला आने के लिए बालूगंज होते हुए जाएंगे। इसी तरह ही शाहगंज क्षेत्र में भी ट्रैफिक सुचारू रखने के लिए जल्द वन वे लागू किया जाएगा। मंडलायुक्त ने शहर में भीड़भाड़ वाले रास्ते पर वन वे ट्रैफिक और डायवर्जन लागू करने के निर्देश दिए। इसके अलावा ऑटो टेम्पो और ई रिक्शा को पंजीकृत कर रूट निर्धारित करने एवं अपंजीकृत ऑटो-ई रिक्शा के खिलाफ लगातार अभियान चलाने के निर्देश दिए। वीकेंड और विशेष छुट्टी के दिनों में ताजमहल पर आने वाली भीड़ और पार्किंग समस्या से अवगत कराते हुए बताया गया कि ताजमहल के पश्चिमी और पूर्वी गेट पर पार्किंग की समस्या बढ़ती जा रही है। पुरानी मंडी चौराहा से फतेहाबाद रोड की तरफ जाने वाले रोड पर मेट्रो अंडरग्राउंड होने के कारण दोनों तरफ की सड़क संकरी हो गई है जिस कारण जाम की समस्या बनी रहती है। इसे लेकर मंडल आयुक्त ने बैठक में मौजूद सिटी मजिस्ट्रेट को मेट्रो से जुड़ी समस्या का समाधान करने के निर्देश दिए, साथ ही वेस्ट गेट की तरफ पार्किंग स्थल बनाने के लिए किला के सामने उद्यान विभाग की खाली जमीन पर सतही पार्किंग बनाने के निर्देश दिए। वहीं एसीपी ने ट्रैफिक का दबाव कम करने के लिए बाहर से आने वाले पर्यटकों के बड़े वाहन (टूरिस्ट बस) का शहर प्रवेश के लिए सिर्फ एक रुट (रमाडा होटल से ताज पूर्वी गेट की तरफ़) निर्धारित करने का सुझाव दिया गया। मंडलायुक्त ने पहले चरण में पुलिस प्रशासन के सहयोग से टूरिस्ट बसों के सिंगल रूट डायवर्जन के निर्देश

अक्षत कलश यात्रा में उमड़ी भीड़ कई जगह हुआ स्वागत

❖अक्षत कलश की विधि विधान से हुई पूजा अर्चना।
❖धार्मिक गीतों पर थिरकते रहे श्रद्धालु।

द अचीवर टाइम्स अनुराग मेहरोत्रा

बाराबंकी। श्री राम जन्म भूमि तीर्थ द्वारा पूजित अक्षत कलश की भव्य शोभा यात्रा विश्व हिंदू परिषद के तत्वाधान में गुरुवार को निकाली गई , जिसमे श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ी।इस दौरान डीजे पर बज रहे धार्मिक संगीतों पर शोभा यात्रा के शामिल महिलाएं,बच्चे और युवा थिरकते दिखे। सभी का उत्साह देखते बनता था। राम जानकी की भव्य झांकी एवम् जयकारे लगाते लोगों के हुजूम को देखने के लिए शहर के मुख्य मार्गो के दोनो ओर लोग कतार बद्ध खड़े दिखे।नागेश्वर नाथ मंदिर में सभी दस कलशों को फूलों से सजाया गया।मंत्रोच्चार के साथ प्रभु राम की आरती उतारी गई।तत्पश्चात सभी कलश को सही हुई खुली जीप में रखा गया।यात्रा नागेश्वर नाथ मंदिर से घंटाघर होते हुए धनोखर मंदिर पहुंची जहां सैकड़ों लोगों ने राम जानकी की आरती उतारकर आशीर्वाद लिया।इसके उपरांत निबलेट तिराहा ,छाया टॉकीज चौराहा होते हुए कैलाश आश्रम में कलश यात्रा संपन्न हुई।मुख्य मार्गो पर कई जगह समाज के लोगो ने पुष्प वर्षा करके यात्रा का स्वागत व वंदन किया।इस अवसर पर जिला प्रचारक सुदीप ,विहिप के जिला अध्यक्ष ब्रजेश वैश्य,कार्याध्यक्ष पुतान दीक्षित मौजूद रहे।

एसवाईएल पर पंजाब-हरियाणा के बीच बैठक बेनतीजा

पंजाब डार्क जाने में, देने को पानी नहीं: सीएम मान सिंह

एजेंसी

चंडीगढ़। बैठक के बाद पंजाब के सीएम भगवंत मान ने कहा कि हम अपने पुराने रुख पर कायम हैं। पंजाब का 70 फीसदी क्षेत्र डार्क जोन में है। उन्होंने कहा कि जब पंजाब में पानी ही नहीं है तो नहर निर्माण से मिलेगा क्या?

पंजाब और हरियाणा के बीच सतलुज यमुना लिंक (एसवाईएल) नहर बनाने के मुद्दे पर गुरुवार को हुई बैठक भी बेनतीजा रही। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने इस मसले पर राज्य के पुराने स्टैंड पर कायम रहते हुए साफ कर दिया कि पंजाब के पास किसी अन्य राज्य को देने के लिए एक बूंद भी अतिरिक्त पानी नहीं है। केंद्रीय जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत की अध्यक्षता में हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल के साथ एक घंटे से भी अधिक समय तक चली बैठक के बाद पत्रकारों से बातचीत में मुख्यमंत्री भगवंत मान ने कहा कि पंजाब के मुख्यमंत्री के रूप में मैं कह रहा हूं कि हमारे पास किसी को बांटने के लिए पानी नहीं है। मैंने बैठक में केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत को इस बारे में अवगत कराया है कि हम अपने पहले रुख पर कायम हैं कि हमारे पास पानी नहीं है।' मान ने कहा कि हरियाणा के मुख्यमंत्री का कहना था कि वह पानी की बात नहीं करने आए, पंजाब पहले एसवाईएल नहर बना दे, उसके बाद देखेंगे। मान ने कहा कि जब हमारे पास देने को पानी ही नहीं है तो नहर बनाने का क्या फायदा? इस बैठक में पंजाब और हरियाणा के उच्चाधिकारी भी शामिल थे।

एक सवाल के जवाब में मुख्यमंत्री मान ने कहा कि इस मामले में पंजाब चार जनवरी को सुप्रीम कोर्ट में अपना पक्ष रखेगा। उन्होंने कहा कि हम सुप्रीम कोर्ट में एफिडेविट फाइल करेंगे। दुनियाभर में प्रत्येक 25 साल बाद रिपेरियन मामलों की समीक्षा होती है लेकिन पंजाब के मामले में केंद्र सरकार ने कभी इसकी समीक्षा नहीं की। मुख्यमंत्री ने कहा कि चिनाब से रावी तक इंडस समझौता था, जिसके तहत चिनाब से रावी के बीच एक सुरंग बनाई जानी थी, जिसके जरिये पांच एमएएफ पानी पंजाब को मिल सकता था लेकिन केंद्र सरकार ने आज तक उस सुरंग का निर्माण नहीं कराया।

मुख्यमंत्री भगवंत मान ने कहा कि हरियाणा के पास पानी के लिए कई चैनल हैं। यमुना-शारदा लिंक से उन्हें पानी मिलता है, जबकि पंजाब के पास सतलुज दरिया अब एक नाले में तब्दील हो चुका है। तय शर्तों के अनुसार पंजाब को 52 एमएएफ (मिलियन एकड़ फीट) पानी मिलना चाहिए लेकिन इस समय केवल 14.5 एमएएफ पानी ही मिल रहा है। भूजल भी 600-700 फुट तक गिर चुका है और पंजाब डार्क जोन में है। जिस हॉर्सपावर की मशीन से आज पंजाब को जमीन से पानी निकालना पड़ रहा है, उतनी गहराई से दुबई में जमीन से तेल निकाला जाता है। उन्होंने दोहराया कि एसवाईएल बनाने का कोई औचित्य नहीं है।

पंजाब के मुख्यमंत्री मान ने गुरुवार को एसवाईएल के मुद्दे पर बैठक के बाद पत्रकारों से बातचीत में कहा कि पंजाब का पांच एमएएफ पानी दिया जा रहा है लेकिन यह पानी जम्मू-कश्मीर में चिनाब से रावी में आता है। उन्होंने कहा कि पंजाब से पाकिस्तान को पानी नहीं दिया जा रहा। उन्होंने यह भी कहा, वैसे जब इस साल बाढ़ आई, हमने हरियाणा से पूछा था कि क्या पानी की जरूरत है? उन्होंने इन्कार कर दिया। तो क्या हम सिर्फ डूबने के लिए हैं। मान ने कहा कि हमने वाईएसएल (यमुना-सतलुज लिंक) फॉर्मूला दिया है।

पत्रकारों से बातचीत करते हुए हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने कहा कि पंजाब के सीएम भगवंत मान हैं कि मानते ही नहीं। उन्होंने कहा कि हरियाणा को अनुबंध के अनुसार पानी नहीं मिल रहा है। ऐसे में फसलों को नुकसान पहुंच रहा है। माइक्रो इरीगेशन की पद्धति अपनाकर हरियाणा पानी का मैनेजमेंट कर रहा है। केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह ने भी हरियाणा के इस प्रयास की तारीफ की है। इसके साथ ही उन्होंने आरोप लगाया कि आज तक हमारे हिस्से के पानी को पाकिस्तान को दिया गया है।

29 दिसम्बर को राज्यपाल दीक्षांत समारोह में होंगें शामिल

संवाददाता

शहडोल। मध्यप्रदेश के माननीय महामहिम राज्यपाल श्री मंगू भाई पटेल 29 दिसम्बर 2023 को शहडोल जिले के प्रवास पर आ रहे हैं। माननीय राज्यपाल शहडोल में पंडित शंभूनाथ शुक्ल विश्वविद्यालय के तृतीय दीक्षांत समारोह में शामिल होंगे। माननीय राज्यपाल शहडोल जिले के ग्राम हर्री में विकसित भारत संकल्प यात्रा में भी शामिल होंगे। जारी कार्यक्रम के अनुसार माननीय राज्यपाल श्री मंगू भाई पटेल भोपाल से प्रातः 8:45 बजे हेलीकाप्टर से प्रस्थान कर प्रातः 10:25 बजे हेलीपैड जमुई पहुंचेगे। माननीय राज्यपाल हेलीपैड से प्रातः 10:30 बजे कार द्वारा प्रस्थान कर प्रातः 10:45 बजे पंडित शंभूनाथ शुक्ल विश्वविद्यालय शहडोल पहुंचकर विश्वविद्यालय में आयोजित तृतीय दीक्षांत समारोह में शामिल होंगें एवं कार्यक्रम के पश्चात माननीय राज्यपाल दोपहर 12:30 बजे सर्किट हाउस शहडोल के लिए रवाना होकर दोपहर 12:45 बजे सर्किट हाउस शहडोल पहुंचेंगे। माननीय राज्यपाल महोदय का दोपहर 12:45 बजे से 1:15 बजे तक का समय आरक्षित रहेगा। माननीय राज्यपाल दोपहर 1:20 बजे सर्किट हाउस से ग्राम हर्री से लिए कार से रवाना होंगे तथा ग्राम हर्री दोपहर 1:30 बजे पहुंचकर विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम में सहभागिता निभाएंगे। माननीय राज्यपाल ग्राम हर्री से दोपहर 2:50 कार द्वारा प्रस्थान कर दोपहर 3:00 बजे हेलीपैड पहुंचकर दोपहर 3:05 बजे हैलीकाप्टर द्वारा मण्डला के लिए प्रस्थान करेंगे।

एक नज़र

यातायात पुलिस द्वारा चलाया जा रहा है विशेष अभियान

54 चालानों में 20,300/- रूपये समंस शुल्क वसूले

प्रमुख संवाददाता शहडोल विवेक दुबे कि रिपोर्ट

शहडोल। माननीय उच्च न्यायालय जबलपूर में प्रस्तुत याचिका ऐश्वर्या शांडिल्य विरूद्ध म.प्र. शासन पर पारित निर्णय के पालन में पुलिस मुख्यालय भोपाल द्वारा प्रदेश के सभी जिलों में बिना हेलमेट के दो पहिया एवं बिना सीटबेल्ट के चार पहिया वाहन चलाने वालों के विरूद्ध दिनांक 20.11.2023 से 10.01.2024 तक विशेष अभियान चलाने हेतु निर्देशित किया गया है। जिसके पालन में जिला शहडोल पुलिस द्वारा दिनांक 27.12.2023 को बिना हेलमेट लगाए दो पहिया वाहन चालाने वाले, बिना सीटबेल्ट लगाये चार पहिया वाहन चलाने वाले चालकों एवं अन्य के विरूद्ध विभिन्न धाराओं के तहत 54 चालानों में 20,300/- रूपये समंस शुल्क वसूल किया गया कार्यवाही जारी है। पुलिस द्वारा संबंधितों के विरूद्ध चालानी कार्यवाही करते हुए नियमों का पालन करने हेतु कड़ाईपूर्वक निर्देशित किया गया।

29 दिसम्बर के लिए विकसित भारत संकल्प यात्रा हेतु जनपदवआर निर्धारित रूट चार्ट

संवाददाता शहडोल विजय कुमार विश्वकर्मा कि रिपोर्ट

शहडोल। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्री राजेश जैन ने जानकारी दी है कि 29 दिसम्बर को जनपद पंचायत सोहागपुर के ग्राम पंचायत हर्री एवं धुरवार में, जनपद पंचायत बुढार के ग्राम पंचायत अमलई, बिजुरी, गिरवा, रमनाकन्नेर में, जनपद पंचायत जयसिंहनगर के ग्राम पंचायत देवरी एवं कनाड़ी खुर्द में, जनपद पंचायत ब्यौहारी के ग्राम पंचायत भोलहरा एवं भोलहरी में, जनपद पंचायत गोहपारू के ग्राम पंचायत पतहर एवं दुलादर में विकसित भारत संकल्प यात्रा निकाली जाएगी।

राशन दुकानों की राशि में बड़ी सेंधमारी

प्लानिंग के तहत राशि की गई आहरित, जांच की उठी मांग

बीजापुर। बीजापुर जिले में प्रशासनिक महकमे के सबसे महत्वकांक्षी खाद्य विभाग में राशन दुकानों को जारी होने वाली वित्तीय पोषण की राशि में सेंधमारी का मामला सामने आया है। पूरा मामला वित्तीय पोषण की राशि से जुड़ा हुआ है, जो नान (खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं संरक्षण विभाग) के मार्फत आवेदन की प्रक्रिया पूरी करने के बाद खाद्य विभाग को जारी की जाती है। आगे यह राशि पंजीकृत राशन दुकान को उनके बैंक खातें के माध्यम से जारी की जाती है। जानकारी के अनुसार, बीजापुर में पंजीकृत अथवा लाइसेंस प्राप्त 170 में से 134 राशन दुकानों के नाम पर कुल एक करोड़ दो लाख 91 हजार की राशि खाद्य विभाग की तरफ से मंजूर की गई थी। यह राशि प्रत्येक राशन दुकानों को उनके बैंक अकाउंट डिटेल्स के आधार पर ट्रांसफर की जानी थी जो नहीं हुआ। पड़ताल में जो तथ्य, प्रमाण मीडिया कर्मियों के हाथ आए हैं, इनमें भोपालपट्नम ब्लॉक में संबंधित खाद्य निरीक्षक द्वारा तगड़ी प्लानिंग कर बड़ी राशि आहरित कर ली गई है। भोपालपट्नम के बाद भैरमगढ़ ब्लॉक से भी मिलती-जुलती कहानी बाहर आई है। दरअसल, वित्तीय पोषण की जो राशि राशनदुकानों को सिलसिलेवार जारी की जानी चाहिए थी वैसा न कर जिम्मेवारों ने कई राशन दुकानों की राशि चुनिंदा राशन दुकानों के खाते में जमा करवाई और बाद में सेल्स मैन के माध्यम से रकम फोन पे, एनईएफटी के अलावा कुछ स्थानों पर नकद आहरण की जानकारी मिली है। जिले में संचालित राशन दुकानों का संचालन कहीं महिला स्वमं सहायता समूह कर रही हैं तो कुछ स्थानों पर ग्राम पंचायतों के मार्फत दुकानें संचालित हैं। सेंडरा राशन दुकान के संचालक संतोष यालम का कहना है कि उनके खाते में बरदेली, चंदूर, बामनपुर, बड़े काकलेर में संचालित राशन दुकानों के नाम कुल तीन लाख 64 हजार रूपये जमा करवाए गए थे। संतोष का कहना है कि राशि जमा होने के बाद खाद्य निरीक्षक मनोज सारथी के कहे अनुसार उन्होंने उनके फोनपे नंबर पर पहले 60 हजार रुपये और बाद में एनईएफटी के माध्यम से डेढ़ लाख से अधिक रूपये जमा करवाए थे। बामनपुर राशन दुकान संचालक तुलसी राम गोटे के अनुसार, ग्राम पंचायत के खाते में 21 दिसंबर को 34 हजार रूपये नगद जमा हुए हैं।

मेदांता अस्पताल लखनऊ में चार दिन पहले मरे व्यक्ति को ICU में रखकर वसूली करते रहे।

ग्राम सरना में विकसित भारत संकल्प यात्रा निकाली गई

संवाददाता

शहडोल। शहडोल जिले के जनपद पंचायत गोहपारू के ग्राम पंचायत सरना में विकसित भारत संकल्प यात्रा निकाली गई। लोगों ने विकसित भारत संकल्प यात्रा का स्वागत किया। विकसित भारत संकल्प यात्रा के तहत ग्रामीण जन को केंद्र सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी गई। साथ ही विभिन्न योजनाओं के पात्र हितग्राहियों को हित लाभ का वितरण किया गया। विकसित भारत संकल्प यात्रा के दौरान आईईसी वैन द्वारा केंद्र सरकार द्वारा संचालित कल्याणकारी योजनाओं के प्रति लोगों को जागरूक किया गया।

विकसित भारत संकल्प यात्रा का किया गया आयोजन

शहडोल जिले के जनपद पंचायत बुढ़ार के ग्राम पंचायत बिछिया में विकसित भारत संकल्प यात्रा का आयोजन किया गया। विकसित भारत संकल्प यात्रा के आयोजन के दौरान केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं की जानकारी स्थानीय लोगों को दी गई। आयोजन के दौरान विभिन्न विभाग के योजना संबंधी विभावार स्टाल एवं प्रदर्शनी भी लगाई गई। विकसित भारत संकल्प यात्रा के दौरान पात्र हितग्राहियों को विभिन्न योजनाओं के हितलाभ का वितरण भी किया गया। साथ ही आईईसी वैन के माध्यम से केन्द्र सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं का प्रचार-प्रसार भी किया गया।

व्यय लेखा तैयार करने के संबंध में बैठक सम्पन्न

संवाददाता

शहडोल। विधानसभा निर्वाचन 2023 का निर्वाचन कार्य संपन्न हो कर परिणामों की घोषणा हो चुकी है। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी निर्देशानुसार निर्वाचन के परिणामों की घोषणा के 26 दिनों के भीतर जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा व्यय प्रेक्षक डॉ. राम सिंह गुर्जर की उपस्थिति में निर्वाचन में भाग लेने वाले अभ्यार्थी, अभिकर्ता विधानसभा क्षेत्र 83 ब्यौहारी, 84 जयसिंहनगर, 85 जैतपुर के सभी अभ्यार्थी, अभिकर्ताओं के लेखा तैयार करने के संबंध में लेखा समाधान हेतु बैठक कलेक्टर कार्यालय के विराट सभागार में आयोजित की गई है। बैठक में व्यय प्रेक्षक ने निर्वाचन में भाग लेने वाले अभ्यार्थी, अभिकर्ताओं को व्यय लेखा तैयार करने के निर्देश दिए। बैठक में अपर कलेक्टर श्री रोमोनुस टोप्पो, जिला कोषालय अधिकारी श्री राम मिलन सिंह सहित अभ्यर्थी एवं अभिकर्ता उपस्थित थे।

सोलर प्लांट में करंट लगने से युवक की मौत, परिजनों ने लगाया लापरवाही का आरोप, धरने पर बैठे

जैसलमेर। जैसलमेर में पोकरण क्षेत्र के धुड़सर गांव में स्थित रिलायंस सोलर प्लांट में कार्य कर रहे एक टेक्नीशियन की बुधवार की रात करंट लगने से मौत हो गई। उसके बाद गुरुवार को सुबह परिजनों व ग्रामीणों ने शव उठाने से इनकार कर दिया और मोर्चरी के बाहर धरना शुरू किया। बता दें कि पूरे दिन धरना चलता रहा और कई दौर की समझौता वार्ता के बाद भी कोई सहमति नहीं बन पाई है। जानकारी के अनुसार, क्षेत्र के धुड़सर गांव में रिलायंस कंपनी का धीरुभाई अंबानी सोलर पार्क स्थित है। यहां धूड़सर निवासी जगदीश कुमार (30) पुत्र भंवरलाल प्रजापत टेक्नीशियन के पद पर कार्यरत था।

बी के पांडियन ने केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान पर साधा निशाना

केंद्र के प्रभावशाली मंत्री ने जिले के लिए क्या किया है: बी के पांडियन

संवाददाता

ओड़िशा, भुबनेश्वर। फाइव-टी के चेयरमैन भि के पांडियन ने केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान पर फिर निशाना साधा. अपने अंगुल दौरे के दौरान उन्होंने धर्मेंद्र प्रधान पर निशाना साधा और उनसे कई मुद्दों पर सवाल किए. उन्होंने पूछा है कि केंद्र में शक्तिशाली मंत्री होने के पिछले 10 वर्षों में अंगुल के लिए क्या किया गया है।उन्होंने केंद्रीय मंत्री से पूछा कि जिले में कितने केंद्रीय विद्यालय खुले, कितने कौशल विकास केंद्र खुले. उन्होंने यहां तक ??सवाल किया कि कटक-अंगुल सड़क समस्या का समाधान क्यों नहीं किया गया। कल भद्रक दौरे पर आए केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान पर भी निशाना साधा गया. उन्होंने कहा कि 11 महीने से भी कम समय पहले धामनगर में जनमत संग्रह हुआ था. जो बीजेपी प्रत्याशी के लिए प्रचार कर रहे थे, उन्होंने धामनगर आकर प्रचार के दौरान सैकड़ों प्रतिज्ञाएं कीं. प्रत्याशी जीतने के बाद वह दौरा नहीं करते। पांडियन ने कहा कि वह धन्यवाद देने भी नहीं आये।

नशे में दादी को पीट-पीट कर मार डाला; सिरफिरे पोते के खिलाफ मामला दर्ज

गोड्डा। झारखंड के गोड्डा जिले में एक हैरान करने वाला मामला सामने आया है। यहां एक सिरफिरे पोते ने नशे की हालत में अपनी 90 साल की दादी की पीट-पीटकर हत्या कर दी। गोड्डा के उपमंडलीय पुलिस अधिकारी एसएस तिवारी ने इस बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि यह घटना ठाकुरंगटी पुलिस थाना क्षेत्र के प्रतापपुर गांव की है। बुधवार रात आरोपी सोनू कुमार (20) नशे की हालत में घर लौटा। तभी किसी छोटी-सी बात पर उसकी अपनी दादी फोटो देवी के साथ बहस और झगड़ा हो गया। एसएस तिवारी ने आगे बताया कि गुस्से में सोनू ने दादी की बड़ी बेरहमी से पिटाई कर दी। गंभीर हालत में बुजुर्ग महिला को स्थानीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया, लेकिन इलाज के दौरान उन्होंने दम तोड़ दिया।

हिमाचल में कांग्रेस ने बढ़ाई महंगाई, सत्ता में आने के बाद बढ़ाए टैक्स: अनुराग ठाकुर

एजेंसी

हमीरपुर (हि. प्र.)। केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने कहा कि प्रदेश में कांग्रेस सरकार के सत्ता में आने के बाद महंगाई बढ़ी है। कांग्रेस ने सत्ता में आते ही प्रदेश में आम जनता को राहत देने की बजाए पेट्रोल और डीजल पर दो बार टैक्स बढ़ाया। प्रदेश में भयंकर आपदा के बीच तेल के दाम बढ़ाए गए थे। ऋशर बंद किए गए जिससे निर्माण सामग्री के दाम भी बढ़े। हमीरपुर जिला के दौरे के दौरान भोटा में केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने सीएम सुक्खू के लोकसभा चुनावों में महंगाई, बेरोगजारी और प्रदेश से केंद्र के सौतले व्यवहार को मुद्दा बनाने के बयान पर यह पलटवार करते हुए यह बात कही। ठाकुर ने वीरवार को भोटा के एक निजी होटल में भाजपा पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं के साथ लोकसभा चुनाव को लेकर अहम बैठक की। इस मौके पर भाजपा जिला अध्यक्ष देशराज शर्मा, पूर्व विधायक बलदेव शर्मा भी उपस्थित रहे। केंद्रीय मंत्री ने 14 जनवरी को शुरू होने वाली राहुल गांधी की यात्रा पर तंज कसते हुए कहा कि कांग्रेस जब सत्ता में रही तो कश्मीरी पंडितों को न्याय दिलाने में पूरी तरह से असफल रही है। चुनाव हारने के बाद अब कांग्रेस समाज को जाति और संप्रदाय में बांटने का काम कर रही है। विपक्ष के नेताओं को राम मंदिर के शुभारंभ का निमंत्रण ना मिलने पर पलटवार करते हुए कहा कि निमंत्रण कमेटी द्वारा सभी लोगों को निमंत्रण भेजे गए हैं। लेकिन विपक्ष के लोग उन निमंत्रणों को अस्वीकार कर रहे हैं। उन्होंने विपक्ष पर पलटवार करते हुए कहा कि जो लोग राम मंदिर का विरोध जताते थे और मंदिर निर्माण के लिए तारीख पूछते थे, उनको 22 जनवरी की तारीख याद रख लेनी चाहिए। इस दिन मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा के बाद दुनियार भर से करोड़ों लोग दर्शन करने के लिए पहुंचेंगे। अब रामलला टैंट में नहीं, मंदिर में रहेंगे।

हरदीप सिंह निज्जर के कातिलों तक पहुंचे कनाडा पुलिस के हाथ!

संवाददाता

जालंधर (पंजाब)। खालिस्तान टाइगर फोर्स का प्रमुख निज्जर मूलरूप से पंजाब के जालंधर का रहने वाला था। वह 1996 में फर्जी पासपोर्ट पर कनाडा चला गया और 2007 में वहां की नागरिकता हासिल कर ली थी। उसने 2012 में पाकिस्तान से हथियारों और आईईडी ब्लास्ट की ट्रेनिंग ली थी।

कनाडा में कुछ महीने पहले मारे गए भारत के मोस्ट वांटेड और खालिस्तानी आतंकी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या से जल्दी पर्दा उठ सकता है और रॉयल कैनेडियन माउंटेड पुलिस (आरसीएमपी) के हाथ कातिलों के गिरेबान तक पहुंच गए हैं। दोनों शूटरों की गिरफ्तारी किसी भी समय संभव है। निज्जर हत्याकांड को लेकर भारत व कनाडा सरकार में काफी तनाव चल रहा था और कनाडा के पीएम जस्टिन ट्रूडो ने इस हत्याकांड में भारतीय अधिकारियों के शामिल होने की बात कही थी। निज्जर की हत्या के बाद उसके कातिलों ने कनाडा नहीं छोड़ा। वह कनाडा में ही रह रहे हैं। कनाडाई पुलिस कई महीनों से इन पर नजर रख रही है और इनकी हर गतिविधि को बारीकी से मॉनिटर किया जा रहा है। पहले ही खुलासा हो चुका है कि हरदीप सिंह निज्जर की हत्या की साजिश काफी बड़े स्तर पर रची गई थी। इस हत्याकांड में कम से कम छह लोग और दो कारों का इस्तेमाल किया गया था। खालिस्तान टाइगर फोर्स का प्रमुख निज्जर मूलरूप से पंजाब के जालंधर का रहने वाला था। वह 1996 में फर्जी पासपोर्ट पर कनाडा चला गया और 2007 में वहां की नागरिकता हासिल कर ली थी। उसने 2012 में पाकिस्तान से हथियारों और आईईडी ब्लास्ट की ट्रेनिंग ली थी। पता चला है कि कनाडा की आरसीएमपी ने काफी जांच के बाद दो शूटरों की पहचान कर ली और उन पर लगातार निगरानी रखी जा रही है। उनकी गतिविधियों की पूरी तरह से कनाडा की पुलिस जांच कर रही है।

गोहपारू पुलिस जिला बदर के आरोपी को किया गिरफ्तार

संवाददाता

शहडोल। गोहपारू पुलिस को खूफिया सूत्रों से जानकारी मिली कि जिला बदर का आरोपी आनेश्वर यादव पिता मायाराम उर्फ कोदू यादव निवासी रतहर का अपने निवास पर रह रहा है। उक्त सुचना को गंभीरता से लेते हुए तस्दीक कर गोहपारू पुलिस उक्त आरोपी आनेश्वर यादव के घर पर पहुंचकर बड़ी ही मुस्तैदी के साथ दबिस दे कर आरोपी अपने घर के आंगन में मिला जिसे जिला दण्डाधिकारी शहडोल द्वारा आरोपी को दिनांक 30.10.23 से अगले तीन माह की अवधि तक जिले से बाहर रहने के सम्बंध में आदेशित किया गया था। आरोपी द्वारा उक्त आदेश का उल्लंघन करते पाया गया। जिस पर आरोपी के विरूद्ध धारा 188 भादवि एवं म.प्र. राज्य सुरक्षा अधि.1990 की धारा 14 के अंतर्गत दण्डनीय पाये जोने से आरोपी को दिनांक 27.12.23 को गिरफ्तार किया, जाकर माननीय न्यायालय शहडोल पेश किया गया है। उक्त कार्यवाही में थाना प्रभारी निरीक्षक मो. समीर के नेतृत्व में प्रआर0 शैलेन्द्र कोल, आरक्षक विकाश दुबे एवं प्रदीप बरकड़े की अहम भूमिका रही।

1885 में बनी कांग्रेस, 138 साल में 57 नेताओं ने संभाली कमान

नई दिल्ली। 28 दिसम्बर को कांग्रेस अपना 139वां स्थापना दिवस मना रही है। 28 दिसम्बर 1885 को थियिसोफिकल सोसायटी के प्रमुख सदस्य रहे एओ ह्यूम की पहल पर बम्बई के गोकुलदास संस्कृत कॉलेज मैदान में कांग्रेस की स्थापना हुई थी।

देश की मुख्य विपक्षी पार्टी कांग्रेस गुरुवार को अपना 139वां स्थापना दिवस मना रही है। इस अवसर पर पार्टी नागपुर में एक बड़ा आयोजन किया गया है। इस दौरान हैं तैयार हम नाम की महारैली के साथ पार्टी आगामी लोकसभा चुनाव अभियान की शुरुआत करेगी।

1885 में बनी पार्टी भले ही विपक्ष में है, लेकिन कभी इसका देशभर में एकछत्र राज हुआ करता था। कई बार पार्टी में टूट हुई, लेकिन इसका अस्तित्व आज भी बरकरार है। यूं कहें तो इसका इतिहास उतार-चढ़ाव से भरा हुआ है।

कैसे हुई कांग्रेस की स्थापना?

28 दिसम्बर 1885 को थियिसोफिकल सोसायटी के प्रमुख सदस्य रहे एओ ह्यूम की पहल पर बम्बई (अब मुंबई) के गोकुलदास संस्कृत कॉलेज मैदान में देश के विभिन्न प्रांतो के राजनीतिक और सामाजिक विचारधारा के लोग एक मंच पर एकत्रित हुए। यह राजनीतिक एकता एक संगठन में तब्दील हुई, जिसका नाम 'कांग्रेस' रखा गया।

कांग्रेस की स्थापना के वक्त ह्यूम के साथ 72 और सदस्य थे। पार्टी के गठन के बाद ह्यूम संस्थापक महासचिव बने और वोमेश चंद्र बनर्जी को पार्टी का पहला अध्यक्ष नियुक्त गया। बनर्जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में देश में सामाजिक सद्भाव का नया वातावरण तैयार करने पर जोर दिया। इसके बाद से अब तक पार्टी को 56 अध्यक्ष मिल चुके हैं। सबसे ज्यादा 45 साल तक पार्टी की कमान नेहरु-गांधी परिवार के पास ही रही है।

कब किसने संभाली कांग्रेस की कुर्सी?

1885 से लेकर 1919 तक कांग्रेस में नेहरु-गांधी परिवार का ज्यादा दखल नहीं हुआ करता था। इसके बाद 1919 में कांग्रेस पार्टी के अमृतसर अधिवेशन में मोती लाल नेहरु को नया अध्यक्ष चुना गया। 1928 में उन्हें कलकत्ता के अधिवेशन में फिर से पार्टी का अध्यक्ष चुन लिया गया। इसके अगले ही साल बेटे पं. जवाहर लाल नेहरू को मिल गई। लगातार दो साल उन्होंने कमान संभाली, फिर सरदार वल्लभ भाई पटेल को नया अध्यक्ष चुन लिया गया।

1936 और 1937 में जवाहर लाल नेहरु फिर से अध्यक्ष बनाए गए। देश की आजादी के बाद 1951 में फिर से कांग्रेस की कमान पं. जवाहर लाल नेहरु को मिली। इस बार वो लगातार चार साल तक अध्यक्ष बने रहे। पार्टी में यूं बढ़ता गया गांधी परिवार का दखल

1959 में कांग्रेस में इंदिरा गांधी की एंटी हुई और वह अध्यक्ष बनीं। 1960 में इंदिरा के हाथ से कांग्रेस की कमान नीलम संजीवा रेड्डी के पास चली गई। 1978 से 1983 तक फिर से इंदिरा अध्यक्ष रहीं। 1985 में कांग्रेस की कमान राजीव गांधी को मिली और छह साल तक उन्होंने कुर्सी संभाली। 1998 में सोनिया गांधी को अध्यक्ष बनाया गया और इसके बाद 2017 तक उन्होंने 19 साल तक पार्टी की टॉप लीडर बनी रहीं। 2017 में बेटे राहुल गांधी को कांग्रेस की कमान सौंप दी। हालांकि, कई राज्यों के चुनावों में मिली हार के बाद राहुल ने 2019 में अध्यक्ष पद छोड़ दी। तब से अक्तूबर 2022 तक सोनिया गांधी ही पार्टी की अंतरिम अध्यक्ष बनी रहीं।

दशकों बाद कांग्रेस ने अध्यक्ष पद की कुर्सी किसी गैर-गांधी परिवार के व्यक्ति को देने का फैसला किया। आखिरकार 26 अक्तूबर 2022 को मल्लिकार्जुन खड़गे को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का राष्ट्रीय अध्यक्ष चुना गया।

64 बार कांग्रेस से अलग होकर नेताओं ने बनाई अपनी नई पार्टी

कांग्रेस को अपनी इस यात्रा के कई बार बड़े झटके भी सहने पड़े हैं।

1885 में पार्टी की स्थापना हुई। तब से अब तक कांग्रेस ने 64 ऐसे बड़े मौके देखे, जब कांग्रेस छोड़ने के बाद नेताओं ने अपनी नई पार्टी बना ली। 1969 में तो कांग्रेस के दिग्गज नेताओं ने इंदिरा गांधी को ही पार्टी से बाहर का रास्ता दिखा दिया था। तब इंदिरा ने अलग कांग्रेस बना ली थी।

आजादी से पहले दो बार कांग्रेस में दरार पड़ी

शुरुआत आजादी से पहले की दो घटनाओं से करते हैं, जब कांग्रेस में टूट पड़ी और नए राजनीतिक दल का आगाज हुआ।

1939- महात्मा गांधी से अनबन होने पर सुभाष चंद्र बोस और शार्दुल सिंह ने ऑल इंडिया फॉरवर्ड ब्लॉक नाम से अलग पार्टी खड़ी कर ली। पश्चिम बंगाल में अभी भी ये पार्टी अस्तित्व में है। हालांकि, इसका जनाधार काफी कम हो चुका है।

आजादी के बाद सबसे ज्यादा बिखरी पार्टी

आजादी के बाद कांग्रेस में सबसे ज्यादा फूट पड़ी। तब से 2021 तक कांग्रेस छोड़ने वाले नेता 62 नई राजनीतिक पार्टी शुरू कर चुके हैं। आजादी के बाद कांग्रेस छोड़ने वाले नेताओं ने 1951 में ही तीन नई पार्टी खड़ी की। जीवटराम कृपलानी ने किसान मजदूर प्रजा पार्टी, तंगुतूरी प्रकाशम और एनजी रंगा ने हैदराबाद स्टेट प्रजा पार्टी और नरसिंह भाई ने सौराष्ट्र खेदूत संघ नाम से अलग राजनीतक दल शुरू किया था। इसमें हैदराबाद स्टेट प्रजा पार्टी का विलय किसान मजदूर प्रजा पार्टी में हो गया। बाद में किसान मजदूर प्रजा पार्टी का विलय प्रजा सोशलिस्ट पार्टी और सौराष्ट्र खेदूर संघ का विलय स्वतंत्र पार्टी में हो गया।

1956-1970 तक कांग्रेस से निकले नेताओं ने 12 नए दल बनाए

कांग्रेस के दिग्गज नेता रहे सी. राजगोपालाचारी ने 1956 में पार्टी छोड़ दी। बताया जाता है कि तमिलनाडु में कांग्रेस नेतृत्व से विवाद होने के बाद उन्होंने अलग होने का फैसला लिया था।

1923- चितरंजन दास ने कांग्रेस छोड़कर स्वराज पार्टी की स्थापना की थी। होम लाइब्रेरी की पुस्तक ग्रेट मेन ऑफ इंडिया में इसका उल्लेख किया गया है। बताया गया है कि चितरंजन दास काउंसिल में शामिल होकर ब्रिटिश सरकार की नीतियों का नए तरह से विरोध करना चाहते थे, लेकिन कांग्रेस अधिवेशन में उनका ये प्रस्ताव पास नहीं हुआ। इसके बाद उन्होंने स्वराज पार्टी बना ली। 1924 में दिल्ली में कांग्रेस के अतिरिक्त अधिवेशन में उनका ये प्रस्ताव पास हो गया। 1925 में स्वराज पार्टी का कांग्रेस में विलय हो गया।

इन्द्रा गांधी

राजीव गांधी

पी.वी. नरसिम्हा राव

लाल बहादुर

डॉ. मनमोहन सिंह

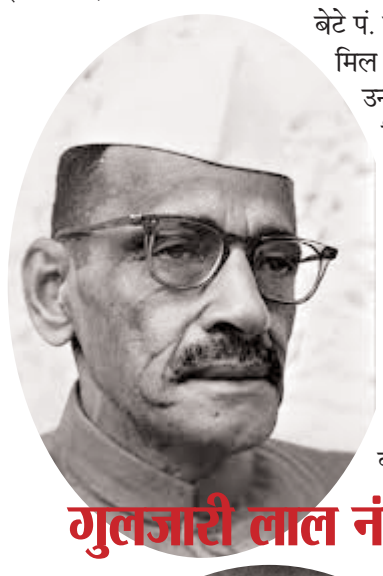
गुलजारी लाल नंदा

राहुल गांधी

पंडित जवाहर लाल नेहरू

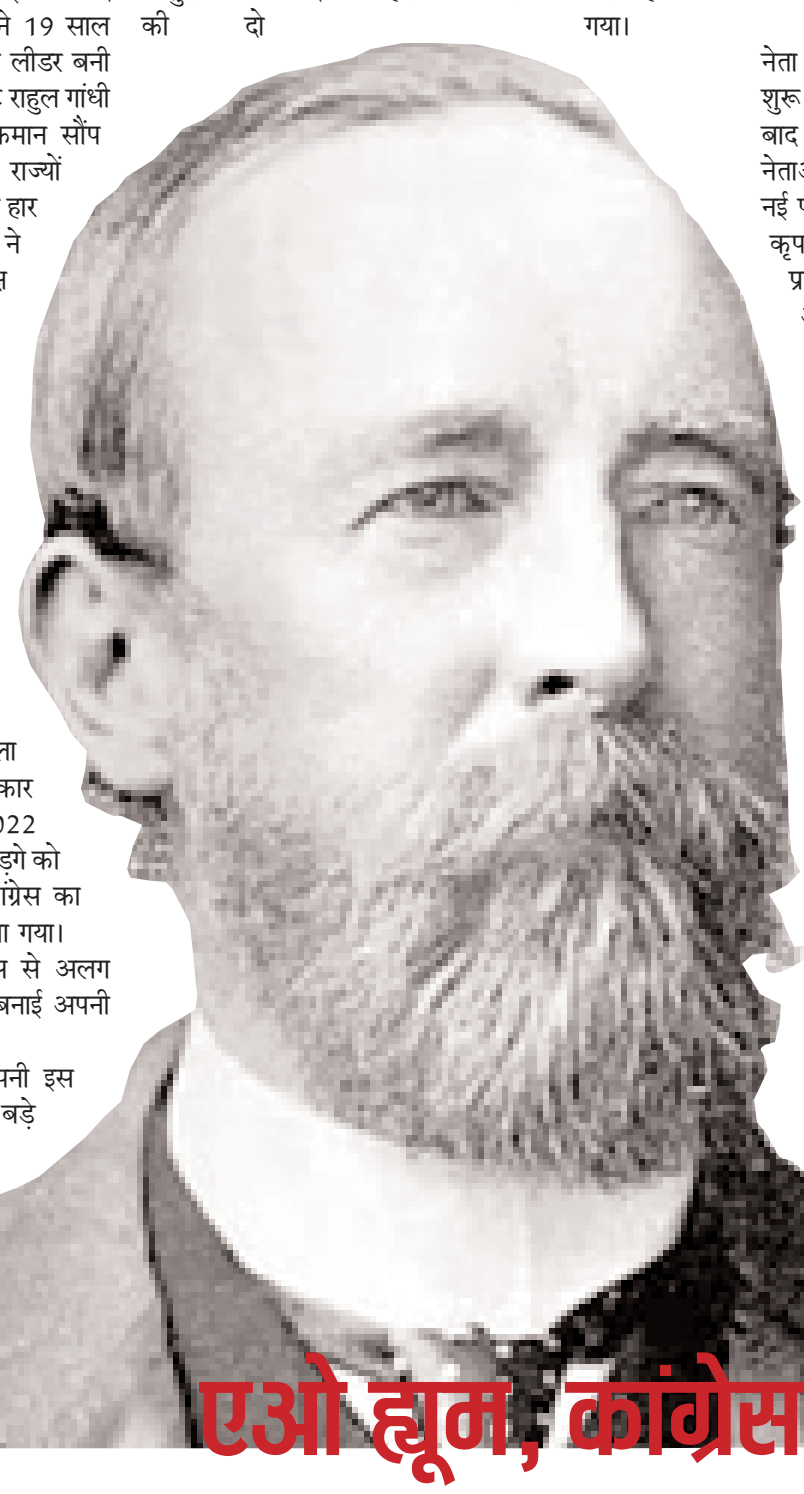
एओ ह्यूम, कांग्रेस संस्थापक

स्वामी, प्रकाषक, मुद्रक विवेक श्रीवास्तव द्वारा ओम साई क्रियेषन्स, आषा काम्पलक्े स, इन्दिरा नगर लखनऊ से मुद्रित एव ं पहला तल, निधि काम्पलेक्स, विकास नगर लखनऊ (उ0प्र0) से प्रकाषित।
RNI No.UPHIN/2015/6090 सम्पादक- विवेक श्रीवास्तव, फोन नं0- 8004949556, 7570901365 Email. info@theachievertimes.com किसी भी वाद विवाद का निस्तारण लखनऊ न्यायालय ही मान्य होगा।

समाचार-पत्र का मुख्य उद्देय ग्रामीण भारत का सत प्रतिशत मीडिया कवरेज कर समाज में फैला भ्रष्टाचार सामाजिक बुराइयों एवं कुरीतियों को अपने स्तर पड़ताल करके सम्बन्धित उच्चअधिकारियों को ध्यानकर्षण कर उन्हें समाप्त कराना है।